बरिस 7 अंक 24

सिरिजन

www.sirijan.com

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

अप्रैल-जून 2024

/jaibhojpurijaibhojpuria @sirijanbhojpuri 9801230034

सिरिजन

तिमाही भोजपुरी ई-पत्रिका

सिरिजन (अंक 24: अप्रैल-जून 2024)

प्रबंध निदेशक	:	सतीश कुमार त्रिपाठी
संरक्षक	:	1. सुरेश कुमार, (मुम्बई)
		2. नरसिंह तिवारी , (दिल्ली)
प्रधान सम्पादक	:	सुभाष पाण्डेय
सम्पादक	:	डॉ अनिल चौबे
	:	
उप सम्पादक कार्यकारी सम्पादक सलाहकार सम्पादक	: : :	तारकेश्वर राय संजय कुमार मिश्र राजीव उपाध्याय
सह सम्पादक	:	1. भावेश अंजन
		2. अमरेन्द्र कुमार सिंह
		3. माया चौबे
		4. गणेश नाथ तिवारी
प्रबंध सम्पादक	:	माया शर्मा
आमंत्रित सम्पादक	:	चंद्र भूषण यादव
बिदेश प्रतिनिधि	:	रवि शंकर तिवारी
ब्यूरो चीफ	:	ज्वाला सिंह
ब्यूरो चीफ (बिहार)	:	1.अरविंद सिंह, 2. मिथिलेश साह
ब्यूरो चीफ (प. बंगाल)	:	दीपक कुमार सिंह
ब्यूरो चीफ (उत्तर प्रदेश)	:	1. राजन द्विवेदी 2. अनुपम तिवारी
ब्यूरो चीफ (झारखण्ड)	:	राठौर नितान्त
	:	
दिल्ली, NCR प्रतिनिधि	:	बिनोद गिरी
क़ानूनी सलाहकार	:	नंदेश्वर मिश्र (अधिवक्ता)

(कुल्हि पद अवैतनिक बाड़न स)

स्वामित्व, प्रकाशक सतीश कुमार त्रिपाठी के ओरी से : 657, छठवीं मंजिल, अग्रवाल मेट्रो हाइट, प्लाट नंबर इ-5 नेताजी सुभाष पैलेस, सेंट्रल वजीरपुर,पीतमपुरा, दिल्ली – 110001, सिरिजन में प्रकाशित रचना लेखक के आपन ह आ ई जरूरी नइखे की सम्पादक के बिचार लेखक के बिचार से मिले। रचना प बिवाद के जिम्मेदारी रचनाकार के रही। कुल्हि बिवादन के निपटारा नई दिल्ली के सक्षम अदालत अउर फ़ोरम में करल जाई।

मुखपृष्ठ के चित्रकार - श्री दिनेश पाण्डेय, पटना

अनुक्रम

संपादकीय

- संपादकीय - डॉ अनिल चौबे / 5

आपन बात

- आपन बात - तारकेश्वर राय / 8

कनखी

नवरातन के आहार संघिता में ..डॉ. अनिल चौबे /12

कथा-कहानी

- कमासुत - रमेश चंद्र(भोजपुरी अनुवाद - संगीत सुभाष) /27
- घेराइल नाव आफतरा में-विद्या शंकर विद्यार्थी/35
- अछरंग-बिम्मी कुंवर/61
- दुर्दिन में कहीं ना जाए के-सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा/74
- बेकहल-निखिल शुभम/96

गीत/ गजल

- डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ ग़ज़ल / 11
- ह का जिन्दगी - प्रो. जयकान्त सिह ' जय '/13
- एन्ने बालू ओन्ने बालू - संगीत सुभाष/36
- हाल केकरा के अब बताईं हम-रामरक्षा मिश्र विमल/37
- राम पढे इस्लेट में कुछ-डॉ उदय हयात/41
- ना कहीं-डॉ उदय हयात/ 41
- मत माँगीं-अनिल कुमार दूबे "अंशु"/42
- बस बहाना बा -अनिल कुमार दूबे " अंशु"/42
- इरखा, झगड़ा भाग पराइल-सुरेश गुप्त/43
- ओसहीं हो जाईं का-संजय मिश्र'संजय/56
- दर्द हियरा में जेतना भरल बा-संजय मिश्र'संजय/56
- रात भर बात मन परल बाटे-गणेश नाथ तिवारी"विनायक"/78
- भोजपुरी भाषा मे गजबे मिठास बा-गणेश नाथ तिवारी"विनायक"/78
- रंगि देतऽ हमहूँ के कान्हा-सिद्धार्थ गोरखपुरी/79
- कवनो गाड़ी तरे ई चले जिदगी-आकाश महेशपुरी/80
- गंगा गीत-पं•भूषण त्यागी/82
- चादर झाँझर भइल-रामसागर सिह/89
- सलोनी-गुड़िया शुक्ला/101

कविता

- राम - रवींद्र नाथ श्रीवास्तव "परिचय दास"/15
- दखिनी पवन सखी! बहुते सतावेला-हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'/31
- जब जइसन तब तइसन-सुनील कुमार पाठक/38
- अलम-सुनील कुमार पाठक/40
- ई कइसन होली आइल बा-सुजीत पाण्डेय/44
- बसंत के दोहा-अमरेन्द्र कुमार सिह/45
- ऋतुराज बसंत (सरसी छंद)-अमरेन्द्र कुमार सिह/45
- आपन खोता-राजीव मिश्रा /46
- हमार पतोहि हई-माया चौबे/47
- कनक किशोर के पाँच गो कविता-कनक किशोर/48
- बसंत में बिरही के मन के भाव पर आधारित कुछ दोहा-अखिलेश्वर मिश्र/57
- हँसुआ के बियाह में खुरपी के गीति -मदनमोहन पाण्डेय/58
- नीबिया के पेड़-आकृति विज्ञा 'अर्पण'/ 59
- पी र मु ह म्म द मू नि स-नक्क मझव्वी/60
- धागा ओकरे हाथे दीहस-नम्रता राय ठाकुर/83
- लबरा-उमेश कुमार राय/84
- कमे समय में चल गइली माई-सुरेन्द्र प्रसाद गिरि/85
- मच्छर-हृदयानंद विशाल/86
- भोजपुरी कुण्डलिया-माया शर्मा/87
- कहीं ना मिलल गाँव हो-रामसागर सिह/88
- मधुमास-निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव/90
- अखबार-सुहानी राय /97
- हालात के आगे मजबूर बा आदमी-शैलेन्द्र कुमार/98
- सपना खुलल आँख से - पुरन्जय कुमार गुप्ता /99
- दुख के दिन-दीपक तिवारी/100

पुरुखन के कोठार से

- अंजन जी कऽ एगो गीत / 7
- स्व पंडित धरीक्षण मिश्र जी के कविता / 10

अनुक्रम

आलेख/निबंध

- भोजपुरी लोकगीतन में मेहरारू लोग के पीड़ा-डॉ० ब्रज भूषण मिश्र/19
- गाइ- बैल - मार्कण्डेय शारदेय/22
- भोला नाथ गहमरी : एगो व्यक्ति ना एगो विचार आ एगो युगबोध-म पुकार सिह "पुकार" गाजीपुरी/32
- नकबेसर कागा ले भागा (व्यंग्य)-बिनोद सिह/34
- भोजपुरिया संस्कृति में हम से ' हम ' के यात्रा-कनक किशोर/53
- राम जन्म के हेतु अनेका-डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद/65
- मजदूर ना, मजबूर-नन्दीश्वर द्विवेदी "राजन"/93

संस्मरण

- दागी दामन-कनक किशोर/ 50
- खाँची भर भरोसा-गणेश नाथ तिवारी"विनायक"/77
- दवा-दारू-मनोज कुमार वर्मा/81

हँसी-ठिठोली- निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव / 91

समाचार – 104-107

राउर पाती - 102

सतमेझरा – 1-4, 92, 108-109

भाषा में स्वाभाविकता

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

स्वाभाविकता साहित्य, समाज आ कविता के प्राणतत्व ह। रचना में चाहे कवनो रस होखे सब स्वाभाविकता की सिवान के भीतरे रहेला। गीत के त आत्मा होले स्वाभाविकता। एही से गीत सहृदय के हृदय में सीधे उतरि जाला। दिमाग़ के ऊबड़ खाबड़ रास्ता से गुजरे के जरूरत गीत के ना पड़े।

वर्तमान समय एकदम बनावटीपन वाला बा। आपन भाषा, आपन रीति-रिवाज, आपन ख़ान-पान, आपन रहन-सहन, संस्कार, आपन जीवन सब कुछ में धीरे-धीरे बनावटीपन हावी बा। खेत खरिहान में भी लोग उघारे भइला पर लजात बा। सामाजिक व्यवहार आ पारिवारिक व्यवहार निभवला में भी केहू स्वाभाविक होखे अब एतना हिम्मत बचल नइखे। भोजपुरी साहित्य के अध्ययन, मनन, चिन्तन से बनावटीपन के कवच के तूरल जा सकता। स्वाभाविकता के विशुद्ध बयार में परमानन्द के प्राप्त कइल जा सकता। आत्मशुद्धि खातिर स्वाभाविकता ज़रूरी बा। बनावटीपन समाज में घमण्ड, पाखण्ड अउरी अधर्म के बढ़ावेला। बनावटीपन में ख़ाली महत्वाकांक्षा पनपेला बाकी ऊ कबो पूरा ना होखे।

प्राचीन कविलोग के लेखन में स्वाभाविकता खूब रहे। बाद में अस्वाभाविकता रचनाकार लोग पर एतना हावी भइल कि लेखक गण भी असत्य-भाषी बन गइलें।

रचना में स्वाभाविकता के कुछ उदाहरण देखल जाव——

प्रियविरहितस्याद्य हृदि चिन्ता समागता।
इति मत्वा गता निद्रा के कृतघ्नमुपास्ते॥

"प्रिय के बिना हम बानीं, एहीसे हृदय में चिन्ता समा गइल बा आ चिन्ता समाते नींद चलि गइल। कृतघ्न के साथ के देला?" चिन्ता समइला पर नींद के गइल एकदम स्वाभाविक बा। इहाँ नैतिक परिणाम के चलते स्वाभाविकता एकदम सरस आ मधुरिम हो गइल बा।

कालिदासो शकुन्तला की विदाई के बेरा कण्व ऋषि के मुँहें ई बात कहवावत बाडन कि " आज शकुन्तला चलि जइहें, एसे हमार हृदय दुःखी बा, गला रूँधा गइल बा। आँखिन में लोर की चलते कुछ लउकत नइखे, हम त वनवासी हईं तब स्नेह के चलते एतना बियाकुल हो गइल बानीं त गृहस्थ लोग बेटी के विदाई के दुःख से केतना दुःखी होत होइ लोग?"

स्वाभाविकता के बहुत उदाहरण अन्य साहित्य में भरल बा। ढेर उदाहरण पिसान के फेरु पीसल कहाई।

भोजपुरी भाषा के लालित्य त स्वाभाविक वरनन से भरल परल बा।

"अरे अरे कारी बदरिया तूहीं मोरि बादरी।
बदरी ! जाइ बरसहू ओही देस जहाँ पिया छाए न हो ॥"

स्वाभाविकता के एगो अउर उदाहरण देखीं—

बाबा निमिया के पेड़ जनि काटऽ
नीमिया चिरइया बसेर— !
बाबा बिटिया बदे जनि दुःखी होवऽ
बिटिया चिरइया की नाइ— !
सब रे चिरइया उड़ि जइहें
रहि जइहें नीमिया अक़ेलि— ।
सब रे बिटियवा जइहें सासुर
रहि जइहें माई अकेलि— !

आह ! केतना स्वाभाविकता बा एह गीत में। नीम के पेड़ के साथे माई के आ चिरई के साथे बेटी के तुलना क के करुण भाव के जवन चित्र बनावल गइल बा ऊ रचना की दृष्टि से साधारण नइखे। आज ले चिरई के घोंसला साहित्य में जीवन के क्षनभंगुरता के देखावे खातिर प्रयोग हो रहल बा। बाकी भोजपुरी में ना जाने केतना बरिस पहिले बिलकुल नया रूप में एकर प्रयोग हो चुकल बा। हम सबके ई जिम्मेदारी बा कि भाषा बनावटीपन की चादर ओढ़ के अपना मूल स्वभाव के तियाग मति देउ। वर्तमान में जवन भाषा आ समाज, बनावटीपन के चकाचौंध से चौंधियाइल नइखे ऊ समाज आ ओकर साहित्य भी ओतने स्वाभाविक आ सुघड़ बा। शहर में स्वाभाविकता धीरे-धीरे नष्ट हो गइल अब गाँव प्रभावित हो रहल बा।

भाषा बनावटीपन के चंगुल में फँस रहल बिया। बाद में मेकअप धोवइला पर समाज के चेहरा ना देखे लायक रहि जाई ना देखावे लायक़।

◆◆◆

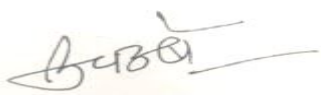

डॉ. अनिल चौबे
सम्पादक, सिरिजन

अंजन जी कऽ एगो गीत

जे बा दीहले रतन

भोजपरी गीत सम्राट
पं० राधा मोहन चौबे
'अंजन जी'

जे बा दीहले रतन, बबुआ करिह जतन
ई ह सोना ना माँटी मिलावे होई।
अइसन अनमोल धन, पवल मानुष के तन
कर्ज बाटे त मन से चुकावे होई॥

कहि के आपन भुला गइल सपना के धन
कहियो अचके हेराई, खुली जब नयन।
केहू के सिरिजल चमन, चमके झिलमिल सुमन
आन्ही-तूफान सबसे बँचावे होई॥

चारि दिन के झमेला बा, मेला हवे
नइख बूझत मदारी के खेला हवे।
केतना बाटे जलन, केतना बाटे तपन
नेह-नाता ना कवनो लगावे होई॥

देख जागल बा जे, जे बा उधिया गइल
केहू धइले ना बाटे जे बा पा गइल।
रचि के 'अंजन' नयन, जे बा पवले घुटन
देखि दरपन सुरतिया लगावे होई॥

◆ ◆ ◆

एह तिमाही के महीना चैत के हिन्दू पंचाग के अनुसार पहिला महीना होखे के गौरव मिलल बा। हिन्दू नववर्ष के शुरुआत हर साल चैत शुक्ल प्रतिपदा से होला। पृथ्वी अपना अक्ष पर घूमत-घूमत सूरज के एक चक्कर लगवला के बाद जब दूसरका चक्कर के शुरुआत करेली तब हिंदू नववर्ष आवेला। एकर स्वागत अंग्रेजी नववर्ष नियन रात के धूप अन्हार में ना बल्कि भगवान भास्कर के पहली किरण के सीस नवावत कइल जाला।

इतिहास के अनुसार भारतीय नववर्ष के शुरुआत करे के श्रेय विक्रमादित्य के दिहल जाला, एहि खातिर एकर दूसर नाँव विक्रम संवत भी ह।

नवसंवत्सर से अइसन लागेला जइसे कि प्रकृति नवपल्लव धारण कर नवसंरचना खातिर ऊर्जस्वित हो रहल बाड़ी। आदमी, फेड़, रुख पोस परानी प्रकृति भी प्रमाद अउरी आलस्य के त्याग के सचेतन हो जाला। वसंतोत्सव के भी ईहे आधार होला। दिन गरमाये के शुरू हो जाला, पहाड़ पर जमल बर्फ पिघले शुरू हो जाला, आमों पर बौर आवे शुरू हो जाला। प्रकृति के हरीतिमा नवजीवन के प्रतीक बनके जीवन से जुड़े लागेलन।

अइसन मान्यता बा अपना समाज में कि एहि पवित्र महीना के नवमी तिथि के प्रभु राम एह धरा धाम पर अवतार लिहलन। उहे राम जी जे के हर भारतीय आपन संस्कृति मानेलन। उनकर चरित्र ही हमनीके जीवन ह। उनकर दर्शन ही हमनीके अध्यात्म ह। सत्य, न्याय अउरी सदाचार के मिसाल रहलन प्रभु श्रीराम, उनकर पूरा जीवन प्रेरक गाथा से भरल बा। अयोध्या में राम लला के प्राण प्रतिष्ठा के बाद ई पहिला रामनवमी ह। प्राण प्रतिष्ठा सदियन से चलल आ रहल मानव मन के आकांक्षा के पूर्ति के रूप में देखता पूरा विश्व समाज। हर भारतीय बड़ी उत्सुकता से इंतजार कर रहल बाण राम मंदिर में राम नवमी के उत्सव के। रामनवमी रामजी के जन्मोत्सव के रूप में त मनावल ही जाला नौ दिन से चलल आ रहल नवरात्र के पूर्णाहुति भी एहि दिन होला। एहीसे एह दिन के महत्व अउरी बढ़ जाला।

एहि तिमाही में लोकपर्व सतुआन भी आई। सतुआन भोजपुरी संस्कृति के काल बोधक पर्व ह। हिन्दू पतरा में सौर मास के हिसाब से सुरूज जहिआ भूमध्य रेखा (बिसुवत रेखा) से उत्तर के ओर जालन तहिये ई पर्व मनावल जाला। आम के टिकोरा के पीसके चटनी बना के साथ में मरीचा पियाज आचार के साथे सत्तू घोर के पहिले सुरुज भगवान के चढावल जाला आ फिर प्रसाद के रूप में ग्रहण करे के रिवाज ह अपना समाज मे। सतुआन के आगमन गरमी के आवे के घोषणा करेला अउरी बतावेला कि अब मौसम तेजी से गरम होखी। आवे वाला दिन अउरी गरमाई, जमीन सूखा जाई खेत मे दरार पड़े के अंदेशा रहेला। आदमी जब गर्मी से त्रस्त हो जहियन त सतुआ अइसन भोजन ही देह के शीतलता दे जाई। भोजपुरिया लोक संस्कृति में ई प्रकृति से जुड़ाव का पर्व ह। खरमास के समाप्ति अउरी मांगलिक काम के शुरुआत क घोषणा करत बिदा लेला सतुआन।

डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के सम्मान देवे खातिर आपन देश में हर साल 14 अप्रैल के अम्बेडकर जयंती मनावल जाला। डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर के योगदान, उपलब्धि के याद कइल जाला। दलित समाज डॉ. अम्बेडकर के आपन भगवान मानेला काहे की समाज मे सम्मान जनक जगह

दियावे में बहुत काम कइलन। भारत के आजादी के बाद मौजूदा सरकार द्वारा डॉ अम्बेडकर के स्वतंत्र भारत के पहिला कानून मंत्री के कार्यभार दिहल गइल। भारत के नावा संविधान अउरी संविधान निर्माण समिति के अध्यक्ष के रूप में भी नियुक्त कइल गइल। निर्माण समिति के अध्यक्ष होखला के नाते संविधान के वास्तुकार रूप देवे में उनकर महत्वपूर्ण भूमिका रहे। डॉ अम्बेडकर के अध्यक्षता में तैयार संविधान, पहिला सामाजिक दस्तावेज रहे। संविधान से मिलल अधिकार के चलते ही जनता सरकार चुनेले। जेकर देख रेख में देश आपन यात्रा तय कर रहल बा|

भाग्यशाली बानी जा हमनीके काहे कि भारत के इतिहास में देश प कुर्बान होखे वालन के लमहर फेहरिस्त बा। ओह फेहरिस्त में खास जगह बनावे वाला महान योद्धा परम बीर महाराणा प्रताप के जयंती प्रतिवर्ष अंग्रेजी कैलेंडर के मुताबिक, 9 मई के पड़ेला। एह दिन समूचा देश आपन महान नायक के याद करेला। उहे महाराणा प्रताप जे कबो मुगल के आधीनता स्वीकार ना कइलन, मुगल सम्राट अकबर के रणभूमि में कई बेर जबरदस्त टक्कर दिहलन, एह रार के चलते महलन के सुख छोड़े के परल, परिवार संग जंगलन के खाक छाने के परल, कबो कबो त बाल बच्चन के घास के रोटी भी नसीब ना भइल। लाख दुःख के बावजूद उहाँ के हिम्मत ना हरली, देशहित में जंग जारी रखली । कोटि-कोटि नमन बा अद्भुत देश प्रेम के। उनकर शौर्य और वीरता के कहानी इतिहास के पन्नन में स्वर्णिम अक्षर में दर्ज बा। भाग्यशाली बानी जा कि महाराणा प्रताप जइसन वीर बांकुड़ा के देश मे हमनीके जन्म लेवे के सैभाग्य मिलल।

एहि तिमाही में हमनीके देश मे आम चुनाव के बिगुल भी फुकाइल बा। चुनाव प्रक्रिया कवनो भी लोकतांत्रिक देश के मुख्य पहचान होला। मतदान प्रक्रिया लोकतंत्र के जीवंत रूप प्रदान करेला, नागरिक देश के उन्नति में आपन भागीदारी भी सुनिश्चित करेलन। चुनाव के बिना लोकतंत्र के कवनो अर्थ नइखे। चुनाव नागरिक के आपन राय व्यक्त करे मनपसन्द नेता के राजनीतिक दल के चुने के अवसर प्रदान करेला। धर्म जाती लिंग क्षेत्र भाषा से ऊपर उठ के उहे दल के आपन वोट देवे के चाही जे राष्ट्र के बारे में सोचे, नागरिक के सर्वांगीण बिकास के बारे में सोचे, बिना भेद भाव के। राष्ट्र हित मे कड़ा से कड़ा कदम उठावे में भी पाछे ना रहे। आई प्रण लिहल जाव लोकतंत्र के महापर्व मतदान में हिस्सा जरुर लिहल जाई आ सही प्रतिनिधि के वोट दिहल जाई।

जब धरती पर आँख खोलनी त उहाँ भोजपुरी रहे। माई के अँचरा में भोजपुरी रहे। पहिला शब्द जवन कान में गइल उ भोजपुरी रहे। पूरा वातावरण में भोजपुरी रहे । एहीसे भोजपुरी के माईभाषा कहल जाला, एमा बोलल ना जाला, बोला जाला। त हाजिर बा एहि माई भाषा मे सिरिजन के 24वां अंक। पढ़ी आ आपन राय जरूर बताई।

◆◆◆

राऊर आपन,

तारकेश्वर राय

उप सम्पादक, सिरिजन

भोजपुरी के आचार्य कवि

पं. धरीक्षण मिश्र

स्व. पं. धरीक्षण निश्र जी के कविता

साँप के सुभाव

वोट ना मिले त ई चैन से न बइठें कहीं
ओट बिना आठो घरी घूमते देखाले सन ।
वोट मिलि जाला त ढेर-ढेर दिन तक ले
चुपचाप जाके कहीं परि के औंघाले सन ।
दोसरा के बिल जोहि जोहि के गुजर करें
पास कइ के ओही में अपने मोटाले सन ।
गर्मी का दिन में घास फूस जरि जाला तब
दूर जाके आड़ या पहाड़ में लुकाले सन ।1 ॥

तापमान देंही के बहुते कम होला किन्तु
जनता में जा के सदा जहरे ओकाले सन ।
देंहि एकनी के होला सूत का समान सीधा
टेढ़ चालि से परन्तु आगे बढ़ि जाले सन ।
दोसरा के काटे के मुँह बवले रहें सदा
केहुवे के काटे में तनिक ना लजाले सन ।
देखे में तमाशा खूब मजा आइ जाला जब
आ के दुइ चारि आपुसे में अझुराले सन ॥2 ॥

ज्यादे दिन एक केंचुली में रहि गइला से
सुस्त परि जाले ढेर आलसी देखाले सन ।
छोड़ि के पुरान नया केंचुली में अइला से
का बताई केतना ई तेज बनि जाले सन
फन फइलावें पोंछि पटकें घुमावें कबें
धैके भयंकर रूप खूबे फोफियाले सन ।
आँखि मलकावें नाहीं जीभिये चलावे सदा
चक्खू सरवा एही से जग में कहाले सन ॥3 ॥

◆◆◆ शेष अगिला अंक में.....

डॉ. जौहर शफियाबादी के कुछ गज़ल

डॉ. जौहर शफियाबादी
विभागाध्यक्ष (उर्दू)
डॉ. पी. एन. सिंह महाविद्यालय, छपरा

छन-छन के बनल-बिगड़ल,टाँकल बा हथेली पर

छन-छन के बनल-बिगड़ल,टाँकल बा हथेली पर ।
आवेले हंसी हमरा, जिनगी का पहेली पर ॥

शुभ याद के परिछाहीं,सुसुकेले अँगनवा में ।
जब चाँदनी उतरेले, सुनसान हवेली पर ॥

जीअत आ मुअत खाता,लागत बा कि बेटहा ह ।
जे गाँव का तरकुल का,बइठल बा मथेली पर ॥

अब विधने भरम राखस,चुटकी भर सेनुरवा के ।
धड़कत बा करेजा की,गुजरल का सहेली पर ।

जिनगी का अन्हरिया में,कइसन ई अँजोरिया ह ।
बा नाम लिखल कवनो,मनरूप चमेली पर ॥

जौहर जे निखरले बा,निअरे से जिनिगिया के ।
विश्वास करी ऊ का,माया के बहेली पर ॥

◆ ◆ ◆

अँखियन के झरोखा में,नेहिया के जोगा राखीं

अँखियन के झरोखा में,नेहिया के जोगा राखीं।
चाहत बा केहू मन से,कुछ रउवो दया राखीं॥

बिजुरी का चमकला से, बदरा ना जरे कतहीं।
हम रउरा गरजला पर, डर काहे भला राखीं॥

कुछ लोग किना जाला, कुछ लोग बिका जाला।
इतबार का लमंडी में, कुछ चीज छुपा राखीं॥

जिनगी का अन्हरिया में, विश्वास के पथ होला।
आशा के हवेली में, चाहत के दीया राखीं॥

रहिया में प्रीतिया के, रीतिया ना भूलाए के।
अँखियन में रखीं कजरा, कजरा में घटा राखीं ॥

जे साँच कहीं जौहर बस प्रेम ह ई जिनगी।
अँखियन में सजे सावन, होठन पर दुआ राखीं॥

◆ ◆ ◆

नवरातन के आहार संघिता में मछरी

नेता के जनम देश खातिर होला। अइसन नेता लोग मानेला। जनता के जनम वोट देवे खातिर। नेता जवन करेलें सब देश ख़ातिर क़रेलें। तबो विरोधी विरोध करे से बाज ना आवें। मज़ेदार बात त ई बा कि नेता के विरोधियो नेते होलन। वइसे नेता देश के कवनो चीज खा सकऽता। सड़क, पुल, अलकतरा, बोफोर्स, चारा, वगैरह वगैरह। जसोदा माता माटी खइला पर कन्हइया के मुँह बवा के देखली त माटी त ना लउकल बाकी पूरा ब्रह्माण्ड मुँहे में लउक गइल। ए सब के मुँह बवा के देखीं त पेट में दाँत लउक सकेला। देश में खाइल आ पचा लिहल बहुत बड़हन चीज बा। साधारण जनता के रोटी खइला पर गैस के गोली खाए के पड़ऽता। नवरातनो के आचारसंघिता होखे भा नति होखे बाकी आहारसंघिता जरूर होला। एमें मछरी खाइल खराब बात ह, बल्कि पाप लगेला। चोरी छीपे मछरी खा लीं त तनी कमो पाप लागी बाकी वीडियो बनाके, दुनिया के देखा-देखाके मछरी खाइल त पापो के बाप यानी महापाप बा। अइसन शास्त्रे ना भाजपा के ज्ञानी लोगवो कहऽता। मुगल, मलेच्छ, सनातन के चिढ़ावे खातिर इहे सब कर सन्। मुगल चाहे केतनो नुक़सान कइलन सन बाक़ी अपना कुकर्म के वीडियो बना के सार्वजनिक ना कइलन सन।

अब बात ई बा कि कुछ लोग ना खाला त बाकी लोग काहे ना खाव?

जे खानदानी खवइया बा ओकरी थरिया में ताक-झाँक करेवाला रउआ के हईं?

हर नागरिक के आपन अधिकार बा, ऊ खाए पिए में स्वतंत्र बा। ई अधिकार खाली नागरिक के बा कि ऊ जवना जानवर के खाए चाहे खा सकेला, जानवर के कवनो अधिकार नइखे कि रामनवमी के खूशी के अवसर पर कम से कम ओकर जान त बख़्श दिहल जाव।शाकाहारी जनता के अधिकार बा कि ऊ आँखि बन्द क लेव नइखे देखल जात त।

जब प्रधान जी पहिलवे कह दिहनीं कि ना खाइब, ना खाए देब त देखा-देखा के, वीडियो बना के खइला के का जरूरत रहल ह? अरे कम से कम कवना तरे खाइल जाला एक बेर अपना बाबूजी जी से सीख लेले रहितीं !

त हेतना छीछालेदर ना नू होइत?

खा खूब खा, खाइल खराब नइखे, देखा देखा के खाइल गुनाह बा। ई दुनिया कबो ना चाही कि एगो मुख्यमन्त्री के सुयोग्य बेटा मुख्यमन्त्री बनो? मछरी जल के रानी हई त राजा के बेटा साग ना नू खाइ जी। दुनिया खाए खातिर ही जीयत बा । कुछ खइनिहार लोग के जब खूब खाए के होला त पार्टी में जाला। नेता लोग भी खाहीं खातिर एक पार्टी से दूसरी में, दूसरी से तीसरी में जाला। आ जेकरा घर ही के पार्टी बा ऊ काहें ना खाई? राजनीति में सब खाइल जायज बा। पोल्टिश में आपन पेट आ वोट भरे खातिर कहीं, कतहूँ आ कुछुवो खाइल जाला।राजनीतियो में बड़ मछरी छोट मछरी के खा जाले। खाईं बाकी अनाप सनाप मत खाईं कि घरवे बइठ के खिचड़ी खाए के परे।

◆ ◆ ◆

डॉ. अनिल चौबे

सम्पादक, सिरिजन

सन् १९९० ई. का पहिले के लिखल प्रो. (डॉ.) जयकान्त सिंह ' जय ' के कुछ भोजपुरी गीत - विरह-गीत

१.

लोर ढारत निहारत रहे राह जे,
ओह अँखियन से पूछीं ह का जिन्दगी।
पाके आहट जे दउड़ल दरद दाब के,
रउआ दिल से ओ पूछीं ह का जिन्दगी॥

पीर पिघले परनवाँ के जब-जब पिया,
हिया हहरे मिलन लागि तड़पे जिया।
सुहाग बनके जे मँगिया सजावत रहल,
ओह सेनुरा से पूछीं ह का जिन्दगी॥

रात पूनम के कहिया ई कटले कटल,
नेह ढरकत रहल ना ई पपनी सटल।
केतना सजि-सजि जे सेजिया प मुरझा गइल,
ओह कलियन से पूछीं ह का जिन्दगी॥

लागे सावन कटावन ई रउए बदे,
बात निमनो केहू के जिया का सधे।
आस में आज ले जे सजल आ सुखल,
ओह गजरा से पूछीं ह का जिन्दगी॥

साँस-साँस में सुधिया समाइल सजन,
कह के अइनीं ना संसा टँगाइल सजन।
चोट पर चोट खाके जे अबले अड़ल,
ओह असरा से पूछीं ह का जिन्दगी॥

रहे दूलम बिसारल ई छन भर छवि,
कहीं कइसे कहल बा कठिन 'जयकवि'।
दिल ई देके दरद जे जोगावत रहल,
ओह उमिरिया से पूछीं ह का जिन्दगी॥

२.

अँखिया तरसे दिने, रतिया के हियवा।
कुहुके करेजवा सेजियवा रे पियवा॥

नयना के नींन जाने कहवाँ पराइल,
कवना मुलुकवा में जाइ के भोराइल।
पिहुके पपीहा प्रान, पियवा रे पियवा॥

आइ के समाइ गइल आँखि में सवनवा,
दुअरा फागुन झूमे बदरा अँगनवाँ।
हूके तार-तार भइल जियवा रे पियवा॥

तनिको ना नींक लागे घर अँगनइया,
गवना कराके काहे बनलऽ मुदइया॥
सोचनीं ना सपनो में दगा दिहे पियवा॥

काँट-काँट देहिया बा धइले पियरिया,
कहिया जुड़ाई जिया लेबऽ अँकवरिया।
'जयकवि' लहरे ना असरा के दियवा॥

काँट-काँट देहिया बा धइले पियरिया,
कहिया जुड़ाई जिया लेबऽ अँकवरिया।
'जयकवि' लहरे ना असरा के दियवा॥

३.

नयना नीर रतन रस मातल।
छलकल नयन गगरिया मोर॥

दरसन लागी तरसत अँखिया,
ताना मारस सङ्ग के सखिया।
आ रसिया चितचोर॥

लुटल लुटल ललसा के थाती,
धड़कत धड़कन जस चले भाँती।
अँचरा भइल सरबोर॥

सन् १९९० ई. का पहिले के लिखल प्रो. (डॉ.) जयकान्त सिंह ' जय ' के कुछ भोजपुरी गीत - विरह-गीत

पनकल प्रीत परदेस पराके,
मोजरल मन पर बजर गिराके।
बनलऽ निठुर निगोर॥

बीच डगरिया बाँहि छोड़ाके,
कइल करार काहे बिसराके।
भइलऽ कठिन कठोर॥

'जयकवि' जय-जय तोहर मनावे,
असरा के नित दीप जरावे।
चितवत चित चहुओर॥

४.
नयन मिला के, प्रीत पोढ़ा के,
मोजरल मन, सरसइयो धरा के
बनि गइलऽ बजर समान।
चान, जा बसलऽ असमान॥

तोहरे बदे दुनिया से बाउर,
तूहीं सरधा में घोरेल माहुर।
हिया हहरत हलकान॥

ललसा लुगरी अस लसराइल,
धइल टिकोरा ना अँठिआइल।
पछेटत पीर परान॥

सँइतल सपना साँस सँघाती,
तड़प तेल जियरा जरे बाती।
दिअना दिलवे जान॥

आस के साँस साँसत में सकदम,
'जयकवि' जोहत बाट ई हरदम
डँहकत साँझ - बिहान॥

५.
नागिन बनके डँसे डगरिया,
धरती खिसके पाँव से,
जब गुजरीं तोहरा गाँव से।

मनवाँ कहना तनिक ना माने,
नेहिया अउर पोढ़ाला।
तरस आँखि के तड़प जिया के,
कहले कहाँ कहाला।
हियरा हहरे हवले - हवले,
तोहरा एह अलगाव से॥

गमक उठेला मन मंदिर में,
यादन के धुपकाठी।
सुख में बखरा सभे संघाती,
दरद भला के बाँटीं।
जब-जब गुजरीं तोहर नगरी,
निरखीं नीके चाव से॥

सोना चंदन चान के टुकड़ा,
कोइल के अस बोली।
देहिया चितवा चमके चेहरा,
इयाद पड़े हमजोली।
सनेह सुधा में सउंनल सपना,
चैन चोरावे दाव से॥

'जयकवि' कइसे दिल दरिया के,
उठत ज्वार दबइहें।
हूक हिया के जरल जिया के,
कबले ई सह पइहें।
जब-जब बइठल सोचीं सहमे,
मनवाँ एही भाव से॥

प्रो. जयकान्त सिंह ' जय '

◆ ◆ ◆

राम

राम :
एगो सकर्मक परिचित आभामय ..अकास..
ई मनुष्यता ह, रहस्य के उत्कृष्टता। इहाँ तक ले कि
हमनी के आत्मा क्षितिजहीन हो जाले आ अथाह दृष्टि में विस्तार पा जाले,
हमनी के देह परा के साधन ह सुखी जीवन जीए के,
हमनी के आत्मा ह अमर प्रकाश के विशाल सूरज।

राम : खाली काव्य व्यक्तित्व के सम्मान में ना, बलुक चेतना के सार के सम्मानो में ! इहाँ प्रत्यक्ष दृष्टि, प्रकाश के पूर्णता, मूल लय आ प्रकटीकरण के सार !!

राम : जवन हमनी के व्यापक आत्म से जुड़ाव हो रहल बा,
हमनी के जागल विचार से परे रहस्यमय रास्ता।

राम : जब आत्मा आपन भाषा बोलेले त हमनी के लगे कविता होले। पवित्रता , चेतना , गूढ़ता ले आत्मा आ विधि के भाषा .....।

सहानुभूति आ ईमानदारी के सबसे तीव्रता से, आत्मा में प्रवेश से चमकत प्रकाश से बना देले आत्मीय संदर्भ : माने राम।

रउआँ खाली प्रियतम के राम के रूप में संबोधित करके रहस्य ना हासिल कर सकेनी। आत्मा के लय पर शरीर के ट्यून करे खातिर अधिका सूक्ष्म प्रकृति, अधिका नाजुक स्पर्श, अधिका सूक्ष्म संवेदनशीलता आ एक तरह के कलात्मक जादू जरूरी बा। रहस्य के दूसर पंक्ति एकदम आम बा, यानी कि शरीर के शब्द आ लय में आत्मा के अभिव्यक्ति।
राम में आत्मा के संदर्भ साफ बा : ई प्रधान भा केंद्रीय राग हवे; नाम आ रूप के रूप में , अइसन शरीर के रूप में जवन ठोस, जिदा आ जीवंत, निकट आ अंतरंग बनावेला जवन अन्यथा अस्पष्ट आ अमूर्त, दूर, अलग-अलग हो सकत रहे। राम- रसायन ठीक एह दुनु के बीच के खेल में बा, दुनु के बीच के लुका-छिपी में. दूसर ओर, जइसन कि हम कहले बानी, वैष्णव कविता के अधिकांश भाग, एगो अमूल्य आ सुन्दर चिता निहन, निस्संदेह आध्यात्मिक महत्व के छिपावेला: शुद्ध महत्व ना बालुक शानदार तरीका से विस्तारित संकेत अवुरी प्रतीक, उ लोग के अपना पूरा वैभव में अग्रभूमि में राखल गइल बा: जइसे कि ओह लोग के मकसद असली मतलब छिपावल होखे. जब वैष्णव कवि कहेले कि

अरे प्रिय, अउरी का कहब राधा,

काहे कि नश्वर शब्द कमजोर होला?

जिनगी में, मौत में,

अस्तित्व में आ साँस में भी

राधा तोहरा छोड़ के कवनो दोसर देवता के खोज ना कर सकेले।

राम :

जन्म से ही सुंदरता देखत रहनी ह

तबो हमार आँख बा

संतुष्ट नइखे होखत;

हजारों युग से इंतजार करत रहनी ह,

छाती से छाती हम लगा रहल बानी।

राम : एगो व्यावहारिक आ रहस्यवादी कविता । लउकत आ अदृश्य के बीच। चेतना के अन्य क्षेत्र भा डोमेन पर लागू होखे। राम के अन्याय से प्रतिरोध के रूपक खाली रहस्यवादे ना होला। अइसहीं ,

वर्ड्सवर्थ में, शेली आ कीट्स में , स्पेंसर में रहस्य। वर्ड्सवर्थ के प्रकृति-पूजन में। हेब्रिड्स के बीच समुंदर के सन्नाटा तोड़त।

चाहे , वर्ड्सवर्थ द पगन

देखल जाय प्रोटियस के समुंद्र से निकरत;

या बूढ़ ट्राइटन के आपन उड़ावल सींग बजावत सुनीं। पवित्र भोर के भजन। रहस्य।

राम महारहस्य। प्रकट आ रहस्य के बीचो बीच।

एक बेर फेरु सुनीं ई सरल, पारदर्शी, बाकिर जीवंत लाइन:

बाकिर जब आत्मा अनन्त काल के अपनावेले त शरीर कइसे खोखला जगह ना लागी?

या ऊ ओतने गहिराह अनुभव से भरल बा, एगो शांत, संग्रहित प्रकाशमान चेतना से:

बाकि अगिला पन्ना पर.....

साँस पकड़ के हल्ला के दुनिया से बचि गइनी
एकांत में एक तरफ बइठ गइनी
आ सच्चाई के आग में एहसास के अनुभव कइलस, जवन दिल में लय ले आइल।
जब देखनी त बाहरी दुनिया के भीतरी दुनिया के रूप में जानत रहनी। अर्थात्: राम।

एह तरी, उहाँ सूरज के रोशनी नइखे, चाँद से कवनो रोशनी नइखे
कवनो चमक नइखे आ तारा आन्हर हो जालें; ऊहाँ
ना बिजली चमकेला, ना कवनो सांसारिक आग। काहें कि
जवन कुछ उज्जवल बा उ सब ओकरा चमक के परछाईं भर बा
आ ई सब अपना चमक से चमकत बा।
मने : राम।

राम कहलन : दोसरा के छूवे वाला शब्दन के निजता आ प्यार दीं।
रात सुग्घर बा,
त हमरा लोग के चेहरो।
तरई सुन्दर बा,
त हमरा लोग के अँखियो ।
सूरजो सुन्दर बा,
हमरा लोग के आत्मो सुन्दर बा।

हे सपना के देखनिहार, अपना सब सपना, दिल के सब धुन हमरा लगे ले आईं।
हमरा लगे ले आईं, कि हम सगरो लोगन के नील रंग के बादर कपड़ा में लपेट सकीले, दुनिया के बहुते खुरदुर अँगुरी से दूर।
या ई ओतने गहिराह, चकाचौंध करे वाला आ खुलासा करे वाला बा:
जइसे दुनिया में आग घुस गइल बा, बाकिर...
ऊ अपना के ओह रूप में आकार देली जवन ओकरा मिलेला, ओही तरह से
सब जीव के भीतर एके आत्मा बा, बाकिर उहे
अपना रूप में आकार देला; ईहो एह सब से बाहर के बात बा।

स्वाभाविक रूप से मूल के बात करत बानी, जवन काव्य मूल्य के पूरा न्याय कर सके ऊहे बात होखऽता। काहे कि राम में कवि के व्यक्तिगत प्रतिभा के अलावा भाषा के औजारो शामिल बा। राम में देवता लोग के भाषा तुलनात्मक रूप से आसान आ स्वाभाविक बा, ओकर मतलब मानव भाषा में अगर एकदम असंभव ना होखे त 'टूर डी फोर्स' होखी। संस्कृत भाषा के ढाल आ गढ़ल ऋषि लोग के हाथ में भइल, माने कि आध्यात्मिक चेतना में जियत, घूमत आ जियत। आध्यात्मिक स्वर के संगे ऊ निरपेक्षता जवन भारतीय भाषा में निहित बा, हालांकि ऊ लोग भी आध्यात्मिक माहौल में साँस लिहल आ पलल बढ़ल। राम से जुरल कविता-भाषा धरती के बहुत नजदीक बा आ पृथ्वी के गंध आ बहाव से भरल बा।

राम : एक वैज्ञानिक स्वर। रचना के एगो टोन, एगो मन के ऊंच, महानायक, दीठ संपन्न अलग, तपस्वी। एगो उच्च प्रकाश, चेतना के एगो शक्ति ...

राम : तीव्रतामय काव्यमय कंपन। एगो बड़हन विचार-शक्ति, एगो करुणामय धारणा, एगो तीव्र तंत्रिका संवेदन–भीतरी वास्तविकता सभ के साथ होखे के पहिचान ।

राम : तत्त्वमीमांसा से आगे अलग से समूहबद्धता। आश्चर्यजनक अभिमान आ कल्पनाशीलता से भरल । राम-मन: बिसेसता से चितनशील, अंतर्निरीक्षणात्मक -"अंतर्मुखी" ; भौतिकी आ तत्त्वमीमांसा से आगे।

राम : धारणा, अनुभव, एहसास – चाहे ऊ कवनो क्रम भा दुनिया के होखे – संवेदनशील आ सौंदर्य शब्द आ आकृति में व्यक्त कइल, कविता के परिचित रूप से जानल आ सराहल होला। बाकिर बढ़त जिद के साथे एगो नया मोड़।

राम : एक काव्य-अनुभव एक शांत आ धवल अभिव्यक्ति, एगो निश्चित आ मजबूत सूत्रीकरण । सभ

अनुभव आ भावना के तर्कसंगति । जीवन के संघर्ष के मूल मंत्र। तर्क आ तर्कसंगतता परम भा अंतिम भा महत्वपूर्ण वास्तविकता ना ह, कि हमनी के चेतना में तर्कहीन भा अवचेतन के बड़हन भूमिका होला आ कला आ कविता भी एही मानसिकता के अभिव्यक्ति होखे के चाहीं, तबो ई सब बा कहल आ कइल एगो तर्कसंगत आ बौद्धिक तनाव आ रूपरेखा के माध्यम से कइल गइल, जइसे कि पुरान दुनिया के स्पष्ट रूप से गैर-बौद्धिक लेखन में ना मिल सके।

राम : विश्लेषणात्मक शक्ति, पद्धति में रचनात्मक चेतना । एगो रोचक कथा : जवना के एगो महत्वपूर्ण भूमिका बा: शुद्धि, उदात्तीकरण, कैथरिस। जइसे-जइसे आदमी अपना खास भा

बाकि अगिला पन्ना पर.....

मुख्य रूप से महत्वपूर्ण स्वभाव से ऊपर उठत जाला आ मानसिक संतुलन के ओर बढ़त जाला, ओकर रचनात्मक गतिविधि भी ई नया मोड़ आ स्थिति ले लेले बा। बिकास के सुरुआती दौर में मानसिक जीवन गौण होला, शारीरिक-महत्वपूर्ण जीवन के अधीन होला; एकरा बाद ही मानसिक के एगो स्वतंत्र आ आत्मनिर्भर वास्तविकता मिलेला। अइसने गतिशीलता काव्य आ कलात्मक सृजन में : विचारक, दार्शनिक शुरू में पृष्ठभूमि में रहेला, ऊ बाहर देखेला; बीच-बीच में दरार आ छेद से झांकल; बाद में ऊ सबसे आगे आवेलें, आदमी के रचनात्मक गतिविधि में प्रमुख भूमिका निभावेलें।

राम , मने ,आदमी के चेतना के मानसिक क्षेत्र से अतिमानसिक क्षेत्र में जाए के पड़ेला। एह हिसाब से उनकर जीवन आ गतिविधि के साथे-साथे उनकर कलात्मक रचना एगो नया सुर आ लय, एगो नया साँचा आ शैली ले लिहलें : राम।

राम : शुद्ध आ विस्तार , उच्च, व्यापक आ गहिराह वास्तविकता के एगो व्यापक फ्रेम, अधिका चमकदार पैटर्न, अधिका महीन रूप से व्यक्त रूप , सच्चाई आ सामंजस्य के मुखर करे आ व्यक्त करे खातिर। एगो रोशनी जवन प्राकृतिक रूप ह । साधारण आ पारलौकिक के बीच कवनो ना कवनो तरह के प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष शुद्ध कविता,एक शुद्ध शब्द। आचरण के एगो उदाहरण। वाल्मीकि एगो अउरी प्राचीन आ आदिम प्रेरणा, एगो बड़हन आलोचनात्मक संवेदना के प्रतिनिधित्व करत । रहस्य के कुछ अइसने जवन होमर के प्रतिभा के आधार । ग्रीस में ई सुकरात रहलें जे अनुमानित दर्शन के आंदोलन के सुरुआत कइलें आ बौद्धिक शक्ति पर जोर दिहल धीरे-धीरे बाद के कवि लोग, सोफोक्लस आ यूरिपिड्स में अभिव्यक्ति मिलल।
वाल्मीकि नारद से पूछलन कि का एह संसार में कवनो अइसन व्यक्ति बा जे हमेशा सच बोले, धर्म जानत होखे आ ओकर पालन करे, वीर्य से भरल होखे आ हर तरह के गुण से संपन्न होखे।

राम के निहितारथ : आदमी के पहिले के व्यस्तता धार्मिक रहे; दुनिया आ सांसारिक चीजन के चिंता करत घरियो ऊ परलोक में, देवी-देवता के बारे में, परलोक के बारे में आ अउरी जगहन पर एह सब के बारे में सोचत रहले। परिष्कार आ विकास के प्रक्रिया से गुजरल रहित। हालांकि धर्म दुनिया से परे भा पीछे के सच्चाई आ वास्तविकता के आकांक्षा ह बाकिर ई आदमी के वास्तविक सांसारिक स्वभाव से बहुते जुड़ल बा आ हमेशा अपना साथे अशुद्धि के परछाई ले के चलेला।

धार्मिक कवि सांसारिक कलंक के कम कइल भा ढंकल चाहत बाड़न, काहे कि ओकरा ओकरा के पूरा तरह से पार करे के तरीका नइखे मालूम, दू तरह से: एगो मजबूत विचार-तत्व से, आध्यात्मिक तरीका से, जवना के कहल जा सकेला आ दूसर एगो मजबूत प्रतीकात्मकता से, गुप्त तरीका से। धार्मिक के रहस्यवादी कवि में बदल देला। सही मायने में आध्यात्मिक, जइसन कि हम कहले बानी, अबहियों चेतना के एगो उच्च स्तर बा: जवना के हम आत्मा के आपन कविता कहत बानी ओकर आपन पदार्थ आ तरीका बा – प्रकृति आ स्वधर्म।

राम : पार्थिवता से अछूता आकाश-प्रकाशित आनंद!

ऊपर से नीचे तक धनुष, .

प्रकृति - ऊ अजन्मा प्रकाश जवना के कवनो सोच पता ना लगा सके,

एगो परिचित चमक से हमार मिजाज भर दीं।

माटी के मुँह से हम निहोरा करत बानी:

हमरा से दिल से दिल तक अंतरंग शब्द बोलीं,

आ तोहार सब निराकार महिमा प्रेम में बदल जाई

आ राउर प्यार के इंसान के चेहरा में ढाल दिही।

राम : आध्यात्मिकता आ पदार्थमय तरीका के बीचोबीच पूर्णता

उनकर आत्मा अनन्त काल से घुल-मिल जाला

आ अनंत के मौन के बीच ।

नश्वर विचार से पाछे हटला में,

आत्म-दृष्टि के एकलता में,

ओकरा के राहहीन ऊँचाई पर ले जाइल जा रहल बा,

मानवता के अपना साधन से ।

समाधि के अध्वनि ऊँचाई में जागत एगो आँख।

राम के शक्ति खाली रहस्यमय से बेसी कुछ ह। हमनी के अनंत के जादू । प्राचीन शुद्धता आ सिद्धता में, अनिवार्य सादगी में अभिव्यक्ति।

राम : शुद्ध आ विस्तृत रूप में, उच्च, व्यापक आ गहिराह रूप में अहंकारहीनता के वास्तविकता के चौड़ा फ्रेम, अधिका चमकदार

बाकि अगिला पन्ना पर.....

पैटर्न, अधिका महीन । व्यक्त- अव्यक्त के मध्य । सत्य आ सामंजस्य खातिर रूप , स्वर आ संगीत। एह अर्थ में कि ई रोशनी अक्सर आवेला स्वाभाविक रूप से । ऊ एकरसता से हट के साधारण आ अलौकिक के बीच कवनो ना कवनो तरह के प्रत्यक्ष आ तत्काल संपर्क स्थापित करे के कोशिश कइलन।

प्रतीकात्मकता के साथ। चेतना के उच्च स्तर । राम के रूप में हमनी के आत्मा के आपन कविता हईं जा, आपन पदार्थ आ तरीका हईं जा - प्रकृति आ आत्मधर्म हईं जा।

राम : बालू के दाना में अहंकारहीनता के दुनिया
बने के फूलन में चित्रात्मकता,
काल के हथेली में एक पल में अनंत के पकड़ लीं।

राम : पार्थिवता से अछूता आकाश-प्रकाशित आनंद!
ऊपर से नीचे ले
प्रकृति-पुरुष- अजन्मा प्रकाश, जवना के विचार के पता ना चलल ,
नाहियो चल पावल,
ऊ ज्योति हमनी के चित्त में एगो परिचित चमक से भर दिहलस।
दिल से दिल ले अंतरंग शब्द ,
मने हृदय प्रेम में बदल गइल।

राम के अर्थ : आत्मा अनन्त काल में घुल-मिल गइल मौन के स्वीकृति में
आत्म-दृष्टि के एके चितवन में
इंसानियत के दृष्टि।

राम :
दीया के बाती के मुस्कान
सत्यसन्ध
सार्थक गहिर अर्थ
शिला तोरि के बहि के आवेले
एगो सभ्यता के नदी
राम के धवल जल।

◆ ◆ ◆

रवींद्र नाथ श्रीवास्तव "परिचय दास"

(रवींद्र नाथ श्रीवास्तव। कवि, निबंधकार, आलोचक, संस्कृतिकर्मी। नव नालंदा महाविहार सम विश्वविद्यालय (संस्कृति विभाग, भारत सरकार) , नालंदा में प्रोफेसर। मैथिली -भोजपुरी अकादमी , दिल्ली सरकार आ हिन्दी अकादमी , दिल्ली सरकार के पूर्व सचिव । 'परिछन' भोजपुरी-मैथिली पत्रिका के संस्थापक-संपादक।
'इन्द्रप्रस्थ भारती' हिन्दी पत्रिका के पूर्व संपादक। एह समय 'समाचार विन्दु' साप्ताहिक भोजपुरी अखबार आ 'गौरवशाली भारत' हिन्दी मासिक पत्रिका के प्रधान संपादक।)

भोजपुरी लोकगीतन में मेहरारू लोग के पीड़ा

मरद आ मेहरारू पारिवारिक जीवन का गाड़ी के दुनों पहिया ह । दुनों एक समान रही त पारिवारिक जीवन के गाड़ी बढ़िया से डगरत रही । ई जनला के बादो मरद मेहरारू के अनदेखी करत, ओह के दुखी करत आइल बा, काहे से कि भारतीय समाज पुरुष प्रधान रहल बा । भोजपुरिया जन जीवन में ई उपेक्षा के बेवहार तनिक बेसिये रहल बा । भोजपुरिया नारी चहारदिवारी के भीतरी कैद रहत आइल बाड़ी । पति कमाए परदेस जाए के मजबूर बा । ऊ अपना मेहरारू के छोड़ के निकल जाता बा । परिवार के अउर लोग–सास, ससुर, ननद, जेठानी औरत के सॉसत में राखत बा । एगो मेहरारू दोसरा मेहरारू के दुर्दशा में भूमिका निबाहत बाड़ी । वैदिक साहित्य में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमन्ते तत्र देवता ' जइसन पॉति से नारी के महिमा मंडन कइल गइल बा , बाकिर आर्ष वाक्य के जीवन में उतारे के बजाए पुरुष वर्ग अपना के परमेसर माने लागत बा । एही से भारतीय नारी कि भोजपुरिया मेहरारू दुर्दशाग्रस्त हालत में बाड़ी । नारी अपना एह व्यथा के कथा लोकगीतन में कहत आइल बाड़ी । लोकगीत के सिरजनहार देखीं तो मेहरारुए समाज बा , मरदन के योगदान एह दिसाईं कम बा । मेहरारु लोग आपन दुख-तकलीफ, हॅसी-खुशी के अभिव्यक्ति लोकगीतन के जरिये करत आइल बाड़ी ।

लोकगीत भावावेग से गावल जाला, एही से हिरदया तक पेहम हो जाला । मेहरारून में ई भावावेग बेसी होला । स्वर भीनल होला, एह से मरम के छूवेला । ना खाली हॅसी-खुशी, दुख-तकलीफ, बलुक हर अवसर पर ; तीज- तेवहार, जनम से लेके बिआह तक, आ कहीं त सोरहो संस्कार में मेहरारू लोग गावते-गुनगुनावते रहेली । बाकिर, मेहरारू लोग अपना मन के बाथा, पीड़, अभिलाषा, मन के इच्छा आ वेदना के जवन स्वर देले बाड़ी ऊ कवनो बेकती के भावुक बना देवे में सक्षम बा ।

भारत देश अइसन देश बा जहॉ वाचिक परम्परा से पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज्ञान-विज्ञान, अनुभव, सीख-सीखावन के बात कायम बा । एही से इहॉ लोक साहित्य के प्रचलन बा, दुनिया के अधिकांश देशन में लोक-साहित्य के अभाव बा । भारत में वेद शास्त्र पुरान के श्रुति-स्मृति कहल गइल बा । सुन के, स्मरण राखे के काम आ अगिला पीढ़ी के देवे के काम होत आइल बा । एही से लोकगीत बड़ा समृद्ध बा आ भोजपुरी क्षेत्र में एकर अकूत भंडार बा ।

भोजपुरिया समाज में मेहरारू लोग खातिर सबसे त्रासद स्थिति बा उनकर बॉझपन । बॅझिनिया भा बॉझपन शब्द गारी ह । अइसन औरत के भोरे-भोरे मुँह देखल अशुभ मानल जाला । औरत खातिर ओकर महतारी बनल बड़का गुण मानल गइल बा । कवनो मेहरारू बिना बाल-बच्चा के भरल पूर्व ना मानल जाली । संतानहीन नारी हीनभाव से भर जाली । परिवार के लोग संतानहीन नारी भा बॉझिन औरत के खोबसत रहेलन । संतान खातिर औरत हर तरह के उपाय करेली । मनौती, पूजा, तन्तर-मन्तर, टोना-टोटका हर उपाय । मरद भले संतान पैदा करे में अक्षम होखे, दोष औरते के देवेला । भोजपुरिया औरत एह आरोप आ ताना के सह ना पावे । एगो लोकगीत में ई गावल गइल बा कि संतानहीन औरत के ना बाघिन खाले आ ना नागिन डॅसेले –

"सासु मोरा कहेली बॅझिनिया,
ननद बिरिजवासिन हो
रामा जिनकर हम बानी रे बिआही
उहो घर से निकसलनि हो
घरवा से निकसि बॅझिनिया,
जंगल बीच ठाढ़ भइली हो
रामा बनवॉ से निकसी बघिनिया
त दुख सुख पूछेले हो
ए तिरिया! कवन बिपतिया के मारल
जंगल बीच ठाढ़ भइलू हो
सासु मोरा कहेली बॅझिनिया,
ननद बिरिजवासिन हो

बाघिन जिनकर हम बानी बिआही
उहो घर से निकासेले हो
हमरा के जो खाई लिहतू
बिपतिया से छूट जइती हो
जहॅवा से तू चलि अइलू
तहॅवे लवट जाहू हो
बॉझिन ! तोहरो के जो हम खाइबि
हमहूँ तो बॉझ होखबि हो"

देवता पितर के गोहरावल जाला कि संतान होखे । एक लोकगीत में एगो बॉझ औरत सितला माई से भाव से भरल गोहार लगावत बाड़ी –

"सासू मारे हुदुका ननदिया पारे गारी हो मइया

गोतिनी बँझिनिया धइली नाँव

मोर गोद भरीं मइया, गोतिनि बँझिनिया धइली नाँव।*

भोजपुरिया समाज में बेटी के अपेक्षा बेटा के महत्त्व बेसी दिहल जात रहल बा । बेटी के जनम भइला पर घर परिवार में एगो उदासी आ चिन्ता बढ़ जाला । धरती धँस जाली । बेटी के जनम देवे वाली माई के साथ उपेक्षा भाव राखल जाला । बेटी के जनम देवे वाली महतारी का तरह-तरह के कष्ट सहे के पड़ेला । बेटी के जनम सोचिए के मेहरारू कॉप जाली –

"कुस ओढ़न कुस डॉसन, बन फल भोजन रे

ए ललना सुखुड़ी के जरेला पँसगिया निनरियौ ना आवेला रे।"

बेटी के जनम के साथ अउर कई गो चिंता जनम लेवेला, जइसे कि ओकर लालन-पालन, ओकर शील रक्षा आ सबसे बढ़ के ओकरा बिआह खातिर दहेज के बेवस्था । भोजपुरिया समाज में मुँहमाँगा दहेज ना दिहला पर बेटहा बेटिहा के अपमानित करेला । कतनो दान दहेज बेटी वाला देवेला, बेटहा का संतोष ना होखे । एही से बेटी के जनम शत्रुओ के घर में ना होखे, ई भाव लोकगीतन में व्यक्त कइल गइल बा –

"नव लाख दहेज थोर रे

भीतरी के गेड़आ बाहर दे मरली,

सतरू के धीया जनि होय हो।

समधी जे छाँटें लामी-लामी बतिया रे,

आप प्रभु सीस नवाई रे।"

दहेज के कारण कतनन बेटियन के जिनगी जिआन हो गइल आ हो जाला । दहेज के बेवस्था ना हो सकला पर बुढ़वा, आन्हर, कनडेराह, बहिर, लांगड़, लूल्ह, नकभेभर लइका से बिआह हो जात रहल ह, जवना से बेटियन के जिनगी नरक बन जाता रहल ह । ई बात मेहरारू लोग लोकगीत में उठवले बाड़ी । दू पॉति देखीं –

बाबा सादी ना कइलऽ , बरबादी कइऽ।

ओहि बुढ़वा भतार संगे, सादी कइलऽ।

बिआह के बाद पतोह बन के ससुरार पहुँचल लइकिन के सपना टूटे लागत रहल ह । सास ससुर में माई बाबू आ देवर ननद में भाई बहिन के नाता खोजेवाली नइकी कनिया के भ्रम टूटे लागेला जब ओकरा में सास-ससुर, देवर-ननद, जेठ- जेठानी का खोट आ कमी लउकेला । सबके टहल बजावल मजबूरी होखेला । सबके-पिआ के जूठ-कॉठ खाये के मिलेला । दिन भर खटला आ सबके बात सहला से जवन पीड़ा होखेला ओकर बयान लोकगीतन मिलेला । कुटला-पीसला- सींझवला के बादो सासु जहर वाला बोल बोलेली, ई बात बहिन अपना भाई से बतावत बाड़ी –

"कै मन कूटीं भैया कै मन पीसीं रे ना।

भैया कै मन सिझाईं रसोइया रे ना।

सासू तो ए भइया बुढ़िया डोकरिया रे ना।

भइया मुँहवा से जहर के गठिया रे ना"

मेहनतकश परिवार के घर में बिअहल मेहरारू का घर के काम काज तो निबटावे के पड़ेला, दोसरा के खेत में जा के मजदूरियो करे के पड़ेला । संयुक्त परिवार के चालाक लोग सिधुआ से बेसी काम करवा लेवेला । धनरोपनी करे गइल एगो मेहरारू अपना आ अपना पति के श्रम शोषण के बारे में एगो गीत गावत रहली ह, कुछ एक पॉति देखीं —

"जहिया से अइलीं पिया तहरी महलिया में

रात दिन कइलीं टहलिया रे पियवा

घर के करत काम सूखल देही के चाम

सुखवा सपनवा होई गइले रे पियवा

बड़की गोतिनिया जे हई मलकिनिया से

भसुर जी छैला चिकनिया रे पियवा

हरवा जोतते तोर गोरवा पिरइले

रूपया के मुँहवा ना देखनी रे पियवा"

मरद के नजर में मेहरारू के समर्पन भाव के कवनो मोल महातम ना रहल बा । ओकर पहचान पति के पहचान से जुड़ल रहल बा । ऊ शारीरिक, आर्थिक आ सुरक्षा खातिर मरद लोग पर निर्भर रहल बा । मरद एकरे लाभ उठावत रहल बा । मरद अपना मेहरी के प्रताड़ित करत आ पीड़ा देता रहल बा, मार पिटाई करत रहल बा । एगो मेहरी अपना मरद पर आरोप लगावत बाड़ी कि ओकर मरद बबूर के डंटा से पिटाई करत बा –

"बबूर डण्टा तानि तानि, सइयाँ मारे रे।"

मरद मेहरारू के जानवर बूझत बा, ओकरा के बेंच के बछरू आ भँइस ले आवे के धमकी देत बा –

"आरे तोहि के बेचिए धनि भँइस ले अइबो

बछरू चरइबो सारी रात ए"

भोजपुरिया समाज में मरद मेहरारू के हैसियत में बहुत आंतर आ भेद रहल बा, कम बेस आजुओ बा । मेहरारू राँड़ मुसमात भइला के बादो बिआह ना कर सके, जबकि मरद घर में मेहरी रहते दू गो तीन गो बिआह कर सकत बा । मेहरारू का अपना मरद के प्रति अगाध प्रेम आ सरधा रहेला, बाकिर मरद का मेहरारू उपभोग के वस्तु लागेली । मरद घर में मेहरी अछइत दोसर मेहरारू ले आइल, बिअही पर सगही, त बिअही के पीड़ा लोकगीत में अइसे फूटल बा –

"हम त तोरे गले के हार रजवा, काहे को लवल सवतिया।

जाहु हम रहतीं बाँझ बँझिनिया, तब अइति सवतिनिया!"

भोजपुरी में सोरठी बिरजाभार एक लोकगाथा ह जेकर आपन अलग धुन होला । एहू धुन में लोकगीत गावल जाला अउर लिखल जाला । एह धुन के एक गीत में कवनो औरत का सउतिन के बोली ना सोहाय –

" एही पार आरा हो जिला ओही पार छपरा हो

बिचवा बहेला गंगाधर नू हो राम

ओही बालू रेतिया में बसेले जोगिनिया राम

सेही नू जोगिनिया जदुआ डारेली हो राम

खाइ के जहरिया ए स्वामी हम मरी जइबो हो

सवत के बोलिया ना सोहाला हो राम"

भोजपुरी लोकगीतन के एगो प्रकार बा जँतसार । जँतसार औरत लोग जाँता में अनाज पीसत घरी गावत रहली ह । जँतसार गीतन में प्रायः मेहरारू का दुख आ पीड़ा, विरह वेदना चाहे पतिवियोग के पीड़ा के बात होले । एगो टूवरी लइकी जेकरा ना नइहर सुख मिलल आ ना सासुर, का कवना -कवना तरह के साँसत सहे के पड़त बा, एह जँतसार में गावल गइल बा —

"आमा मोरी मुउली सउरिया में छोड़ी ए सखिया

आरे बाबा बिअहले दूरी देसवा रे सखिया

बारही बरिसवा पर बाबा मोरे लवटले

चलि भइले धिया के दुआरवा रे सखिया

फुटही थरियवा सासु जेवना परोसली

पनिया पिये के देहली कनकट लोटवा रे सखिया

खात पिअत बाबा कुछऊ ना बोले

अचवे के बेरिया धिया विदा माँगेले रे सखिया

ससुरु त हईं मोरा भादो के रे बिजुरिया

गरजी-गरजी घन बरिसे रे सखिया

भसुरु त हवे राम सावन के अन्हरिया

तड़पि-तड़पि बोलिया बोलेले रे सखिया

सासु त हई रामा रेंगनी के काँटवा

चुभुकि-चुभुकि बोलिया बोलेली रे सखिया

ननदी त हई जइसे बिछिया के टुंड़वा

आरे मारेली सारी देह सिहरेला रे सखिया

गोतिनी त हई जइसे जाँतवा के जोन्हिया

छनही टुटेली छने जुटेली रे सखिया

देवर हउए जइसे पाकल रे पानवा

चारो बात गाल तर छिपावेले रे सखिया"

एह प्रकार के अनेकन भोजपुरी लोकगीत पावल जाला जवना में मेहरारू लोग के पीड़ा बहरिया के निकलेला । अब भोजपुरिया समाज में बहुत बदलाव आइल बा, बाकिर ओह अनुपात में भोजपुरिया औरत लोग के हालत में सुधार ना भइल बा । एह गीत सब से भोजपुरिया समाज के स्थिति के पता चलता बा ।

◆ ◆ ◆

डॉ० ब्रज भूषण मिश्र

गाइ- बैल

1.गाइ

हमनी किहाँ गाइ के बड़ महातिम बा।ई एगो जानवर ना, बलुक साक्षात् लक्ष्मी मानल जाली। एसे लोग गऊ माता कहेला।पहिले जब माटी के घर-आँगन रहल त मेहरारू लोग भिनुसारे गोबर में पियरी माटी मिलाके पोतन से लिपत-पोतत रहलीजा।बिना लिपले-पोतले कवनो कामे ना होत रहे।घर-आँगन गहगहा जात रहे।देहि के नीमन कसरतो हो जात रहे।खाये के नाहियो जुरो, तबो अतना काम रोजे होत रहे।पूजा-पाठ, तिलक-बियाह में त बहुते लोग लागि-भिड़िके जल्दिये-जल्दी काम खतम क लेसु।तबे त गवाये—

'गाइ के गोबरे महादेव! अँगना लिपाइ।

गजमोति आहो महादेव! चउका पुराइ'।

पता ना; गजमोति, गजमोती (गजमुक्ता) होइबो करेला भा खाली कविसमये ह! तबो; अतना त बुझाते बा जे ऐपन भा आटा-हरदी मिलाके सुखलहू अँगना में चउका पुरात रहे।त; देखतो सोहावन आ अलंकृत लागत रहे।

आजुओ पूजा-पाठ में प्रायः चउका पुरेके रेवाज बा।बाकिर; गाइ के गोबर ले लिपात कहाँ बा! अब त सभकर पकिया मकान हो गइल बा।केहुए-केहू के कच्चा बा भा घास-फूस के बा।अब आँगन गायबे हो रहल बा आ बड़लो बा त पकिया घर-आँगन पानी से भा फेनाइल से धोआता-पोछाता।अब त लोग गोबर छुअलो नइखन चाहत।घिनातो बाड़ें।हँ; इहो बात बा जे गाइ पोसाते कहाँ बाड़ी सँ! गोसेवा करते के बा? गाइयो त देसी कमे, विदेशिये नस्ल के नू अधिका बाड़ी सँ! एसे अब ओमें ऊ औषधीय गुण, पवित्रता आ शुद्धता कमे रहि गइलि।

एगो कथा बिया, जेकरा मोताबिक सभ देवता आके गाइ के अंग-प्रत्यंग में बिरजलें।लक्ष्मीजी देर से अइली।अब त कवनो जगहे ना रहे।तब ऊ गाइ से पुछली जे हम कहँवा रहीं? जगहे ना रहे त गौ माता का कहसु! ऊ कहली जे तू गोमय आ गोमूत्र में रह—

"अवश्यं मानना कार्या तवास्माभिः यशस्विनि।

शकृन्मूत्रे निवस त्वं पुण्यम् एतत् हि नः शुभे" ॥

माने ई जे हे शुभकारिणी! हे यशस्विनी!! हे लक्ष्मीजी!!! हमनीका राउर मान जरूरे रखम सँ। रउरा हमनी के गोबर आ मूत्र में निवास करीं।

गौ माता के आदेश मानिके ऊ ओही में रहे लगली आ हमनीका श्रीमय मानिके ओकर श्रद्धा से उपयोग करे लगलींजा।इहाँ ले जे गोबरे के गौरी बनाके पूजे लगलींजा।अतने ना; हमनी किहाँ गोबर यमुना, गोमूत्र नर्मदा आ गाय के दूध गंगा के रूप में पवित्र मानल बा—

"गोमयं यमुना साक्षात् गोमूत्रं नर्मदा शुभा।

गंगा क्षीरं तु यासां वै कि पवित्रम् अतः परम्" ॥

अर्थात्; गोबर साक्षात् यमुना ह, गोमूत्र नर्मदा ह आ गाइ के दूध गंगा ह।त; एह तीनो से बढ़िके पवित्र का हो सकता!

एही से हमनी किहाँ पंचगव्यो के बड़ महातिम बा।कहल गइल बा—

"यत् त्वगस्थिगतं पापं देहे तिष्ठति मामके।

प्राशनात् पंचगव्यस्य दहत्यग्निः यथेन्धनम्" ॥

माने ई जे हाड़-माँस के हमरा एह देह में जवन कवनो पाप बा, ऊ पंचगव्य के चिखे भा पिये से ई ओही तरे पाप, मल आ रोग-दुख के भसम क देउ, जइसे आग जरौना के जरा घालेला।

पंचगव्य गोमूत्र, गोबर, दूध, दही आ घीव; गाइ के एह पाँच विकारन के समाहार ह।बाकिर; कतना मात्रा में कवन-कवन चीझु पड़ी, एकर निर्देश भिन्न-भिन्न जगे भिन्न-भिन्न बा।शायद; मात्रा के अनुसार कामो विशेष होई।

खैर; भारतीय संस्कृति गाइ के महिमा गावत थाकत नइखे।ई इहाँ ले कहतिया— 'गावः त्रैलोक्य-मातरः' ।अर्थात्; गाइ तीनो लोकन के (स्वर्ग, मृत्यु आ पाताल लोक के) माई हई।एही से हमनीका गऊ माता कहतानीजा आ पूजो करतानीजा।

गोसेवा के त बड़ महातिम बड़ले बा, गोग्रास आ गोदानो के महातिम कम नइखे।श्रीकृष्ण के गोपाल भइलो एकर महातिम उजागर करता।

कहल गइल बा जे महायोद्धा पाण्डव-पुंगव अर्जुन के दस नाम गोशाला में भा गाइन के गरदन में भोजपत्र प लिखिके लटका देला से खोरहा जइसन बेमारियन से बचाव होला।ऊ नाम ई बाड़ें—अर्जुन, फाल्गुनी, जिष्णु, किरीटी, श्वेतवाहन, बीभत्सु, विजयी, पार्थ, सव्यसाची, धनंजय, कपिध्वज, गुडाकेश, गांडीव आ कृष्णसारथि—

अर्जुनः फाल्गुनी जिष्णुः किरीटी श्वेतवाहनः।

बीभत्सुः विजयी पार्थः सव्यसाची, धनंजयः ॥

कपिध्वजो गुडाकेशो गांडीवो कृष्णसारथिः ॥

एतान्यर्जुन-नामानि गवां गोष्ठे च यो लिखेत्।

न तत्र पशुरोगादि सुभं शीघ्रं प्रजायते॥

अब गाइ के पर्यायन के बात कइल जाउ त अमरसिंह गौ, माहेयी, सौरभेयी, उस्रा, माता, शृंगिणी, अर्जुनी, अघ्न्या आ रोहिणी; ई नौगो बतवले बाड़ें।अन्य कोशकार लोग माहेन्द्री, इज्या, धेनु, अघ्ना, दोग्धी, भद्रा, भूरिमही, अनड्वही, कल्याणी, पावनी, गौरी, सुरभि, सुरभी, महा, अनड्वाही, बहुला, मही, सरस्वती, इला आ जगती बतावताड़ें।

हम संस्कृत के गतिशील संज्ञन के व्युत्पत्ति में देखींला जे अधिका धातु प्रायः गमनार्थके होलें।जइसे— गंगा (गमयति गम्यते इति), खग (खे गच्छति) हय (घोड़ा में हय् गतौ) आदि। एही तरे गौ के प्रयोग बा।एकर अर्थ बा जे जाये— 'गच्छतीति गौः'।शायद; सचरता के वैशिष्ट्य प जोर देके अइसन नाम रखाइल।गो/ गौ में 'गम्' (गइल) धातु में 'डो' (ओ) प्रत्यय लागल बा।

अब दुसरका शब्द देखल जाउत त ऊ बा माहेयी।ई शब्द मही से बनल बा।मही के सामान्य अर्थ पृथ्वी ह।बाकिर; गाइ के अर्थो में ग्रहण बा।सम्भव बा; ई मही सामान्य ना सुरभि (कामधेनुवे) के बोधक होई।एही से माहेयी कहला से कामधेनु आ कामधेनु के सन्तति लियाइल।एही से एकर निरुक्ति बिया— 'मह्याः सुरभ्याः अपत्यं स्त्रियाम्'।मतलब; मही (सुरभि) के स्त्री सन्तान।एहिजा मही में 'ढक्' प्रत्यय लागल बा।पाणिनि के सूत्र से 'ढक्' के 'एय' हो जाला आ आदि स्वर में वृद्धि हो जाले।आदिस्वर में वृद्धि के तात्पर्य यदि पहिला स्वर अ, इ-ई-ए, उ-ऊ-ओ आ ऋ होखे क्रमशः अ के आ, इ-ई-ए के ऐ, उ-ऊ-ओ के औ आ ऋ के आर् हो जाला।एही से 'म' के 'मा' हो गइल बा।एही तरे सौरभेयी शब्दो सुरभि के सन्ताने बतावता। एकरो में 'ढक्' (एय) प्रत्यय लागल बा।

उस्र बैल ह त उस्रा गाइ।उस्र शब्द 'वस्' धातु में 'र' प्रत्यय लगला से बनल त स्त्रीप्रत्यय 'टाप्' (आ) लगला से उस्रा भइल।माने; 'वसतीति उस्रः उस्रा वा'।मतलब जे रहे (जे सबके घरे रहे), ऊ।

माता कहे से बुझाता जे मानव पहिले-पहिल मानवी के दूध के अतिरिक्त एही पशु के दूध पियले होई।एसे माई के जगहा रखाइलि।एकर निर्वचन बा—'मान्यते पूज्यते या सा'।माने; जेकर मान-सम्मान आ पूजा होख, ऊ।माई के महिमा सबसे ऊपर बा, ई शास्त्रो मानेलें— "मातृतोऽन्य न देवोऽस्ति तस्मात् पूज्या सदा सुतैः"।ओही माई के रूप में गइयो बिया।एसे इहो सम्मान्य आ पूज्य हिय।ई शब्द 'मान—पूजायाम्' धातु में 'तृच्' (तृ/ता) प्रत्यय लगला से बनल बा।

अर्जुनी काहें कहाइलि? त ; एकर उत्तर खोजे खातिर तथाकथित एगो वृक्ष भा पाण्डव अर्जुन के पासे जाये के जरूरत नइखे।हँ; ई सही बा जे अर्जुन आ अर्जुनी के उत्पत्ति 'अर्ज्' धातुए से भइल बा, जेकर अर्थ होला अर्जित कइल।पार्थ वीरता में यश अर्जित कइलें त ई संस्कार करेले।अइसन अर्थभेद काहें? त ; एसे जे संस्कृत में 'अर्ज्' धातु भ्वादिगणीय बा त चुरादि-गणीयो।भ्वादिवाला अर्जन बा त चुरादिवाला संस्कार कइल।चूँकि; गाइ के दूध बुद्धिवर्द्धक मानल गइल बा, एसे ओकर सेवन संस्कारी बनावहू वाला होला।एही से चुरादि-गणीय 'अर्ज्' धातुवे से अर्जुनी के मानल सही बा— 'अर्जयति लोकान् संस्करोतीति अर्जुनी'।

अब आईं शृंगिणी प बात कइल जाउ।स्पष्ट बा जे गाइ के सींघ होला, एसे ई शृंगिणी कहाइल— 'शृंगे अस्याः स्तः इति'।शृंग + इनि (इन्) + ङीष् (ई) = शृंगिणी।अघ्न्या भा अघ्ना; ई दूनो शब्द ई बतावताड़ें जे गाइ के मारल ना जाला।गाइ के लाते भा छाकुनो से मारल पाप ह। फिर; वध कइल त अउरो बड़ पाप होई नू! एही से भारतीय लोग गोमांस ना खासु आ ना गोहत्ये करसु।'ऋग्वेद' (8.101.15) के निर्देश कतना सुघर बा देखीं—

"माता रुद्राणां दुहिता वसूनां स्वसादित्यानाम् अमृतस्य नाभिः।

प्र नु वोचं चिकितुशे जनाय मा गामनागामदिति वधिष्ट"॥

अर्थात्; हम लोगन के समुझाके कहतानी जे गाइ रुद्रगण के माई, वसुगण के बहिन आ आदित्यगण के बेटी हई।ई अमृत के स्रोत भा केन्द्र हई।एसे समझदार बनिके मनुष्य के गाइ ना मारेके चाहीं।

अघ्ना आ अघ्न्या के निर्वचन ह— 'न हन्ति दातारम्'।'न हन्यते या'।माने; जे दाता लोगन के हानि ना करे आ जे मारेके ना हिय, ऊ। इहाँ 'हन्' धातु में 'क' (अ) प्रत्यय लागल त 'घ्न' भइल आ 'क्यप्' (य) प्रत्यय लागल त 'घ्न्य' भइल।दूनो में स्त्रीत्व-बोधक 'आ' लागल त 'घ्ना' आ 'घ्न्या' भइल।पुनः 'नञ्' समास के कारण 'न' के बदले 'अ' आगे लागल त अघ्ना आ अघ्न्या हो गइल।

अब आइल जाउ रोहिणी शब्द प।त; ई शब्द 'रुह' (बीज से उत्पन्न भइल, बीज के उगुलल, जनमल) धातु में 'इनन्' प्रत्यय के अलावे 'ङीष्' (ई) स्त्रीप्रत्यय लगला से बनल बा।हमरा बुझाता जे ई रोहिणी लाल गाइ हिय।काहेंकि; रोहित वर्ण के संकेत 'अमरकोश' के रामाश्रमी टीको में बा।

एही तरे माहेन्द्री, माने देवराज के कामधेनु से उत्पन्न, इज्या पूजे योग्य भा पूजा के काम में जेकर दूध आदि आवेला, एसे नाम परल।धेनु नवप्रसूता के वाचक ह त दोग्ध्री के मतलब जेकरा के दुहल जाउ।सम्भव बा; जे पहिले-पहिल गाइये दूध खातिर

दुहाइल होई।भद्रा आ कल्याणी से स्पष्ट बा जे गोपालन मंगलमय ह। भूरिमही कहे से बुझाता जे सोना आ धरती लेखा इहो मानव खातिर कीमती हिय।अनडुही आ अनड्वाही त साँढ़-बैल के स्त्री भइला से बा, पावनी पवित्रता के द्योतक, गौरी शब्द शायद बाछी के भा पार्वती के रूप में गृहीत बा।धवरी (धौली) के वाचको हो सकता।

अब आइल जाउ सुरभि भा सुरभी प।त; सुरभि के प्रयोग अनेकार्थी बा।ओह अनेकार्थियन में आदिगौ के साथे-साथ पुंलिग में वसन्तो बा।आदिगौ के बारे में 'ब्रह्मवैवर्त' पुराण के 'प्रकृति-खण्ड' के 47वाँ अध्याय में देखे जोग उल्लेख आ माहात्म्य बा।प्रसंग में इहो आइल बा—

"गवाम् अधिष्ठातृ-देवी गवाम् आद्या गवां प्रसूः।

गवां प्रधाना सुरभी गोलोके सा समुद्भवा" ॥

अर्थात्; गइयन के अधिष्ठात्री देवी, गइयन के आदिमाता आ गइयन के प्रधान सुरभी देवी पहिले-पहिल गोलोक में प्रगट भइली।

गोमाता भा गाइ के अर्थ में सुरभि के निर्वचन 'सुष्ठु रम्भते इति'।एकरा में 'सु' उपसर्ग 'रभ्' धातु आ 'इन्' (इ) प्रत्यय लागल त सुरभि आ 'ङीष्' (ई) प्रत्यय लगला से सुरभी बनल।

प्रश्न हो सकेला जे यदि सुरभि आदि गोमाता हई त सभ गइयन के पर्याय कइसे हो गइली? त; हमरा बुझाता जे ओही रूप में सभके देखल भा ओसही सभ गाइ वंशबीज होली, दूध देके हमनी के पुष्ट-सन्तुष्ट करेली, एही से ई समानार्थी भइल।

हँ; का त कश्यप के पत्नियनो में सुरभि रहली, जेकरा से गाइ-भँइस आदि के जनम भइल।त; प्रश्न इहो हो सकेला जे गोलोकवाली सुरभी आदि गोमाता हई भा कश्यपवाली? हमरा समझ से गोलोके वाली के अवतार कश्यपवाली हई।अइसहूँ कहल जा सकेला जे ऊ ऊपर के त ई नीचे के गोजाति के माता हई, आकाशगंगा नियन।

गाइ के पर्याय में आइल महा के मतलब पूजे योग्य— 'मह्यते पूज्यते इति'।ई शब्द 'मह्' धातु में 'घ' (अ) प्रत्यय आ स्त्रीबोधक 'टाप्' (आ) प्रत्यय लगला से बनल बा।एह शब्द से ई भाव प्रगट होता जे गाइ खाली दुधारे ना होली देवीरूपा हई, एसे पूज्य हई, आदर के योग्य हई।

बहुला शब्द बहु+ ला धातु + क (अ) प्रत्यय+ स्त्रीत्व वाचक टाप् (आ) प्रत्यय से बनल बा। भादो बदी चउथ के बहुला नाम के गाइ के व्रत-पूजा होला।बहुला-व्रतकथो बिया।शायद; सुरभी लेखा बहुलो के सभ गइयन में व्यापक दृष्टि के ई परिणाम ह।

महर्षि यास्को गौ शब्द के निर्वचन में सरस्वती आ पृथ्वी के ग्रहण कइले बाड़ें।बुला; एही से भूवाची मही, इला आ जगती तथा नदी भा भगवतीरूपा सरस्वतियो के ग्रहण भइल।

अमरसिंह आदि रंग आदि से सम्बन्धित गाइ के कतने भेदो बतावल बाड़ें।जइसे—1.रंग प आधारित-- शबरी (चितकाबर), धवली (धवरी, गोरकी), कृष्णा, कपिला, पाटला आदि।2.गुण के आधार प-- नैचिकी (उत्तम गाइ), अचंडी-सुकरा (सीधी, सुशीला)।3.आकार के आधार प—दीर्घा, ह्रस्वा, खर्वा, वामनी।5.अंगभेद से—पिंगाक्षी, लम्बकर्णी, वक्रशृंगी।6.अवस्था के आधार पर—एकहायनी-एकवर्षा, द्विहायनी-द्विवर्षा, त्र्यब्दा-त्रिहायणी, चतुरब्दा-चतुर्हायणी।7.बहिला के—वशा, वन्ध्या।8.जेकर गर्भ गिर गइल होखे—अवतोका, स्रवद्गर्भा।9.साँढ़ द्वारा आक्रान्त (पाल खात)—सन्धिनी।10.साँढ़ के संसर्ग से गर्भ गिरा देबेवाली—वेहत्।11.बरधाये जोग गाइ—कल्योपसर्या।12.बच्चे प गाभिन होखेवाली—प्रष्ठौही।13.बहुत बार के बियाइल—बहुसूति आ परेष्टुका।14.बहुत दिन के बियाइल—चिरप्रसूता, वष्कयिणी (बकेन)।15.हर साल बियाये वाली गाइ—समांसमीना।16.पहिले पहिल बियाइल—धेनु, नवसूतिका।17.जवन गाइ आसानी से दुहल जा सके—सुव्रता, सुखसन्दोह्या।18.मोट-मोट थानवाली गाइ—पीनोघ्नी, पीवरस्तनी।19.द्रोण (डोल/ बाल्टी) भर भा लगभग 12 लीटर दूध देबेवाली—द्रोणक्षीरा, द्रोणदुग्धा।20.एक बियान के बन्हकी में रखाइल गाइ—धेनुष्या।

एतरे देखल जाउ त भारतीय संस्कृति के संरक्षण आ संवर्धन में गाइ के सबसे अधिका महत्त्व बा।एकरा बिना कवनो यज्ञ ना हो सके।काहेंकि; पूजा-पाठ में एकरे दूध, दही, घीव के स्थान रहेला। 'अमरकोश' में ई भले वैश्यवर्ग में स्थापित होखे।बाकिर; ई सभे वर्ग खातिर धन रहल, जेसे अन्य प्रकार के धन में गोधनो के स्थान रहल—"गोधन गजधन वाजिधन ..."। वैश्यकर्म में कृषि, गोरक्षा आ वाणिज्य रहल।एसे वाणिज्य में भले एकर स्थान न्यून होखे, बाकिर गोरक्षा आ कृषिकर्म के त ई अभिन्न अंग हइये हिय।आजुओ व्यापार में गोपालन उन्नति-कारक बा।आजु त डेयरी फार्मो काम करताड़ें।

बैल-साँढ़

हमनी किहाँ गाइ के महिमा त बड़ले बा, ओकर बछरुओ के महत्त्व कम नइखे।जहाँ गाइ देवीरूपा बाड़ी, उहें बैल साक्षात् धर्मरूप।इनिके कइले गृहस्थ के घर अन्न-धन से भरल रहेला, जेसे उनुकर योग-क्षेम के वहन होला।आजु भले खेती में हर-बैल के दिन पतराइल बा, बाकिर भारतीय कृषि-कृषक के इहे पकिया सँघतिया रहन।मशीनी युग भले इनिकर मान-मर्दन करता, तबो आजो ई मित्रता निभावे खातिर तइयार बाड़ें।

लिंग के आधार प गाइयो के बच्चा दू तरह के होलें।पुंलिग बाछा (वत्स, बछड़ा) त स्त्रीलिंग बाछी (वत्सा, बछड़ी)।बाछिये बड़ होके गाइ होले आ बछवे बैल आ साँढ़।बैल आ साँढ़ में अन्तर

ई होला जे बधिया कइल बैल होला आ जेकर बधिया ना कइल जाला ऊ साँढ़। 'अमरकोश' में आर्षभ्यः षण्डतायोग्यः (वैश्यवर्ग-62) कहल गइल बा।मतलब ई जे बधिया कइल बाछा के आर्षभ्य कहल जाला आ ई नपुंसक हो जाला।एमें सन्तानोत्पादकता ना रहे आ इहे किसानी खातिर उपयोगी होला।चाहे हर जोतेके होखे भा हेङा खींचेके।चाहे दँवरी करेके होखे, भा मोट, गाड़ी खींचेके।इहे कामे आवेला।बधिया के कारण एकर ऊर्जा के क्षरण ना होखे। दोसरा ओर जेकर बधिया ना होखे, ऊ साँढ़ हो जाला।साँढ़ से गोवंश के वृद्धि होले।एसे एकर उपयोगिता के क्षेत्र अलग बा।

अब आइल जाउ, गोवंशीय सवांग (पुरुष) के चर्चा कइल जाउ।त; पहिले एकर पर्याय देखल जाउ, जे ई बाड़ें— वृष, उक्षा, भद्र, वलीवर्द, ऋषभ, वृषभ, अनड्वान, सौरभेय, गौ, शृंगी, ककुद्वान, शिखी, दम्य, दान्त, स्थिर, बली, ककुद्मान, धुर्य, धुरीय, धौरेय, शांकर, शिववाहन, रोहिणीरमण, वोढा, गोनाथ, गवेन्द्र, गन्धमैथुन आ पुंगव।

अब आइल जाउ, एह एक-एक नाम के बारे में कुछ समुझल-बुझल जाउ।त; वृष शब्द 'वृषु—सेचने' धातु में 'क' (अ) प्रत्यय लगला से बनल बा।एकरा निरुक्ति में कहल बा— 'वर्षति सिचति रेतः इति'।(अमरकोश के रामाश्रमी टीका के अनुसार 'अच्' (अ) प्रत्यय—'वर्षति इति वृषः'।एमें आइल रेतः शुक्र (वीर्य) के बोधक बा।एसे बधिया बैल के अपेक्षा साँढ़े के बोध होता। बाकिर; भले व्यापकता में ई साँढ़ो के वाचक होखे, प्रचलन में बैले खातिर आवेला।तब बुझाता जे वर्षति से अन्नवर्षण के ग्रहण कइल जा सकेला।वृषे लेखा वृषभो बा।एमें 'अभच्' (अभ) प्रत्यय लागल बा।एसे पूर्णतः समान बा।

हँ; उक्षा प आइल जाउ त इहो 'वृष—सेचने' लेखा 'उक्ष—सेचने' धातु से बनल बा।एमें 'कनिन्' (अन्/आ) प्रत्यय लागल बा।भद्र अनेकार्थी ह।'मेदिनीकोश' में कहल गइल बा—

"भद्रः शिवे खंजरीटे वृषभे तु कदम्बके।

करिजाति-विशेषे ना क्लीवं मंगल-मुस्तयोः॥

कांचने च स्त्रियां रास्ना-कृष्णा व्योमनदीषु च।

तिथिभेदे प्रसारिण्यां कट्फलानन्तयोः अपि॥

त्रिषु श्रेष्ठे च साधौ च न पुंसि करणान्तरे"।

मतलब जे भद्र के अर्थ शिव, नीलकंठ (पक्षी), बैल, कदम्ब, हाथी के एगो विशेष जाति; एह अर्थ में संस्कृत में पुलिग हवें।मंगल (कल्याण), मुस्ता, कांचन (सोना); ई नपुंसक लिग हवें आ स्त्रीलिग में भद्र से भद्रा होके बाड़ें-- रास्ना, कृष्णा, आकाशगंगा, तिथि (द्वितीया, सप्तमी, द्वादशी), कट्फल (कायफल), अनन्ता (पार्वती, पृथ्वी, दूब)।

भद्र शब्द शुभ काम कइल, सुखी होखल अर्थवाला भदि—कल्याणे सुखे च धातु में रन् (र) प्रत्यय लगला से बनल बा।एसे शिवजी, बैल आदि के सन्दर्भ में कहल जा सकेला—'भन्दते कल्याणं करोति सुखं च ददाति इति भद्रः'।

अतिशय बल होखला से बैल बलीवर्द कहाइल—'अतिशयितं बलम् अस्य'।हमरा जाने में बली शब्द हटाके 'वर्द' से बरध आ बरधा कहाइल।जइसे 'वृष्' धातु में 'अभच्' (अभ) प्रत्यय लगला से वृषभ भइल, ओसही गत्यर्थक 'ऋष्' में 'अभच्' (अभ) लगइला से ऋषभ बनल।मतलब; 'ऋषति गच्छतीति ऋषभः' जे जाला, ऊ बैल खातिर रूढ़ ऋषभ)।अनद्वान शब्द हमरा समझ से अँड़आ बैल के नाम ह।बाकिर, रामाश्रमी टीका में 'अनः शकटं वहति'; ई व्युत्पत्ति आइल बिया।'शब्दकल्पद्रुम' में अन के जीवन आ शकट (गाड़ी); दोनो अर्थ आइल बा।एसे ई गाड़ी त खींचबे करेला, गृहस्थ के जिनिगियो खींचेला। सुरभी के स्त्री सन्तान सौरभेयी त पुरुष सन्तान सौरभेय भइल।

संस्कृत में गौ शब्द अनेकार्थी ह।ओकें गाइ-बैल दूनो के अर्थे गौ (गो) के ग्रहण बा।शृंगी के माने सींघवाला शृंग में इनि (इन्) प्रत्यय लगला से बनल बा—'शृंगे स्तः अस्य इति' (एकरा सींघ होला)।ककुद् / ककुत् (डील) के कहल जाला, जवन बैल-साँढ़ के कान्हि प होला।बैल के अपेक्षा साँढ़ के बड़ होला।एमें (ककुद् में) वतुप् (वान) प्रत्यय लागल त ककुद्वान बनल। ककुद्मानो होला, जेमें मतुप् (मत् / मान) प्रत्यय लागेला।ई ककुद् बैल-साँढ़ के शुभ लक्षण ह। अइसन मान्यता बिया जे जवना के ना होखे, ऊ दरिद्रता के परिचायक ह आ जवना के होला, ऊ गृहस्थ खातिर उन्नति-कारक ह।'शब्दकल्पद्रुम' में कहल बा— 'कं सुखं कावयति गृहस्थस्य औन्नत्यं प्रापयतीति यावत्।वृषाणां हि ककुत् गृहस्थस्य सुख-लक्षणम् इति भावः।ककुद्धीन-वृष-पालने दरिद्रता इति सरणात्'।

'शिखा अस्य अस्ति इति'; माने एकर शिखा होले, एह अर्थ में मोर, अग्नि आ बैलो बाटे।बुला; एकर शिखा (चोटी) सींघे ह।एही से ई शिखी ह।बैल के पर्याय दम्य शब्द बुला प्रशिक्षण अर्थ में आइल बा—'दम्यते इति'।माने; जेकरा के दबावल जाउ।'दम्' धातु में 'यत्' (य) प्रत्यय लगला से ई शब्द बनल।एही तरे 'दम्—दमने' धातुए में 'क्त' (त) प्रत्यय लगला से दान्त बनल बा।एकरो दम्ये लेखा अर्थ बा।माने; जेकरा के दबावल जात होखे।इहो प्रशिक्षु बैल के बा। स्थिर शब्द के भोजपुरी में अस्थिर उच्चारण होला, जबकि दूनो एक-दोसरा के विपरीतार्थक हवें।ई शब्द 'ष्ठा (स्था)—गतिनिवृत्तौ' (रुकल, बइठल, ठहरल) धातु में 'र' प्रत्यय ल लगला से बनल बा।इहो अनेकार्थी बा।एकर अर्थ—देव, पर्वत, कार्तिकेय, वृक्ष, शनि, मोक्ष आ अनड्वान् (बैल) बतावल बा।एह अतना अर्थ में

खाली बैले प विचारल जाउ त बुझात नइखे जे ई स्थिर काहें कहाइल! त; हमरा लागता जे ई आपन काम स्थिराह से करेला, एसे भा गृहस्थ के बथान भा दुआर प बइठल बैल ओकर (किसान के) सम्मान आ ओकरा दुआर के शोभा बढ़ावेला, एसे।

शेर आ बाघ कतनो फुर्ती देखावसु, बाकिर एको बोरिया सामान लादि दीं त उनुकर नानी मरे लागी।बली त उहो हइये हवें, बाकिर बैल नियन बोझा ढोवे में ना।एही से ई बली कहाइल।

अब धुर्य, धुरीय आ धौरेय प बात कइल जाउ त एसे कवनो गाड़ी के धुरा के बोध होता, जेपर पूरा भार टिकल रहेला।बाकिर; 'अमरकोश' में आइल धुरा, धुरी के पर्याय यानमुख से मोढ़ा के ज्ञान होता।धुरं वहतीति धुर्यः (धुर् + यत् / य) आ 'धुरम् अर्हतीति धुरीयः' (धुर् + छ / ईय) आ धुर् + ढक् / एय = धौरेय); एह दूनो से स्पष्ट बा जे ई गाड़ी के मोढ़ा अपना कान्ह प रखिके गाड़ी खींचेला।एही तरे वोढा शब्द बा, जे 'वह्' (ढोअल) धातु में 'तृच्' (तृ / ता) प्रत्यय लगला से बनल बा।ई गाड़ी ढोएला एसे वोढ़ा कहाइल—'वहतीति'।

बैले प शिवजी सवार होलें एसे ई शांकर आ शिववाहन कहाइल।रोहिणीपति (रोहिण्याः पतिः), रोहिणीरमण (रोहिण्याः रमणः), गवेन्द्र (गोः इन्द्रः) आ गोनाथ (गोः नाथः); ई चारो शब्द गाइ के पति होखेके बोध करावताड़ें।

अब बचलें दू शब्द--गन्धमैथुन आ पुंगव।एमें पहिला से पता चलता जे गाइ के ऋतुमती होखे के गन्ध एकरा दूरे से मिल जाला आ ई मैथुनार्थ आ जाला।जटाधर के एपर विवृति बिया—"गन्धेन वासितया ऋतुमत्या गोः निघ्राणेन स्पृहा वा यस्य"।पुंगव के अर्थ त सामान्ये बा पुरुष गौ (पुमान् गौः)।बाकिर; विशेष में बा बल आ मद से भरल साँढ़।ई त श्रेष्ठता के परिचायक हइये ह, एकरा साथे वृषभ, ऋषभ जब उत्तर पद में आवेलें त श्रेष्ठत्व के बोध करावेलें।जइसे-- नरपुंगव (मानवश्रेष्ठ), नरर्षभ (नरश्रेष्ठ)।

अइसे त उपर्युक्त पर्यायन में बैल आ साँढ़ के हिगरावल नइखे।बाकिर; अमरसिंह हिगिराके साँढ़ खातिर तीन शब्द बतावताड़ें—षंड, गोपति आ इट्चर।एमें पहिले षंड प आइल जाउ त ई शब्द 'षणु/सनु दाने' धातु में 'ड' प्रत्यय से बनल बा—'सनोतीति षण्डः'।माने; जे देला।अब का देला? पता ना।एगो अर्थ ई बुझाता जे इहे गोवंश के वृद्धि में योगदान करेला, एसे ई षंड ह।हँ; एकर षंट, शंड आ शंट; ई रूपो बतावल बाड़ें।एकरे विकसित आ प्रचलित रूप साँढ़ ह।

गोपति शब्द गोनाथ आ गवेन्द्रे लेखा बा।एसे विशेष विचारणीय नइखे बुझात।हँ; इट्चर प आइल जाउ त एमें दू शब्द बाड़ें इट् आ चर।इट् शब्द 'इष' (चाहल) धातु से बनल बा।एमें इष् + क्विप् प्रत्यय के योग बा।'क्विप्' के लोप हो गइल।पुनः 'चर्' (चरल, घूमल, गइल) धातु में 'अच्' (अ) प्रत्यय लागल आ दूनो के एकीकरण भइल त इट्चर बनल।माने; हमनी किहाँ जवन छूटा चरल, भा छूटा चरेवाला कहाला, ऊ साँढ़े खातिर प्रयोग ह।ई स्वेच्छाचारी एसे होला जे वृषोत्सर्ग के बाद धर्मविधि से एकरा के खुलल छोड़ दियाला।ई अपना मन के घूमत-चरत रहेला।

अब आइल जाउ, अमरसिंह पुरुष गोजाति के जवन वर्गीकरण कइले बाड़ें, उहो देखल जाउ। उनुका अनुसार महोक्ष (महावृषभ), बाछा के—शकृत्करि आ वत्स।जेकरा के हमनीका लयरू कहींलाजा, माने नवजात बाछा के—तर्कण।जवन कुछ बड़ हो गइल, माने तरुण होत बाछा के—दम्य आ वत्सतर।जवान बाछा के—जातोक्ष।बधिया करे योग्य बाछा—आर्षभ्य।नाथल बैल—नस्तिल आ नस्योत।जुआ सम्हारे जोग बैल—युग्य।नया-नया प्रशिक्षु बैल, जेकरा कान्ही प काठ (प्रासंग) रखल जाला आ ऊ प्रासंग ढोवे त ओकर नाम—प्रासंग्य।गाड़ी खींचेवाला बैल—शाकट।हर में जोताके खेत जोतेवाला बैल—हालिक, सैरिक।बोझ ढोवेवाला बैल—धुर्वह, धुर्य, धौरेय, धुरीण आ सधुरन्धर। खाली एके तरह के बोझा ढोवेवाला बैल (खाली गाड़ी खींचेवाला भा हर जोतेवाला)—एकधुर, एकधुरीण आ एकधुरावह।सब तरह के बोझ ढोवेवाला बै—सर्वधुरीण, सर्वधुरावह।बूढ़ा बैल के--वृद्धोक्ष आ जरद्गव।

हमनी किहाँ जब ट्रैक्टर, थ्रेसर, बोरिंग आदि वैज्ञानिक उपकरण ना रहन त एह बैलने से हर जोताउ, दँवरी होखे, रेंहट-मोट से पटवन होखे आ बैलगाड़ी प लाटिके फसलो आवे।ई किसान के बड़ धन रहन।आजुओ ई एकदमे बेकार नइखन।आजुओ ई काम करबे करेलें। आजु विज्ञान के एक-से-एक कृषि-सम्बन्धी संसाधनन के चकाचौंध में भले हमनीका गाइ-बैल के महत्त्व ना बूझींजा, बाकिर ई हमनीके माता-पिता अस सदा संरक्षक रहल बाड़ें।जइसे अब लोग अपना मेहरारू-लइका के माया-मोह में माई-बाबू के दूर क रहल बा, ओसही नयका-साधन के कारण इहो अनगराहित होत जात बाड़ें।भारतीय संस्कृति गो-वृषभ के माता-पिता के रूप में देखलस, अपना सवाँग के रूप में देखलस।अइसने भाव के कारण हमनीका सब कुछ में ईश्वर के दर्शनो करत अइलींजा— "ईशावास्यमिदं सर्वम्"।

मार्कण्डेय शारदेय
पटना

कमासुत

गाड़ी गोंडा से बढ़लि त फ़जिर होत रहे। लहोर मार बहत पुरवाई में पुरबिया एक्सप्रेस सनसनात चलत जात रहे। गनपत अंगुरी पर अनुमान लगावल शुरू कइलें- गोरखपुर आवत-आवत दूपहर हो जाई। सब कुछ ठीक रहल त साँझि से पहिले सिवान उतरि जाइबि। फिनु कप्तानगंज वाली लोकल मिल जाई त घरे पहुँचला में कवन देरी ! आजु थावे वाली माई के दूरे से प्रनाम क लेबि। कब्बो फुर्सत से नारियल-चुनरी चढ़ाइबि। लेकिन घरे पहुँचत-पहुँचत अन्हार हो जाई। लोग घाट से लवटत होई। साल भर के तिउहार अकारथ ना चलि जा, सोचि के सिहरन होखे लागल। ओफ़, सगरी गाँव त जमा हो गइल होई ! कलकतिया काका लोग त दशहरे से डेरा डालि लेला। आजुकाल्हि असमिया भाई लोग असालतन छुटिए पर चलत बाड़ें। हँ,सूरत सीरत ज़रूर बदलि दिहले बा। अब सबके भागि भरदुलवा के भाई भिखरिया जइसन थोरे बा ! आन क के गइल त बड़हन ठीकेदार बनि के आइल। बाति-बाति पर सइ टकिया निकालेला। गोनू गोंड़ के गोएड़ वाला खेत के बात चलल त सीधे कचहरी जा के दतुवन कइलसि। मार गड्डी मय खेत ख़रीद लिहलसि। कई कट्ठा में पक्का मकान बनववलसि। का मजाल कि केहू नाम ध के बोलावे ! सगरी गाँव अब बाबूए बोलेला। महावीरी अखाड़ा होखे चाहें ईमाम साहेब के तज़िया, हुम्मच के पाँच नमरी चंदा देला। समाज में साख आ इलाक़ा में धाक अइसहीं थोरे बनेला ! बीसन लइकन के ठीकेदारी में लगा दिहले बा। जब गाँवें आवेला त दुआरे मजमा लागि जाला। सब भागि के खेल ह भाई ! एगो हमार पितिया रहलें, सगरी ज़िनिगी कलकत्ता जूट मिल में खटत बितल। लेकिन कुछ ना कइलें। लोग सहिए कहेला, 'कलकत्ता के कमाई, जूता-छाता में गँवाई, सब दिन ताला लटकल, हाय रे चटकल.!' अकेले पंजाब-लुधियाना केतना आड़ी ? कबो-कभार गाँव-जवार जाए परे तो आफ़त आ जाला। रेलगाड़ी के डिब्बा के कहो छतो पर भी गोड़ राखे के ज़गहा ना मिलेला। जो रे ज़माना ! बाबूजी पूरा ज़िनिगी माटी के बर्तन बनावत रहि गइलें। माई घूमि-घूमि के बेंचते रहि गइलि। जाँता पर गेंहू पिसत किसमतिया सहिए गावति रहे- 'रेलिया ना बैरी, जहजिया ना बैरी, से पेटवे बैरी ना, हमरे पिया के पेठावे, से पेटवे बैरी ना।' किसमतिया के नाम आवते शरीर में सुरसुरी समा गइल। होली हाहाकार मचा के चलि गइल रहे। हाकिम लोग छुट्टी ना दिहल। भला, ई लोग चइत के चीत्कार के का बुझी कि 'ए रामा गोरे-गोरे बहियाँ में हरिहर चूड़िया ए रामा, लिलरा पर.., लिलरा पर इंगुरा के बुनवाँ ए रामा, लिलरा पर'.., का होखेला? जा हो टाइम बाबू, तू ठीक ना कइलऽ। मर्दे छुट्टी के दरखास देख अइसन भड़कल जइसे सात दिन के भुखाइल साँढ़ लाल छाता देखि के फुरना-फुरना के मारे परेला। किसमतिया के सूरत देखले साल लागे भर हो गइल। भले ऊ साँवर बिया आ पियरी माटी से मुड़ी मिसेले लेकिन साज-सिगार के साथे ललकी टिकुली साटि के जब बाहर निकलेले त देखनिहार के धरनिहार लागि जालें। पता ना अब कइसन भइलि होई ? धिया-पुता के कर-कपड़ा ख़रीदले होई कि ना ? मननीं कि मनिया भीतरे भीतर कुहुक-कुहुक के रहि जाउ, लेकिन नेमिया ना मानी। मइया के माथा खा जाई। अड़ोस-पड़ोस के बच्चन के नया कपड़ा में देखि के भारी उधम मचाई। आवत समय बाबूजी के फ़ाटल धोती देखि करेजा फाटि गइल रहे। आन्हर माई भले आपन लूगा ना देखि सके लेकिन पेवन पर पट्टीदार थोरे चुप रही ? आ..अब छठ जइसन परब पर किसमतिया के देह पर एगो नया वस्त्र ना भइल त कइसे बेचारी घाटे जाई ? कइसे कोशी भरी, कइसे अरघ देई ? सत्तर सवाल मगज़ मथे लागल। का करसु गनपत ? माई के फाटल लुगरी देखें कि बाबू के पगड़ी ? एन्ने तोपाता त ओन्ने उघार हो जाता। पता ना ई तीज-तेवहार के बनावल ? धत, परब त ग़रीब के पोल खोल के ध देला ! इयाद बा, गवना बीतले पाँच साल हो गइल रहे। तब ले बेचारी के गोद ना भरल रहे। सगरी देवी-देवता पूजि आइलि रहे। एही से उदास रहति रहे। उहो कम जतन ना कइलें। भोरे से ले के भैंसही ले आ पांडेपरसा से ले के धरमपरसा ले सगरी ऊंच-खाल गोड़ लागि लिहलें। लेकिन कहाँ कुछ भइल ! एक दिन मुसहरी के मुन्ना मिसिर कवनो काम से घरे अइलें। बेचारी गोड़ छान लिहलसि आ लागलि छ-छ पाँती रोवे। बाबा बड़ी मयगर मनई रहनीं। उहें के कहला पर किसमतिया मय रात छठ माई के घाट अगोरलसि आ डाँड़ भर पानी में खड़ा रहलि। अगिला साल जब घाटे गइलि त गोदी में मनिया खेलत रहे। दुइए साल बाद नेमिया के जनम भइल। तबसे हर साल छठ करेले।

बड़ी ख़ुशी भइल जब पुरबिया सही समय पर गोरखपुर आ पहुँचलि। इहाँ गाड़ी धोवात-पोंछात रहे त घण्टा भर रुकल मज़बूरी रहे। ई बहुत अखरल। आरे, एक दिन नाहिए धोवाइत-पोंछाइत त का बनि-बिगड़ि जाइत ! उहो त तीन दिन से नहइले नइखन। टिशन पर देखलें, एगो माई-बेटी गावत रहे लोग- केरवा जे फरेला घवद से ओई पर सुग्गा मेंड़रास, सुगवा के मरबो धेनुख से सुग्गा गिरे मुरुछाय..! दू साल पर ई मिसरी के डली लागल आवाज़ कान में परल रहे। लागल कि माथ पर डाला लिहले ऊ घाटे जा रहल बाड़ें आ पीछे-पीछे किसमतिया गावत चलत बिया। बोला के दस रुपिया दिहलें। अनघा ख़ुशी

मिलल। चिरई-चुरूंग रहितें त उड़ि के घरे चलि देतें। लेकिन इहाँ मज़बूरी साथे चलति रहे। ओन्ने गोसाईं गाँव में किसमतिया पियरी माटी से घर-दुआर लिप-पोत के बहुत सुंदर बना दिहले रहे। आजु भोरे से मुंडेर पर कागा बोलत रहे। मनिया बोललसि- माई, लागत बा बाबूजी आ रहल बाड़ें। मइया छठ परब भूखल ना रहिती त कुछ उल्टा-पुल्टा बोलि दिहले रहिति। ए से मने-मन कहली- कमासुत का आवे के रहित त अब ले आ ना गइल रहितें ! ई मरद जाति के का भरोसा ! कहिहें पूरब आ जइहें पछिम। अब हमहीं जानत बानीं कि बीतल दस दिन कइसे गुजरल बा ? भाग-भाग के चँवर से कचटी माटी ले अइनीं। सान-सुन के चाक पर चढ़वनीं। फिनु लगनीं दीया बनावे। पाँच दिन त बनावे-सुखावे में निकलि गइल। आसमान पर बादर छावत रहल त करेजा मुँह के आ जात रहल। ग़नीमत कहीं कि धूप खिलल रहे आ सगरे दीया सूख गइल। फिनु घूम-घूम के लकड़ी-काठी की जोगाड़ कइनीं। आँवाँ में आगि बोझि अगिनी माई के गोड़ लगनीं- हे माई, ई दीया हमरे बच्चन के आहार ह। एही पर छठ-दीवाली सब टिकल बा। बच्चन के कपड़ा आ सास-ससुर के दवाइयो। मइया, भवसागर में नाव फँसल बा, बेड़ा पार लगा दिहऽ ! किसमतिया अपने कमासुत के मय रात कोसत रहलि आ आँवाँ अगोरत रहलि। भोरे-भोरे सगरी सामान पाकि कर तइयार रहे। राख-पतवार हटवलसि त लाल-टेस दीया देखि निहाल हो गइलि। रतजगा से लाल भइल आँखिन के पीरा छूमंतर हो गइल। सैकड़न दीया मुस्कराए लगलें। माटी के हाथी-घोड़ा दउरे के तइयार रहलें। घुघुर-घाँटी बाजल चाहत रहलें। सिलवट-लोढ़ा, जाँता, बैलगाड़ी आ दहीवाली गुज़रिया सब निखर आइल रहे। सिपाही जी सोटा मारे के तइयार खड़ा रहलें। लक्ष्मीजी के मूरति त देखते बनत रहे ! गनेशजी आशीष देबे खातिर हाथ उठवले बइठल रहलें। रंग भरते रूप निखरि आइल। किसमतिया अंगुरी पर अनुमान लगवलसि- अधवे बिका गइल त दीवाली हो जाई। फिनु छठ में त भारी ख़र्च होई। घर-भर के कपड़ा चाहीं। सास दमा के रोगी रहली। जाड़ शुरू होते हँफनी बढ़ि जात रहे। बाबूजी के दवाइयो ख़तम हो गइल रहे। बैद जी बिना रोकड़ा लिहले एक टुकड़ा हिंगो ना दिहें। बिना नया कपड़ा परब कइसे करबि ? नइहर से नेह-नाता माई-बाबू के जिनगिए ले रहल। युग बीत गइल, भाई-भउजाई कबो खोज-ख़बर ना लिहलें। सब दार-मदार ए दीया-खेलवने पर रहे। तब्बे नेमिया सिपाही पर लट्टू हो गइल। मनिया इशारतन जाँता मांगे लागलि। लेकिन माई मुकर गइलि। सवाल बोहनी के रहे ए से बचवन के समझा-बुझा के सउदा लिहले बजारे चलि दिहली।

आजु बड़ी चहल-पहल रहे। बाज़ार गाहकन से पटल रहे। ऊ सउदा सजा के रामजी के नाम ले गाहक के इंतज़ार करे लगली। अगल-बग़ल दुकानन के भरमार रहे। पटाखा की दुकान पर भारी भीड़ रहे। लरिका बिना कुछ लिहले हटेलें कहाँ? रॉकेट आ रेलगाड़ी के भारी मांग रहे। आजु सोहना हलुवाई के चल निकलल रहे। ऊ किसिम-किसिम के मिठाई सजवले बइठल रहल। मिठाइन पर चाँनी के वरक़ ख़ूब चमकत रहे। देखते मुँह में पानी आ जात रहे। मन करे कि एकाध टुकड़ा हाथ लागे त सीधे मुँह के हवाले ! लेकिन इहाँ त बचपने से डेरवावल गइल रहे- बाबू, पूजा के पहिले एन्ने -ओन्ने कइलऽ त देवी-देवता नाराज़ हो जइहें फिनु त मुँह टेढ़ होखे में देरी ना लागी ! बाप रे, तीन आदमी त तउलत रहलें। दू आदमी पइसा गिने में लागल रहे। अगरबत्ती-मोमबत्ती बेंचत बहरना चिला-चिला के गाहक बोलावत रहे। सबसे बीस त बिदेसिया निकलल। बंदा कंबल ओढ़ि के घीउ पिए में माहिर उस्ताद रहे। बालू पेर के तेल चुआवल ख़ूब जानत रहे। तीन-चार संघतिया संग पाँच दिन से ग़ायब रहे। आज आइल त ग़ज़बे लीला देखवलसि। चार चौकी जोड़ि के दरी बिछवलसि आ जब माल सजवलसि त अँखिए चोन्हरिया गइल। रंग-बिरंग के दीया राह चलत लोगन के ज़बरन खींचे लागल। सस्ता आ सोनहुला दीया देखि मय बाज़ार टूटि परल। साँझ होत-होत बिदेसिया राजा बन गइल। सब कुछ बिक गइल। दस लगवलसि, पचास कमइलसि। भोला-भाला गँवई प्लास्टिक के चाइनीज दीयन पर टूटि परलें। प्लास्टिक के लच्छिमी -गनेश ख़ूब बिकइलें। माटी की मूरत के मोल न रहल। किसमतिया टकटकी लगा के ताकते रहि गइलि। बमुश्किल पचास-साठ के सउदा उठल। कपार ठोक लिहलसि बेचारी- कइसन ज़माना आ गइल ! रिमोट वाली रेलगाड़ी के सामने बैलगाड़ी मात खा गइल। दही वाली गुज़रिया राह निहारते रहि गइलि आ आँखि मटकावत जिस वाली जापानी गुड़िया माथे चढ़ि गइलि ! कलजुगी कारखाना जीत गइल, हाथ के हुनर हार गइल। किसमतिया जब लौटलि त एक पहर राति ढलि चुकलि रहे।

अन्हरिया के गुदगुदावत रंग-बिरंगा झालर जब झिलमिलाइल त लगल, दीवाली आ गइल। मिठाई बँटे लागल। पटाखा फूटे लागल। सूतल लरिकन के जगाके उहो पाँच गो दीया जरा दिहलसि। दउरि के दू गो देवता लो के पास, दू गो सास-ससुर के पास आ ए गो आंगन में रखि आइलि। बताशा के गंध नथुनन में परते नेमिया सतर्क हो गइल। जानत रहे, चूक भइल त मनिया बाज़ी मार लेई। एन्ने मइया आँखि बन्न कइले देवता गोहरावत रहे, ओन्ने टिमटिमात दीया अपनी औक़ात के आख़िरी लड़ाई लड़त रहे। आँखि खुलल त देखलसि, लरिका बताशा लिहले सूति गइल रहलें। राति गहिरात रहे। किसमतिया आकाश ताकति रहे। रहि-रहि के गनपत के इयाद आवत रहे। ओफ़, साथी साथ होखे त दर्द शायद कम हो जाला ! सतहवा सात बाँस ऊपर उठल त आँखि लागल। ई सोचि के सूतलि कि काल्ह गाँवें-गाँव घूमि-घूमि के सउदा बेंचबि। आख़िर टरला से परब त ना टरी ? छठवें दिन छठ रहे।

सिवान आवत-आवत पुरबिया घण्टा भर लेट हो गइलि। कप्तानगंज वाली लोकल निकलि गइल रहे। गनपत भारी पेंच में फँसि गइलें। करें त का करें ? टिशन से बाहर अइलें। सामने नीरव सन्नाटा पसरल रहे। मय मुसाफ़िर व्याकुल भइल रहलें। तब्बे ए गो छोटकी गाड़ी आइलि । लोग माटा की तरे चढ़ि गइल आ गाड़ी चले के इंतज़ार करे लागल। गनपतो छत पर सवार हो गइलें। लेकिन हाय रे नसीबा, गाड़ी जा ना सकलि। अलबत्ता ड्राइवर-खलासी ग़ायब ज़रूर हो गइलें। गनपत का लागल कि मूर्छा के गिर जइहें। अब त घाटे जाए के समयो हो गइल रहे। तब्बे बगल गाँव से लाउडस्पीकर पर गीत बजल- काँच ही बाँस के बहंगिया, बहंगी लचकत जाव...होईं ना ए भैयाजी सहइया, बहंगी घाटे पहुँचाय...! बेटा-बेटी के चेहरा इयाद आइल। ख़ुद के रोकि ना सकलें आ सुबुक-सुबुक के रोवे लगलें। का करीं, सब कइल-धइल पर पानी फिर गइल। कतना जतन से पाई-पाई जोड़ कर बच्चन ख़ातिर कपड़ा-लता लिहले रहलें। बाबूजी के मरदानी झोरी में परल रहे। माई आ किसमतिया के साड़ी-सवाखन सब रखले रहि गइल। ओफ़, जइसे पुरबिया लेट भइलि वोइसे लोकलियो लेट हो जाइत त का बनि-बिगड़ि जाइत ! अब कौन मुँह ले के घरे जाइबि ? सर-समाज का कही ? एक मन कइलसि कि लुधियने लवटि जाईं, तब्बे माई के पथराइल आँखि आँखिन में नाच गइलि। आंगन उदास बइठलि घरनी छन-छन के इयाद आवे लगली। अब बइठल भारी हो गइल। हिम्मत जुटवलें आ चलि दिहलें।

सिवान से सरसर आवत-आवत तिनजोड़िया उगि आइल। पहिली साँझि के अन्हरिया ख़तम भइलि त राह चलल आसान हो गइल। आगे पाँतर रास्ता पड़त रहे। छिनतइयो के डर रहे त बजरंग बली के सुमिरन कइलें आ चाल बढ़ा दिहलें। गनपत अनुमान लगवलें, मटिहानी के बाद मीरगंज आवत-आवत शुकवा उग जाई। उहाँ से घाटी-बाढ़ी ढाई कोस बाद थावे आ जाई। थावे के नाम आवते भवानी जी के भय समा गइल। इयाद आइल, गोरखपुर में कहले रहुईं- थावे वाली माई के आजु दूरे से प्रणाम क लेबि। अब भुगतऽ बेटा। कहीं देवी-देवता से अइसन खेलवाड़ कइल जाला ? अब कवनो उपाय ना रहे त भर पेंड़ा किरिया खात बढ़लें- अबकी पार लगा दऽ मइया, ज़िनिगी भर शीश नवावत रहबि। ग़नीमत रहल कि राह में चोर-बनोर ना मिललें आ भागत-भुगत लछवार पार क गइलें। तब्बे तीन बजिया सिटी मरलसि। मने पहर भर राति अउर रहि गइल रहे। एक बेर फिनु ऊ हिम्मत कइलें आ चाल बढ़ा दिहलें।

फ़जिर होत रहल। चिरई-चुरुंग चहचहाए लागल रहलें। लोग डाला लिहले घाटे जात रहे। गनपत थावे वाली माई के देवास अगोरे बइठल रहलें आ पछतात रहलें। ई त इहे भइल कि किनारे आ के नाइ भँवर जाल में जकड़ि गइल ! अगल-बग़ल केहू ना रहे। तब्बे केहू आदमी के चलला के आहट आइल। पीछे मुड़ के देखलें त लागल, केहू आदमी सफ़ेद परिधान पहिनले जंगल में खड़ा बा आ उनुके इशारा से बोलावत बा। ऊ सम्मोहित जइसन चलत गइलें। आदमी आगे बढ़त गइल। कुछ दूर चलला के बाद जंगल समाप्त हो गइल। सामने सड़क रहे। ए गो नौजवान पसेना से लथपथ आपन टेम्पू स्टार्ट करत रहलें। गनपत के देखते दउरि के अइलें आ बोललें- भाई, तनी धक्का दे दऽ। सवारी बइठल बाड़ी, जल्दी ले जाए के बा। ऊ पीछे मुड़ के देखलें त सफ़ेद परिधान वाला सज्जन जा चुकल रहलें। ऊ बग़ल में आपन झोरा रखलें आ धक्का देबे लगलें। संजोग कहीं कि एकाधे धक्का में टेम्पू स्टार्ट हो गइल। तब ऊ नौजवान ख़ुश हो के कहलें-भाई, अगर एही रास्ते जाए के होखे त बग़ल में बइठि जा। पथराइल गोड़न का आराम मिलल तो नीनि आवे लागल। ड्राइवर चेतवलें- भाई, साइड के सवारी सुतेला ना आ रफ़्तार बढ़ा दिहलें।

गनपत अब गाँव में रहलें। सीधे भाग के घाटे पहुँचलें। भारी भीरि रहे। परबइतिन लोग पानी में खड़ा रहे आ सुरुज महाराज के आँखि खोलला के बाट जोहत रहे। लरिका किनारहीं मिलि गइलें। बाबूजी के देखलें त उछलि के कंधा पर चढ़ि गइलें। नेमिया इशारा से बतवलसि- बाबू, सामने ऊ रहलि माई..! गनपत देखलें, किसमतिया डाँड़ भर पानी में सुपा लिहले खाड़ रहे। अब रहल ना गइल। लरिकन के कान्ह पर बइठवलहीं उहो पानी में उतरि गइलें। किनारे खड़ा लोग तमाशा देखे लागल। भरदुलवा चुटकी लिहलसि, लागत बा कि कमासुत आ गइलें ! गनपत देखलें, सामने सतरह साल पुरान बिअहुती साड़ी पहिनले किसमतिया खाढ़ रहे आ आँखि बंद कइले कहत जात रहे - हे

दीनानाथ, अब हम तहसे का कहीं? हमरे सुहाग के रक्षा करिहऽ। हम जानत बानीं कि ऊ काहें ना अइलें हँ ? सगरी गाँव त हँसबे करेला कि ई कमासुत निकम्मा निकल गइल। लेकिन हम जानत बानीं , ऊ काहे ना अइलें हँ? पइसा के प्रबंध ना भइल होई एही से लाजे ना अइलें हँ..! फिनु ओकर आँखि बरसे लागल। गनपत के आँखि अब भला कइसे रुकित ? उहो ज़ार-बेज़ार हो गइलें। सिसकी बन्हा गइल। आवाज़ सुन किसमतिया आँखि खोललसि। सामने कमासुत खड़ा रहलें। कान्ह पर लरिका सवार। किनारे बाबू-माई बइठल रहलें। लोग टकटकी लगवले ताकत रहे। किसमतिया के अचके विश्वास ना भइल। त मनिया बोललसि- माई, बाबूजी..! किसमतिया ख़ुद में लवटलि। सामने साजन खड़ा रहलें। निर्जल व्रत से लरजल शरीर में सिहरन होखे लागल। काँपत ओठन पर ज़माना से ठहरल मुस्कान लवटे लागल। लोग देखल, ऐन मौक़ा पर भगवान भास्करो आँखि खोल दिहले रहलें...!

◆ ◆ ◆

रमेश चंद्र

(मूल कहानी - हिन्दी)

भोजपुरी अनुवाद - संगीत सुभाष,

प्रधान सम्पादक - "सिरिजन", भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका।

दखिनी पवन सखी ! बहुते सतावेला

लवंग - लताके तन छू- छू के कँपावेला।
दखिनी पवन सखी! बहुते सतावेला।।

भँवरा-गुंजार, कू- कू कोइलि के जोर बा
सुगना विभोर, टेरे आँखिन के शोर बा
सखी रे! वसंत बिरहिनिए के तावेला।

काम- चाह रोवेली बटोही के बहुरिया
तितली सुगनवाँ पऽ गावेली झुमरिया
मोर बैठि जोर दे के डार के झुकावेला।

अमवाँ, अशोकवा के नये का पलउवा
फूलल पलाश- सोना- सोना गमकउवा
चीरि दी करेज काम नोंहवा चुभावेला।

लता, बेलि के मुकुट पहिने अतनुवाँ
घुरुमे गुलाब पऽ भँवरा गुंजनुवाँ
अनगिन तीरवा तूनीर में सजावेला।

जूही आ चमेली गंध गमकावे जोर से
मनवाँ मुअलको में मोह लागे झोर के
जुवती- जवनका के बन्धु ई कहावेला।

◆ ◆ ◆

हरेराम त्रिपाठी 'चेतन'

भोला नाथ गहमरी : एगो व्यक्ति ना एगो विचार आ एगो युगबोध

प्रकृति क अलगे-अलगे रूप में अनुभूति भइल ओकरा के मिठास भरल भासा में बखान कइल अइसन पेंच वाला काम ह कि एकरा के उहे करि सकेला जेकरा के प्रकृति के विशेष वरदान मिलल होई। भोजपुरी गीतन क सम्राट के रूप में मशहूर भोला नाथ "गहमरी" जी के सभे लोक धुन के बारे में पूरा पूरा जानकारी रहे। इहे कारन रहे कि ऊ लुप्त हो रहल भोजपुरी गीतन के धुनन के नया - नया गीत रचके फेर से जीवित करे क भगीरथ प्रयास कइलन। उनकरे गीतन में जवन प्रवाह , बोधगम्यता आ अभिव्यक्ति लउकेला ऊ आउर केहू के गीत में शायद ही नजर आ सकेला। भोजपुरी साहित्य में गहमरी जी क समय के "गहमरी युग" निर्विवाद रूप से मानल जा सकेला। उनकर गीत पढ़ के आ सुन के सभई के महसूस हो जाला कि उनकर लिखल गीत भोजपुरी दुनिया क तहे दिल से निकले वाली सभे भावना के अभिव्यक्ति ह। ई पूरे भरोसे से कहल जा सकेला कि स्व. महेन्दर मीसिर जी के बाद वाली पीढ़ी में भोला नाथ जी आपन अलगे पहिचान बनावे में कामयाब हो गइलें जेकरे चलते उनकर गीत आम मनइ क गीत हो गइल। उनकरे गीत क एगो बड़हन खासमखास बात रहल कि उनकरे हर गीत बोधगम्यता के संगे संगे रिद्म से भी जुडल बा। एकरे चलते कवनो गवइया बिना बतवले आ बिना समझवले उनकरे गीत के आसानी से स्वर दे देत रहन जा। इहे कारन रहे कि इनकर गीत गा गाके बहुते लोग के रोजी रोटी चलत रहे। पटना , गोरखपुर , लखनऊ, इलाहाबाद, वाराणसी आ रीवाँ तक के आकाशवाणी कलाकार के माध्यम से कम से कम तीन सौ गीतन क लुत्फ आम श्रोता उठवलें। उनकरे कलम से पूरबी , कहँरवा , झूमर , खेमटा , बिदेसिया , होली , चैता , कजली , जतसार , वियाह गीत आ सोहर के संगे देवी - गीत तक निकलल जेवन मोटा मोटी सभे हिट गीत हो गइल।

कवि के साथे साथ उहाँ के कला के भी पारखी रहलीं। उहाँ के कबो एह बात से परहेज ना मनलीं कि उनकर गीत के उँचाई तक पहुँचावे में गायक लोगन क भी हाथ रहे। स्व. मोहम्मद खलील , ललन सिह "गहमरी" , ठाकुर चन्द्र मोहन सिह , इलाहाबाद क उमेश चन्द कनौजिया , पूर्वान्चल कऽ पुरुषोत्तम सिह , कामेश्वर सिह , आनन्द सिह , सरोज बाला , संज्ञा तिवारी , सरिता शिवम , निशा श्रीवास्तव , अर्चना श्रीवास्तव , गायत्री पाण्डेय , कनकलता अउर मधुबाला जइसन गवैया लोगन के अपने गीतन के सुरीली आवाज से सजावे सवारे खातिर गहमरी जी सब समय खुले मन से आभार मानत रहलीं। भोजपुरी गीत सम्राट गहमरी जी क जीवन में संघर्ष के सामना सब समय करे पड़ल। बिना संघर्ष के केहू क व्यक्तित्व में निखार आ चमक आई ना सके। उनकर इहे संघर्ष ताउम्र उनका में शक्ति के संचार कइलस। उन्नीस बरस क उमिर में उनके माई बाबूजी से हजारों मील दूरे नौकरी करे पड़ल। विषम परिस्थित में भी छल कपट से दूर रहिके केहू के भी मोह लेबेवाला गुन उनके पास रहे। लोक जीवनवाली संस्कृति उनके रोम रोम में रचल बसल रहे। इहो उनकर खास गुन रहे जवना कारन कवनो कवि सम्मेलन उनके बिना अधूरा लागे। कुछ समय बदे सिनेमा क रंगीन दुनिया से जुड़े के मौका मिलल रहे। अपने गीतन में चटपटा रंग दिहले के बावजूद भी साहित्य के दामन से हरमेश जुड़ल रह गइलें।भोजपुरी भासा में उनकरा नियर शायद ही केहू गीत संकलन दे पावल। भोजपुरी साहित्य क श्रीवृद्धि में उनकर सबसे बड़हन योगदान रहे जेकरा कारन उनके सब समय इयाद कइल जाई। भोजपुरी क महापंडित डा. कृष्णदेव उपाधाय आ भोजपुरी क मशहूर रचनाकार एवम् छंद विद्या क मर्मज्ञ कविवर चन्द्र शेखर जी क सलाह आ सहयोग खातिर उहाँ के तहे दिल से आभार प्रकट कइले बानीं।

वोइसे गीतकार भोला नाथ "गहमरी" जी प्रकृति श्रृंगार आ विरह क मूल रचनाकार क रूप में अपना के स्थापित करे में सफल भइल बानीं। श्रृंगारिक गीतन में उनकर आध्यात्म असीमित उँचाई तक झंडा फहरावें में सफल भइल बा।

"कवने सुगना पर गोरी तू लुभा गइलू हो।"

गहमरी जी क गीत में कही फाँक ना मिले जे केहू कवनो मशविरा देबे के सोच सके। उनकर एगो विरह के गीत बतौर नमूना देखीं जा :--

"मोरा बिहरेला जिया , पिया तोहरे बिना।

जबसे बँधी तोसे नेहिया के डोरी ,

बिरहा जगावे दरद चोरी - चोरी ,

जियरा जरेला जइसे जरेला जिया।

मोरा बिहरेला .....।

गहमरी जी क लिखल बिरह गीत में उहाँ क विशेष प्रतिभा क साफ झलक मिलेला। प्रेयसी क आपन प्रेमी के नेह के बारे में जवन ख्याल उपजेला ओकर साफ झलक गहमरी जी क गीतन में दिखेला--

महुआ के फूल झरे पलकन के छहिया ,
सारी रात महके बलमू तोहरी नेहिया।

गहमरी जी क लिखल एगो खेमटा में खेत में रोपनी करे वाली मजदूरिन जे आपन गोदी के बचवा के घरे छोड़ के रोपनी करत रहे ओकर कतना नीमन बखान करत गीत लिखलेन ओके पढ़ले पे केहू महसूस कर सकेला।

बदरा बरिसे त भीजे मोरी धानी चुनरी।
हलर-हलर डोले दूधवा के काँटी ,
बूने-बूने अंगिया में चूवे सगरी।

गहमरी जी क गीत में यथार्थवाद क चित्रण जेतना सुघर तरीका से भइल बा उनकरे बेमिसाल लेखनी के कमाल कहाई---

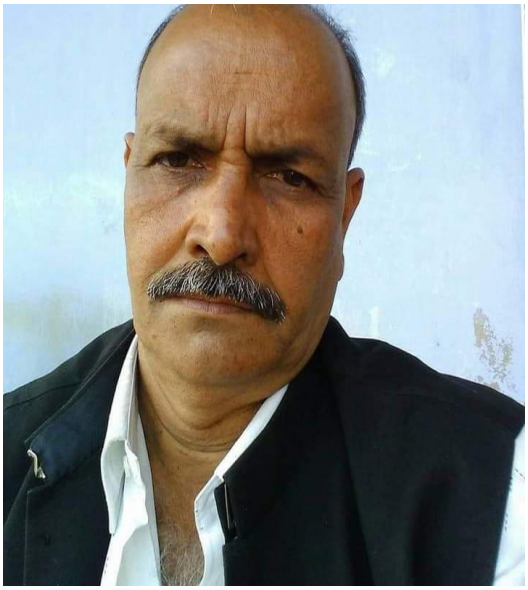

राम पुकार सिंह "पुकार" गाजीपुरी
पूर्व प्रधानाध्यापक

◆ ◆ ◆

नकबेसर कागा ले भागा (व्यंग्य)

फगुआ एगो अजबे किसिम के तेवहार ह। जसहीं घाम में गर्मी आवेला कि सभका चेहरा प ललाई छा जाला। सूखलो काठ में पचखी फूटे लागेला। आम के मोंजर से रस चुए लागेला। मौसम के बदलाव के सबसे बड़ असर नायिका प पड़ेला। उनकर लाल - लाल ओठ से ललाई बरसे लागेला। बेचारी बेहाल हो के...."लाली - लाली ओठवा से बरसेला ललइया हो कि रस चुवेला , जइसे अमवाँ के मोंजरा से रस चुवेला ..."गीत गावे लागेली।

ई फागुन बड़ा खुरफाती महीना ह। बेचारे बुढ़ऊ भर जाड़ा कउड़ा त दबकल रहन त केहू झुठहूँ खोज खबर ना लेलस। बाकि फागुन आवते उनका के देख के गाँव भ के मेहरारु , " भर फागुन बुढ़ऊ देवर लगिहें .. भर फागुन .... गा - गा उनकर राह चलल दुलम क देवेली।

गजबे ह फागुन आ गजबे ह एकर तासीर! अब हई देखीं भोरे - भोरे उठऽतानीं त घरघुमन भउजी घरघुमन भइया के गरियावऽतारी, "सइयाँ अभागा ना जागा , नकबेसर कागा ले भागा"...। एने लीलू भउजी के लीलू भइया से दोसरे सिकाइत बा। उनकर टिकुली भुला गइल बा ।उनका से कह रहल बाड़ी , " टिकुली भुलइली हमार , आरे लाला टिकुली भुलइली हमार"। बसावन बो भउजी के अपना ननद से एगो अलगे ओरहन बा। उनकर ननद उनकर कंगन हेरा देले बाड़ी। अब ऊ अपना ननद के अलगे ओद - बाद कइले बाड़ी..... "ननदो बोलऽ ना, कहवाँ हेरवलू कंगनवाँ, अंगना हेरवलू ओसरवा हेरवलू , किया हेरवलू दुआरवा.... ननदो बोल ना"।

हम का करीं? छोट - मोट लेखक ठहरनीं। अइसे त चितन करीला। बाकिर ई सब खेल देख के चिंता में पड़ जाइला। फगुआ में, " बाबू कुँवर सिंह तेगवा बहादुर, बंगला में उड़ेला अबीर", " बाबा हरिहर नाथ, सोनपुर में होली खेले", चाहे ,"सदा आनंद रहे एही द्वारे , मोहन खेले होरी हो", गीत से गली- गली हड़होर मचे त कवनो नया बात नइखे। बाकिर होली के गीत में कबो टिकुली, कबो नथुनी, कबो कंगन हेराला त ई चिंता के बिसय बा। आउर त आउर ले दे के सब कसर कागा पूरा क देवेला। बताईं ओकरा औरतन से कतना डाह बा कि नकबेसर लेके भाग जाला।

हई इश्वरी माया देखीं- फगुआ के गीत में पुरुष के अंगूठी , घड़ी भा चैन कबो ना हेराला। ऊ लोग एह आफत से एकदम सुरक्षित बाड़न। ओह लोगन के ना कवनो चीज भुलाला आ ना गीतकार लोग के कलम चलावे के मौका मिलेला। ई फगुआ एकदम पछपाती ह। होली गीतन के बहाने खाली पुरुसन के दोसरा के चीज हेरइला प एँड़ी अलगा - अलगा के गीत गावे के आ उसकी - बिसुकी चलावे के मवका देवे ला। एही से होली से अगुता के औरत लोग गावेला, " फागुन मोरा लेखा बयरी ऐ ननदो, फागुन मोरा लेखा बयरी.....

कबो - कबो हमरा बुझाला कि एह बिसय प गहन चितन करे के चाहीं। भोजपुरी के बिद्वानन के बोला के बिचार- बिमरस करवावे के चाहीं। भाई ई पक्षपात कब ले चली कि खाली मेहरारुए के चीज हेराई आ मरद के ना हेराई? भोजपुरी विभाग के बिभागाध्यक्ष जयकांत सिंह जय (लंगट सिंह कालेज मुजफ्फरपुर) , दिवाकर पाण्डेय भोजपुरी बिभागाध्यक्ष(बीर कुँअर सिंह विश्वविधालय, आरा) गुरुचरण सिंह (प्राचार्य जैन कवलेज , बिकरमगंज) एह सभ लोगन के एह बिसय प नीमन से शोध करे के चाहीं। फागुन में ई कुल्ह खेला औरते के साथे काहें होला? पुरुष के साथे काहें ना होला?

चलीं कारन कुछुओ होखे, लड़िकवा के बहाने लरकोरिया जियेले। एही बहाने भोजपुरी में हमनीं के नीमन- नीमन होली गीत त सुने के मिलेला।

जय फगुआ। जय फगुआ के गीत।

◆ ◆ ◆

बिनोद सिंह
गहरवार, राँची

घेराइल नाव आफतरा में

शिव टहल काका गाँव के भला आदमी में आवेलन। उठन-बइठन उनुकर अब केहू लागे जमाना के हिसाब से होला। पहिले ओला मिलत के बात नइखे रह गइल बा गाँव-घर में, कि केहू दबावत-सतावत नइखे। चारे हप्ता बीतल भइल बा। बासरोपन के लदफदाइल भँइस लाख रोपेआ में बिकित, खूँटा से। केहू गली सून पाके मूस के दवाई नाद में डाल दिहल। जहर मिलल गवत खाते तनी रह में भँइस चकरिया के गिर गइल। मुँह से फेन दे दिहलस। देहात के बात रहे । डाक्टर के आवत-आवत में लाख रोपेआ के धन खूँटा से साफ हो गइल। रोअन-धोअन पर गइल बासरोपन किहाँ । एह आफत में सांत्वना देबे ओला में उहो रहे जे ई खेल कर दिहले रहे आ अब सांत्वना देबे के खेल करत रहे। अपना गमछी के खूँट से लोर पोंछ के।

एह लेके शिव टहल काका के करेजा हिल गइल रहे। बोली मुलायम होखे आ लाद में घात त बात आउर खतरनाक होला।

पंचायत के मुखिया कहलन कि एक जगे रहे के बा ई काम नीमन नइखे होत कि केहू के केहू खूँटा सून कर देता। पंचायत बइठल त जे ई काम कइले रहे सेहू पीपर के पतई लेके किरिया खा गइल। मन धुआंँ के का भइल। एगो लइका देखले रहे आ ओकरे कहल बात पर दस गो लोग बिटोराइल रहे। ओकरो बात हवा हो गइल। कि लइका जात साच ना बोलेलन सँ। बात जहाँ रहे तहेँ रह गइल। एह लेके शिव टहल काका अपना के लोग से एलाहदा कर लेलन।

शिव टहल काका के अकेले बइठल देख के एगो लइका कहलस -"आहो पहिले तूँ दस गो आदमी में बइठत रहऽ बाकि अब अकेले काहे रहे ल?" लइका के सवाल सोचे जोग रहे।

"लोग के मन साफ ना रहेला, एह से।" शिव टहल काका सहजे में कह देलन।

"त हमनियो के मन साफ ना रहत होई?" लइका फिर आपन सवाल रख देलस।

"लइका जात पर जे बिस्वास ना करी से डूब जाई, बबुआ।" शिव टहल काका ओकरा के सह देत कहलन।

" त ओह दिनवा काहे ना केहू मानल कि भँइसिया के फलना जहर देले रहन?" लइका के जिज्ञासा लपक परल शिव टहल काका पर। सच्चाई जाने खाती।

"समइया एक दिन अपना घेरा में लिही तूँ देखत रहीहऽ, पीपर के पतई लेके किरिया खाए से का भइल। तकलीफ के लोर के हाय परेला। कोर्ट में लोग गीता आ कुरान लेके साच कहेके कह के झूठ बोलेला आ बाद में भोगेला त पछतावे ला।" दूर के बात शिव टहल काका कहलन। ओकरा समझे खाती।

"अइसनो होला का?"

"हँ होला।"

लइका के उमिर पनरह साल के हो गइल रहे आ शिव टहल काका के सतर से बेशी। गाँव आ जिनिगी के नाव दूनों अपना-अपना दिशा में बढ़त रहे। बासरोपन के गोतिया टुकर अपना पक्का घर के सटले पलानी लगा देले रहन आ ओही पलानी में माल मवेशी बान्हस। जेठ के महीना के ताव अलगे रहे। सभे दूपहरिया में लुकाइल रहेला अपना अपना घर में आ ढेर लइका के जात चुपे खेले के मजा लेलन। दोसर लइका ना आइल त इयारी दू घंटा खातिर टूटले दाखिल रहेला। अइसने इयारी बचा के चार गो लइका खेलत रहसन। ईंटा के चूल्हा पर खाना बनावे के माचिस एगो बरलस। खाना बनी कहाँ से आग बेकाबू हो गइल। टुकर आ गाँव घर के लोग के जुटे में मवेशी आग के हवाले हो गइली सन। टुकर के रोवले लागे पेड़ के पतई झर जाई। सेहू ना भइल। पंछी बसेरा छोड़ देले रहीसन। केहू कहल पर गइल बासरोपन के लोर के हाय। निकल गइल पीपर के पतई लेके किरिया खाइल। टुकर के ना नदी लउकत रहे ना तालाब, घेराइल रहे जिनिगी के नाव आफतरा में।

शिव टहल काका अकेले में बइठल अबो चाहेलन लोग सुधर जाए।

◆ ◆ ◆

विद्या शंकर विद्यार्थी

रामगढ़, झारखण्ड

एन्ने बालू ओन्ने बालू

एन्ने बालू ओन्ने बालू बीचे नदिया धार
कतने बड़- बड़ मगर घुमे पानी में जबड़ा फार
कइसे जाई केहू पार?

एन्ने देखे ओन्ने देखे देखे आँख पसार
सेतु कहीं ना रहे रहे जइसे पब्लिक - सरकार
दिखल इक नाव बिना पतवार।

व्यवस्था में छेद के जइसन पेनीं में बड़ छेद
कतना पानी उदही नाविक बूझि परे ना भेद
चक्र जस नाचे लगल कपार।

सपना देखलावे सौदागर भरि जाई सब चेट
अभिमन्यु सतवाँ में फँसलें इहाँ त पहिले गेट
भुलाइल बुधि बल ज्ञान विचार।

रहे खाकपति भइल खरबपति कइसे रातो रात
गाड़ी बंगला खेत बगइचा पा गइलसि सौगात
भइल मलिकारो के मलिकार।

कौल रहे रस्ता देबे के साफ दाफ चमकील
मारि झपट्टा ले भागल हथवो के घाती चील
सगरे कहल सुनल बेकार
लड़ाई लड़े परी बरियार।

◆ ◆ ◆

संगीत सुभाष
सम्पादक, सिरिजन

हाल केकरा के अब बताईं हम

हाल केकरा के अब बताईं हम
लोर बस अँखियन में सुखाईं हम

जे परानो से बढ़िके मनले बा
आजु ओही के बहरिआईं हम

चैन नफरत में मिल रहल बाटे
प्यार के दिअना का जराईं हम

प्यार के बतियो हम करबि एक दिन
पहिले जिमदारी तऽ निभाईं हम

आजु तक सुख के स्वाद ना जनलीं
आस में जोड़ीं आ घटाईं हम

लोग बोलेला का कमी बड़ुए
कइसे पेवन के गीत गाईं हम

रामरक्षा मिश्र विमल

◆ ◆ ◆

जब जइसन तब तइसन

भोजपुरी के अमृतकाल चल रहल बा!
सभे मस्ती में झूमत-नाचत,
मातल दिख रहल बा!!
का बचवा, का जवनका, का बुढ़ऊ-
सभे उमगत,उछालि मार रहल बा।

पूरा भोजपुरी -लोक सज-धज गइल बा
आजा-बाजा-गाजा बाजि रहल बा
हाल में मंच,माइक सब फिट बा
कविराजन के बोला के
गीत-गजल के महफिल सजा दिआई,
गीताप्रेस के गमछा ओढ़ा के
हाथ में बुके आ साटिफिकट धरा के
साहित्य के प्रचंड मारतंड बनाके
इतराये खातिर छोड़ दिआई।

शंख धिपा के दागल साँढ़ मतिन
बस उन्हका आजादी मिल जाई-
हूँफत छड़पि जाए के
लहलहाइल फसल लसारत
सगरी सरेह चरत
जेकरे ना सेकरे के
सींगे पर तउल
नचाके बीग-बाग देबे के।

भरल हाटे-बाजारे
केहू के पानी उतार
अपना पगड़ी के चमका-दमका लेबे के
छाती पर दस गो
तगमा लटका लेबे के-
जेकरा लूर- लकम नइखे मालूम
ऊ आज के अमृतकाल के
अमृतपूत नइखे कहा सकत!

'आठवीं अनुसूची' के मंत्रजाप
खूब चल रहल बा
राजा जी के करिदन के बोलाके
पगड़ी पेन्हावल जा रहल बा
पोल्हा के पुचकार के
बकवा लीहल जात बा-
"घबराये के काम नइखे
राजा जी के नाम पर
अठजाम चलत रहला के काम बा
एक ना एक दिन
भेंटाइये जाई
गोलकुंडा वाला हीरा।"

ई हीरा मिल जाई त का हो जाई
आ नइखे मिलल
ताले का नोकसान हो रहल बा-
जेकरा अचिको नइखे मालूम
ऊहे बेसी गला फारि-फारि
चीख-चिल्ला रहल बा।

कवि लोग आपन -आपन गवइया
चुनि लिहले बाड़न
असलील वाला लोग के छाँटि के
भजन-कीरतन,झूमर-सोहर वाला लोग के
बीछि लिहल गइल बा ।

जब से ई बात बुझा गइल बा कि
गीत-गजले में भोजपुरी
के परान बसेला
ओकनिये में ई
चमकि-दमकि सकत बिया
'विदेशिया -फिरंगिया' बिसारि के
नथुनिया पर फेर से गोली मराये लागल बा।

सम्पादक जी सभे त
सगरी के पूरा होनहगर होइबे करीले
बाकिर एजवा समझदारी तनिका
जादे बढ़ि-चढ़ि के बा
एही से उहाँ सभे के एजवा
धाकड़ विद्वानो मानिके
खूब नेम-धेम से
पूजा-पाठ हो रहल बा
आ चनन जमिके पोतल जा रहल बा ।

प्रकाशको के पूजाई में
एजवा कवनों परहेज नइखे
लिख के, टाइप करा के,
माल जल्दी से पहुँचा दीं
त हफ्ता -दस दिन में
किताब तइयार हो जाई
फेरू ले के बाँटत रहीं
टिकट साटि-साटि पठावत रहीं।

समीक्षक महोदय बइठल बानीं
कवि-लेखकन के आरती उतारे खातिर
बस चिट्ठी लिख के पेठा दीं,

भा फुरसत में फेसबुकिया दीं-
"आरे भाई अपने त भोजपुरी के
ड्राइडेन,जाॅनसन,मैथ्यू आरनाॅल्ड,
रामचंद्र शुक्ल आ नंददुलारे वाजपेयी हईं"-
फेरू देखीं ऊ रउवा के
का-का कइसे बना देत बाड़ें।
बाकिर का करेब इहें ना
लगभग सगरो इहे चल रहल बा
देखत नइखीं कहीं लिटरेरिया
त कहीं हिसटेरिया के धूम मचल बा,
फेर हमार भोजपुरी काहे पछुआव भला?
एकरा त चौक-चौराहा,हाट-बाजार ,नाच-गान
मेला-महोत्सव में मने लागेला।

इहे नूँ कि एजवा तनीं 'एकोऽहं बहुस्यामि'
जादे चलेला-
एके जाना सबकुछ होले-
कवि,कथाकार,नाटककार,
निबंधकार,समीक्षक,संपादक,
कोशकार,इतिहास-लेखक,काव्यशास्त्री,
भाषाविद-पता ना आउरो का- का?
देखते-देखत सगरी गवइया
कवि बनि जइहें
सगरी कवि गवइया
भोजपुरी भेद ना
अभेद के मानेले।

हम अइसहीं नइखी कहत
भोजपुरी के अमृतकाल चल रहल बा
अबहीं ना त फेरू कबहूँ ना!
जवन-जवन बने के बा
बन गइला के काम बा
पछुआएब त पछतायेब
छरिआएब त छूट जाएब
जब जइसन तब तइसन
ई ना बूझे से मरद कइसन??

◆ ◆ ◆

अलम

हमरा बढ़िया नइखे लागत
मुहावरा -कहावतन से
घर खलियाइल देखि।
ई रहलन हँ सनि त
बोलल -बतियावल
आसान आ असरदार
रहल ह
एकनीं के घिसते
बात बेमजा होखे लागल बिया।
बताईं ना जब घर से
आँगने गोल हो गइल
त भला ओमें
चलल टेढ़ भा सोझ का होई ?
हमरा बुझाते नइखे कि
अब सुपऊ चलनिया पर कइसे हँसिहें?
ओखरे बिला गइल त
ओमें मुड़ी कइसे पड़ी?
हँसुए हेरा गइल त
उनका बिआह में
खुरपी के गीत कइसे उठी?
हमरा बचवन के नजर से
ई सगरी चीझ-बतूस
गायब भइला से
खाली मुहावरा आ कहावते
नइखे परा रहल
हमरा बेसी चिन्ता होखे लागल बा
अपना बोली-भाषा,
समाज आ संस्कृति के
दरिद्दर भइला के
डाढ़ि छूटल बानर के
कवनों अलम ना होला ।

◆ ◆ ◆

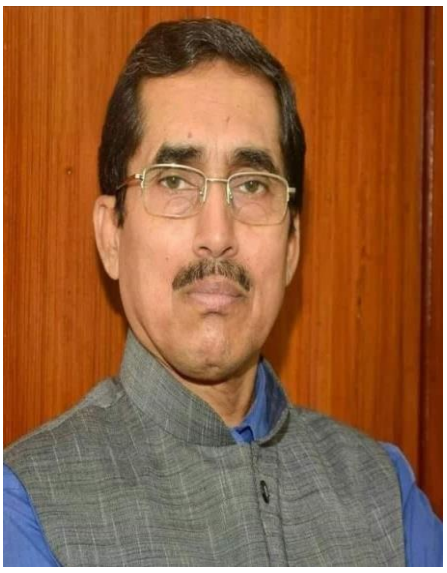

सुनील कुमार पाठक
पटना-(बिहार)

राम पढे इस्लेट में कुछ

घेंट में कुछ आ पेट में कुछ।
राम पढे इस्लेट में कुछ।

कागज पर बा गान्ही ,भीम।
लउकत बाटे डेट में कुछ।

देस भगत भा राष्ट्र सखा।
उद्यमी बाडें टेट में कुछ।

पूस आ माघ में गुटिआइल।
सूरी फागुन - जेठ में कुछ।

सेतिए - - गइलें - - जरदगव।
निकलल खग आखेट में कुछ।

दू तीरन नद्दी के हयात।
मेठ मजूर के फेट में कुछ।

◆ ◆ ◆

ना कहीं

हिया के दीअना बुताए ना कहीं।
गँवे गँवे जरे धधाए ना कहीं।

समय के चाक घुमरी लाए ना कहीं।
कि अरजलो तुहर बिलाए ना कहीं।

कि तीर , तेग रन कराए ना कहीं।
कि धर के एकता फफाए ना कहीं।

कि ढेर जोगी मठ उजारबो करे।
कि सीध गउ लुगा चबाए ना कहीं।

अगरबती लहस के लूती ना बने।
हयात आजु नीन आए ना कहीं।

◆ ◆ ◆

डॉ उदय हयात
जमशेदपुर

मत माँगीं

हरेक सवाल के रउरा जवाब मत माँगीं!
रहीं हिसाब में अब बेहिसाब मत माँगीं!!

मिली जरूर जब हक़दार रउरा बन जायेब!
तनिक सा दाद पर सँऊँसे ख़िताब मत माँगीं!!

चलन के बात बा, दिल में दरद त उठके रही!
क्षणिक मुस्कान पर रउरा गुलाब मत माँगीं!!

बताई मैकदा से कम कहाँ इ मोर अँखिया बा!
नज़र में झाँक लीं , बाकिर शराब मत माँगीं!!

कठिन हालात "अंशु "हो गइल बा जमाना के!
जमीं पर पांव रख लीं, आफताब मत माँगीं!!

◆ ◆ ◆

बस बहाना बा

खूब बेदर्द ई जमाना बा!
झूठ बोलल त बस बहाना बा!!

दर्द के भेद दर्द का खोली!बोली!
जिंदगी के इहे फसाना बा!!

फूल के पास लोग का जाई!
अजनबी प्रीत पर निशाना बा!!

दिल जवानी उदास लागेला!
घात भीतरी भइल पुराना बा!

अश्क़ दिल के पता कहाँ खोजी!
अंशु तहरो जहाँ ठिकाना बा!

◆ ◆ ◆

अनिल कुमार दूबे " अंशु "
सिवान (बिहार)

इरखा, झगड़ा भाग पराइल

इरखा, झगड़ा भाग पराइल
सन्मत जब अंगना में आइल ।

जड़ में अइसन मट्ठा पाटल
हरिहर हरिहर गाछ झुराइल ।

रासन पेन्सन पावे खतिरा
दउड़त दउड़त गोड़ खियाइल ।

दुखवा के हमरे घरवा में
कहिया से बा टीक गड़ाइल ।

महंगी के अस मार पड़ल बा
पइसो लउकऽता लरुआइल ।

अनका ला खोदल गड़हा में
अदमी मुँहकुड़िये भहराइल ।

जे ना बूझल चाल समय के
जिनगी में उहे पछुआइल ।

◆ ◆ ◆

सुरेश गुप्त
प चंपारण

ई कइसन होली आइल बा

ई कइसन होली आइल बा,
जे के देखीं बऊराइल बा,
छोड़ छाड़ के काम सजी,
सब मदिरा में अझुराइल बा,
ई कइसन होली आइल बा ॥

केहू के सुख नाली में बा,
केहू के सुख साली में बा,
केहू गोबर पोत के बोले,
बड़ा मजा त गाली में बा,
का जवान का बूढ़ कहीं,
सब के सब आगिआइल बा।
ई कइसन होली आइल बा ॥

भांग, चरस, गांजा, अफीम
आ दिन भर डी जे बाजेला,
पूड़ी पकवान के छोड़ इहाँ
सब गोश भात के दाबेला,
मरि जाला प्रहलाद के भक्ति,
बुआ के मन अगराइल बा।
ई कइसन होली आइल बा ॥

लाल रंग त वीरन के ह,
हरा रंग खुशहाली लाई,
बल पौरुष के रंग केसरिया,
असीम ज्ञान पीला से पाईं,
सब रंगन के मिला के देखीं,
मन के भेद मिटा के देखीं,
जरि जाई सब दुःख परसानी,
सम्हति में आगि बराइल बा,
ई कइसन होली आइल बा ॥

◆ ◆ ◆

सुजीत पाण्डेय
कुशीनगर

बसंत के दोहा

ऋतु बसंत सखि आ गइल,महकल दिशा दिगंत।
फाग राग अनुराग मे, डूबल धरा अनंत॥

बगिया में चंपा खिलल, कानन लाल पलास।
खेत पीत दगदग भइल, लहलह हरियर घास॥

पीपर बर टुसिया गइल, लागलि मोजर आम।
मौसम मस्त सुहावना, ना अति सीत न घाम॥

फूलन से पुहुरस चुये, मादक बहे बयार।
अंग अंग लपटाय के, लूटे भ्रमर बहार॥

ताल राग सुर फाग के, गुंज रहल पर्यंत।
लखि बसंत बउरा गयो, सज्जन साधक संत॥

◆ ◆ ◆

ऋतुराज बसंत (सरसी छंद)

ठंढ़ा पाला बीत गइल सखि, बीतल ऋतु हेमंत।
रीति प्रीति संगीत लेइके, आइल मास बसंत॥

कानन में कचनार खिलल बा, बागन में रतनार।
डाढ पात जूही गदराइल, गतर-गतर गुलनार॥

बुढवा पीपर बर टुसियाइल, नवधा नाजुक गात।
डाढ साख फुनुगी उजियाइल, कच-कच हरियर पात॥

दग-दग पीयर खेत कियारी, तीसी लील किनार।
गहना गुरिया साज सजा के, दुलहिन बनल बधार॥

कानन में मन भावन लागे, टह टह लाल पलास।
देखि-देखि के लाल ललाई, उजसे हिर्स हुलास॥

मादक मोहक बहे बयरिया, महके मीठ पराग।
फाग राग के काम आग से, फूटे उर अनुराग॥

◆ ◆ ◆

अमरेन्द्र कुमार सिह
आरा भोजपुर बिहार

आपन खोता

केहू जाने ना चिरइया के भाग
हो भइया, केहू जाने ना चिरइया के भाग।

कबो डाली डाली कबो पात पात
हो भइया, उड़ेले आकास
केहू जाने ना चिरइया के भाग।

कबो लांघे सागर, दाना-दाना के आस
अपना पे कइके बिस्वास
हो भइया, उड़ेले आकास।
केहू जाने ना चिरइया के भाग।

मन सकुचाई कहीं मिलि कि ना ठाहीं
ऊ भर पेट रही कि ऊ रही रे उपास,
हो भइया, उड़ेले आकास।
केहू जाने ना चिरइया के भाग।

बन परदेसी जोहे खोंतवा के आपन
गोहरावेले हरी के साँस साँस,
हो भइया, उड़ेले आकास।
"राजीव" केहू जाने ना चिरइया के भाग।
हो भइया, केहू जाने ना चिरइया के भाग।

◆ ◆ ◆

राजीव मिश्रा
फरीदाबाद

हमार पतोहि हई

हमरा जागे से पहिले ऊ जागि जाली ।
अउर घर के काम में लागि जाली।
हमरा कबो उठावे के ना पड़ेला
बार-बार टोके के ना पड़ेला।
काहे कि ऊ हमार पतोहि हई।

कबो ऊ अपना के बेटी ना मनली।
अउर ना बेटी बन के रहे के चहली।
पतोहि बनि के ऊ जीवन भर साथ देबेली ।
दूनों कूल के मान मर्यादा के निभावेली।
काहे कि ऊ हमार पतोहि हई।

उनका अइला से हमार जिम्मेवारी कम हो गइल।
हमरे जइसन हमार रिश्ता नाता सम्हरा गइल।
जब ऊ परेशान होली त हम उनकर चेहरा पढ़ि लेनी।
अउर उनका माथ प आपन हाथ फेर देनी।
काहे कि ऊ हमार पतोहि हई।

हमरा खातिर ऊ हमार बेटियो से बढ़ि के हई।
जवन सपना से हम अपना लइका के पलले पोसले रहनी,
ऊ सपना के साकार करे वाली हमार पतोहि हई।
हँ ऊ हमार पतोहि हई।

◆ ◆ ◆

माया चौबे
तिनसुकिया

कनक किशोर के पाँच गो कविता

1.रिक्शावाला

परिचय का दीं
ई सब खेत हमनी का रहे
हँ, जहाँ आजु एम्स के विशाल भवन खाड़ बा,
सब सरकार ले लेलस
मुआवजा मिलल झूठ ना बोलब
बाकिर पूंजी कामे ना आइल,
जिनिगी त खेत-बधार में बितल
किसानी कइनीं
अब एह उमिर में कवनो धंधा करीं त का करीं?
अब ईहे रिक्सा रोजगार बा
पहिले घर में अन्न के कमी ना रहे
आजु दूगो रोटी मुहाल बा।

◆ ◆ ◆

2.दीकू

कारण कवनो होखे,
पलायन, विस्थापन,
माटी से दूर जाए के दरद के कसक
मन के कवनो कोना में दुबकल रहेला,
रहि-रहि टुभकेला
जइसे बहत पुरवा में टुभकेला
टूटल हाड़ के जोड़

लोग दीकू कहेला त बुरा लागेला
बाकिर परदेस में तीन पुसुत ले
रहला के बादो
आपन गाँव के माटी
अपना ओरि, पुरखन के धरती के
ओरि खींचेला
त अपने मनवा अपना के दीकू कहेला।

◆ ◆ ◆

3.आदमखोर

मनातू के आदमखोर
अब ना रहले
उनुका के आदमखोर के तगमा देले रहे
प्रशासन
कुछ साँच, कुछ कहानी गढ़ के

पलामू, झारखंड आ बेतिया के जंगल में
बाघ बहुतायत में रहलें
मानव-बनप्रानी के द्वंद्व में
जंगल उजड़े लागल त
इक्का-दुक्का बाघ आदमखोर बन गइलन स
आजु बाघ जंगल से गायब
त आदमखोर बाघ कहाँ भेंटाई
बाकिर बाघखोर मनई कइसे चिन्हाई?

के कहेला कि खाली
जंगल के बाघ आदमखोर होखेला?
बाघ त अब ना रहल
बाकिर शहर आ गाँव त आदमखोरन से भर गइल
जे दिन के उजियारो में
अपना नजर से तउलत रहेला कि
कहाँ-कहाँ गोस्त बा?
आ मौका मिलते मार देला झपटा
कवनो चंपा, कवनो चमेली प
दिन दुपहरिये।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर के पाँच गो कविता

4.आजु के साँच

पूंजीवाद के गर्भ से
बाजारवाद के जन्म भइल
कारपोरेट के घरे
बाकिर सोहर गवात बा
सबके घरे।

पूंजी आ बाजार
आजु के साँच हऽ
साँच के गीत गावल
मनई के धर्म हऽ
तब नूँ गवात बा
घरे-घरे।

असहूँ जनता के काम ह
झाले बजावल
जुमला सुनावल तऽ
बाजारवाद के कोंख से उपजल
राजा आ नवरत्न के।

◆ ◆ ◆

5.भागीदारी

लूट में
ईमानदारी
जरूरी होला
भागीदारी खातिर।

जमीन आ जंगल
खनिज संपदा के
लूट में शामिल
सत्ता आ पूंजीपतियन
के बराबर के बा
भागीदारी।

बीच में
खड़ा बा दलाल स्ट्रीट
तरह-तरह के नुमाइंदा
लगा रहल बा बोली
अपना आका के बल पर
लूट बाजार के सेन्सेक्स
बढ़िया रहल बा
रात दिन।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची

दागी दामन

डॉ सुहासिनी कुँवर, पटना के गिनती शहर के एगो बड़ स्त्रीरोग विशेषज्ञ के रूप में होत रहे। अनीसाबाद में एगो बड़ क्लिनिक 'सुष्मिता एडवांस अस्पताल आ रिसर्च सेंटर' के नाम से स्थापित रहे, जे ऊ अपना पति डॉ अनुज सिन्हा के साथ मिल के चलावत रही। अस्पताल के नाम डॉ दम्पत्ति अपना एकलौती संतान सुष्मिता के नाम से रखले रहे लोग। अस्पताल मुख्य रूप से डॉ कुँवरे देखत रही। डॉ सिन्हा के अधिकांश समय समाज सेवा आ राजनीति में गुजरत रहे। बड़ बुजुर्ग के कहल ह राजनीति सबके रास ना आवे। डॉ सिन्हा के तऽ ई आँखिन देखल घटना रहे कि उनकर ससुर कइसे गलत राजनीति के शिकार भइल रहन। बात सन् बहत्तर के ह। डॉ कुँवर आ डॉ सिन्हा पी एम सी एच दूसरा साल में पढ़त रहे लोग त एक दोसरा से दोस्ती हो गइल। धीरे-धीरे ओहनी लोग के दोस्ती कब प्यार से बदल गइल ई ऊ लोग के पता ना चलल। दूनो आदमी कमिटेड रहे साथे जीए मरे के बाकिर बात जब शादी के आइल तऽ जाति रोड़ा बनके राह में खड़ा हो गइल। डॉ कुँवर, जे जाति के भूमिहार रही, उनकर बाप डॉ राजेश्वर कुँवर आपन बेटी के हाथ एगो पिछड़ा वर्ग के गरीब युवक के हाथ में कवनो कीमत पर देवे के तइयार ना रहन। डॉ राजेश्वर कुँवर ओह घरी फतुहा से समाजवादी पार्टी के विधायक रहन आ राज्य के राजनीति में बढ़िया पकड़ रहे भले विपक्ष में रहन। माथ पर चुनाव रहे। पार्टी आलाकमान के फरमान भइल कि भविष्य आ बेटी के इच्छा के तरजीह दऽ ना तऽ नेतागिरी आ बेटी दूनो हाथ से निकल जाई । राजेश्वर बाबू इशारा समझ गइलन कि फतुहा पिछड़ा वर्ग बहुल क्षेत्र ह बात बढ़ी तऽ टिकटो से हाथ धोवे के पड़ी। राजनीतिक भविष्य के दाव पर लागल देख आ बेटी के जिद के आगे झुक गइलन। आलाकमान से फतुहा से टिकट के आश्वासन के बाद मन मारके खुशी-खुशी डॉ कुँवर के बियाह डॉ सिन्हा से करि दिहलन। राजेश्वर बाबू चुनाव के तइयारी में जोर-शोर से लाग गइलन। राजनीति के पाकल खेलाड़ी राजेश्वर बाबू के कान खाड़ हो गइल जब उनका कान में पड़ल की आलाकमान खुदे पिछड़ा वर्ग बहुल क्षेत्र फतुहा से चुनाव लड़ल चाहत बाड़ें। पहिले तऽ अपना कान पर बिसवास ना भइल बाकिर जब पहिला सूची पार्टी उम्मीदवारन के निकलल तऽ देखि के आँखियो पर बिसवास ना भइल काहे कि फतुहा सीट से महेंद्र यादव, पार्टी आलाकमान के नाम रहे। मन ई बिसवास देखियो के ना कर पावत रहे। लागत रहे कि गलती से टंकित हो गइल होई सूची में नाम। ई सोच फोन लगवले महेंद्र बाबू के आ कहले ई सूची में फतुहा के सामने राउर नाम कइसे? कहीं गलती से तऽ नइखे छप गइल? महेंद्र बाबू कहले ना गलती से ना पार्टी जातीय समीकरण के आधार पर कवनो रिस्क ना लेल चाहत रहे एही से ई निर्णय लेल गइल बा। बाकिर हम आ पार्टी रउवा बारे में कुछ सोचले बानीं जा, कतहीं ना कतहीं इज्जत के साथ रउवा के समायोजित कइल जाई। फोन काटि के राजेश्वर बाबू भीतर से उबलत रहन बाकिर बहरी से शांत। दिमाग में कुछ और चलत रहे। राति में कवन खेल भइल ई केहू के पता ना चलल। सबेरे के समाचार पत्रन के मुख्य समाचार "राजनीति के खेलाड़ी राजेश्वर बाबू फतुहा से सत्ता पार्टी के उम्मीदवार" देखि जहाँ लोग तरह-तरह के बात करत रहे आ जीत के आँकड़ा राजेश्वर बाबू के पक्ष में रखत रहे।ओहिजे महेंद्र बाबू के काट तऽ खून ना। उनका आपन आ राजेश्वर बाबू के राजनीतिक औकात मालूम रहे। आपन हार आँखि तऽ साफ लउकत रहे।

राजेश्वर बाबू आ महेंद्र बाबू चुनावी समर में आमने - सामने रहे। काल्ह के दोस्त आज दुश्मन बन कवनो मौका ना छोड़त रहे एक दूसरा के नीचा दिखावे में। राजनीति में कब यारी कब दुश्मनी कहल ना जा सके। कुरसी के खेल में सह मात चलत रहेला। इंतजार रहेला मौका के आ मौका मिलते दे पलटनिया। राजेश्वर बाबू नामांकन के एक दिन पहिले महेंद्र बाबू के फोन कर कहले कि काल्ह नामांकन बा राउर आशीष चाहीं। महेंद्र बाबू कहले लड़ाई भाई-भाई के बा केहू जीते का अन्तर पड़ता बाकिर पार्टी छोड़ बढ़िया ना कइनीं ह, ई बड़ा महंगा पड़ी रउवा। राजेश्वर बाबू कहले भूमिहार हईं बनिया ना एह से सस्ता महँगा के फेरा में ना रहीं। मजाक में राजेश्वर बाबू कहले कि भूमिहार के आँति बावन हाथ के होला बाकिर महेंद्र बाबू रउवा सिद्ध कर देनी कि राउर आँति ओकरो से लमहर बा। महेंद्र बाबू कहले अभी मत नापी लम्बाई आँत के। समर जीतला के बाद मौका मिले तऽ नाप लेब।

नामांकन के दिन राजेश्वर बाबू के जुलूस अभी कलेक्टरियट के थोरिका दूरी पर रहे कि उनकर स्कार्पियो में कसके धमाका भइल आ गाड़ी देखते देखत आगि के गोला में बदल गइल। लोग घायल राजेश्वर बाबू के सदर अस्पताल ले गइल बाकिर डाक्टर मृत घोषित कर देलस। राजेश्वर बाबू राजनीतिक दाव पेंच के भेंट चढ़ गइलन। बाति सभे समझत रहे बाकिर जेतना मुँह ओतने बात बजार में चलत रहे। फतुहा के चुनाव स्थगित हो गइल। महेंद्र बाबू तन से अस्मसान घाट से तेरहवीं तक राजेश्वर बाबू के काम किरिया में रहले बाकिर मन कतहूँ अउर रहे जे आपन आँति के लम्बाई अपनहीं नापत रहे।ठीके कहल गइल

बा खद्दरधारी जस घड़ियाली आँसू बहावे में केहू ना पार पाई। राजनीति में केहू केकरो मीत ना होखे, कुर्सी खातिर सब कबूल। जबकि सभे जानेला कुरसी केकरो ना होखे, समय पावते चेहरा आपन ना बइठे वाला के बदल देला आ काठ के कुर्सी बइठे वाला के करेजा काठ के बना देला।

तीन माह बाद फतुहा चुनाव घोषित भइल। महेंद्र बाबू के आपन जीत मुट्ठी में बंद दिखाई पड़त रहे। उनका विरूद्ध सत्ताधारी दल राजेश्वर बाबू के दामाद डॉ अनुज सिन्हा के टिकट देले रहे। महेंद्र बाबू के आपन राजनीतिक वरीयता आ जाति के वोट पर भरोसा रहे। डॉ अनुज के साहनभूति वोट आ राजेश्वर बाबू के नाम के भरोसा रहे। ऊ लइकाई से सुनत आइल रहन कि राजेश्वर बाबू अगर कुत्तो फतुहा से खड़ा करिहन तऽ जीत जाई। डॉ सुहासिनी डॉ अनुज के पक्ष में दिन रात एक कर देली । चुनाव फलाफल डॉ अनुज के पक्ष में आइल। ऊ महेंद्र बाबू के एक लाख से ऊपर वोट से हरा देलन । महेंद्र बाबू आपन हार सपनो में ना सोचले रहन। बुझाय देह पियर हो गइल होखे,काट तऽ खून ना देह में।एक महीना तक घर से बाहरो ना निकलले। राजनीति के पुरान खेलाड़ी कबतक माँद में लुकाइत आखिर अबतक के कमाइल कब काम आइत। पैसा आ पहुँच के बल पर राज्यसभा सांसद बने में कामयाब हो गइलन केन्द्र में उनके पार्टी के सरकार रहे। जुगाड़ू महेंद्र बाबू के अगिला मंत्री मंडल विस्तार में कोयला मंत्रालय के प्रभार मिल गइल। बाकिर महेंद्र बाबू के फतुहा के विधायकी के हार अबहीं ले ना भुलाइल रहे आ उनकर दिमाग आपन आँति में फँसल हार के बदला लेबे के तरकीब तलासत रहत रहे ।

डॉ कुँवर के बेटी सुष्मिता मेडिकल कॉलेज में प्रवेश खातिर दू बेर कोसिस कइली बाकी मेरिट के आधार प नामांकन खातिर क्वालीफाई ना कर पवली। डॉ सिन्हा जानत रहन कि धनबाद मेडिकल कॉलेज में कोयला मंत्रालय के तीन गो सीट सुरक्षित बा। बेटी के भविष्य के देखत डॉ सिन्हा बितल बाति भुला महेंद्र बाबू के पटना आवास पर जाके धनबाद मेडिकल कॉलेज में बेटी के प्रवेश खातिर अनुसंसा करे के अनुरोध कइले। महेंद्र बाबू सुनते कहले कि राजनीतिक संबंध अपना जगहे बा सुष्मिता हमरो नतनी हई आ पी ए से कहि हाथ में एडमिशन खातिर अनुसंसा पत्र धरा दिहले। सुष्मिता धनबाद मेडिकल कॉलेज में प्रवेश ले लिहली। सब बढ़िया से चलत रहे। द्वितीय बरिस में रही कि महेंद्र बाबू धनबाद आइल रहन। ऊ कॉलेज खबर भेज मिले के इच्छा व्यक्त कइलन। सुष्मिता पुरान संबंध आ आपन मेडिकल कॉलेज में प्रवेश के देखत सर्किट हाउस में साँझि के बेरा छूट्टी के बाद मिले चल गइली। कमरा में मंत्री जी ना रहन बाकिर उनुकर बेटा जे सुष्मिता के सीनियर रहन अपना दूगो दोस्त के साथ शराब के नसा में चूर मस्ती के आलम में डुबल रहन। सुष्मिता के कमरा में दाखिल होखते सकपकाए के नाटक करत दोस्त लोगिन के बाहर भेज देलन। सुष्मिता महेंद्र बाबू के बारे में पूछली त साफ जबाब ना देत बइठे के अनुरोध कइलन। सुष्मिता के दाल में कुछु करिया बुझाइल,बाकिर अनमने पलंग के एगो कोना बइठ गइली। महेंद्र बाबू के लइका महेश बात बढ़ावत कहले बाबूजी के अचानक तबियत खराब भइला से दिल्ली निकल गइले ह, तोहरा आवे के बारे में बतवले रहन। हम तोहरे इंतजार करत रहीं। सुष्मिता ई सुनि जाए खातिर उठल चहली त महेश हाथ थामि कहले रूक जा थोरिका हमार दिल के बाति सुनलऽ। सुष्मिता हाथ छोड़ावल चहली त महेश हाथ छोड़त कहलन जा बाकिर जाए के पहिले हमार बाति सुनत जा। सुष्मिता थथम गइली। महेश सोफा पर बइठे के इशारा कइले। तनिक सोच के सुष्मिता बइठ गइली। महेश सामने बइठ कहले कि हमनी के दूनों परिवार के केकरो नजर लाग गइल बा। नजदिकाव दूरी में बदल गइल। बाबूजी भले तोहार नाम लिखा देलन बाकिर अबहियो उनुकर मन तोहरा परिवार के प्रति साफ नइखे। आपन हार भुलाइल नइखन। एह से तू कबो अकेले उनुका बुलावे पर जनि अइहऽ। राजनीति में केहू केकरो ना होला आ मौका मिलते डस लेला। नाग आ नेता के एके राशि होला। बाबूजी के अचानक बुलावा दिल्ली से आ गइल आ ऊ चल गइले। साँच पूछ त उनुकर नियत ठीक ना रहे तोहरा प्रति। ई सुनि सुष्मिता कबो महेश के देखस आ कबो अपना के। उनुका महेश के बात भा अपना कान पर बिसवास ना होत रहे।

सुष्मिता थोड़े देर चुपचाप बइठल रहली। तंद्रा टूटल त महेश से कहली ई तू का कहत बाड़ऽ। महेश कहले हम साँच कहत बानीं हमरा पर बिसवास कर कवनो बेटा अपना बाप के बारे में अइसन काहे बोली। बाकिर ऊ बाप से बेसी नेता हो गइल बाड़न आ नेता आपन आ सत्ता के होला दोसर केहू के ना। तोहार बाबूजी से हार उनुकर राजनीतिक कद के जनता के नजर में छोट कर देले बा। सुष्मिता कहली ठीक बा मान लेनी तोहार बात साँच बा। हम आगे से होशियार रहब बाकिर तू ई सब बात हमरा से काहे बोल रहल बाड़ऽ हमरा के सचेत काहे करत बाड़ऽ ई हम ना समझनी। महेश कहले त सुनऽ जे आजु ले हम ना कह सकनी तोहरा से। एक झटका में सीधे कह देलन कि हम तोहरा से प्यार करींला।तोहरा के आपन बनावल चाहत बानीं। तोहार जबाब हम अबहीं नइखी जानत। समय पर जान जाइब। ऊ हँ भा ना कुछ हो सकत बा। बाकिर अगर तू हँ कह देबू तबो बाबूजी के ई संबंध ना स्वीकार होखी ई हम जानत बानीं। खैर छोड़ अबहीं एह बात के फेर कबो बात करब। रात अधिक हो गइल बा चलऽ तोहरा के हास्टल छोड़ दीं। ई कह महेश अपना गाड़ी से सुष्मिता के हास्टल छोड़ अइले। रास्ता में महेश बस अतने कहले कि हमरा के गलत जनि समझिहऽ, हम फेरू कबो बात करब। हमार बात पर विचार करीहऽ।

कॉलेज में महेश आ सुष्मिता के कबो-कबो आमना-सामना हो जात रहे, हेलो हाय होत रहे बाकिर कवनो दूसर बात ना। एही बीच सुष्मिता के टाइफाइड हो गइल।

कॉलेज अस्पताल के इमरजेंसी वार्ड में भर्ती हो गइली। एक इलाका के होखे आ परिचित भइला के कारण महेश अटेंडेंट के रूप में रहन। महेश के सेवा आ आपन ख्याल करत देख ऊ एह दौरान उनुका बहुत नजदीक आ गइली। ई नजदीकी प्यार में बदल गइल आ ऊ महेश के प्यार के आपन स्वीकृति देत उनुके देल लाल गुलाब के अपना हाथे देत उनुका के गला लगा लिहली। समय बितत देर ना लागे। एम बी बी एस के बाद एम डी ओहिजे से दूनो लोग कइल। अपना-अपना परिवार में महेश आ सुष्मिता एक दूसरा से शादी करे के फैसला सुना देल। महेन्द्र बाबू के ई बात सुनते पैर के नीचे के धरती खिसकत बुझाइल। अपना के सम्हारत साफ कहले महेश हमरा ई संबंध स्वीकार नइखे आ ना कवनो कीमत पर हम एह संबंध के बनत देख पाइब। तू सरेख बाड़ आपन निर्णय ले सकेल बाकिर हमरा परिवार से अलग होके। घर के रूख देख महेश के आगे कवनो चारा ना रह गइल। सुष्मिता से सलाह कर कोर्ट मैरेज कर सुष्मिता के संग बिआह गठबंधन में बन्हि गइले। बिआह के बाद माई-बाबू के आशीर्वाद खातिर घरे गइलन बाकिर दरवाजा से लौट जाए के पड़ल। महेंद्र बाबू घर में घुसे के आदेश ना देलन। डॉ अनुज बेटी दामाद के बिआह के खुशी में पटना क्लब में रिसेप्शन पार्टी के आयोजन बड़ा धूमधाम से कइलन। सत्ता के पक्ष-विपक्ष, हित-नात, डाक्टर समाज के साथे महेंद्र बाबू के सादर खुद जा के आमंत्रित कइलन। महेंद्र बाबू साफ बहाना बना गइले। निर्धारित तिथि के रिसेप्शन के आयोजन भइल। महेश-सुष्मिता दुल्हा-दुल्हन के रूप में सज के सजल बीएमडब्ल्यू से आयोजन स्थल पर जात रहे कि कल्ब के मुख्य द्वार के पहिले गाड़ी में जोरदार धमाका हो गइल। गाड़ी के परखच्चा उड़ गइल। दुल्हा-दुल्हन के लाश के सब टूकडा खोजलो पर ना मिलल। रिसेप्शन पार्टी मातम पार्टी में बदल गइल। डॉ अनुज के ना बुझात रहे कि ई कइसे भइल। डॉ कुँवर के दिमाग में राजेश्वर सिह के मौत के घटना नाचत रहे। दूसरा दिन के अखबार में एह घटना के प्रमुखता से स्थान देल गइल एह शीर्षक के साथ कि 'राजनीति में ना केहू आपन'। अगिला दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस में डॉ अनुज चुपचाप रहन बाकिर डॉ कुँवर बोलत रही कि हम राजनीतिज्ञ के परिवार से हईं, राजनीति नजदीक से देखले बानीं, राजनीति में बहुत कुछ पइले आ खोले बानीं। ई जानत बानीं कि राजनीति गन्दा होला बाकिर एतना गन्दा होला हम ना जानत रहीं। हमार आँखि के सामने हमार दुनिया लूटा गइल।हम अपना मुँह से दोषी के नाम ना लेल चाहब। अखबार दोषी के ओरि अँगुली उठा देले बा। अबहीं प्रेस कॉन्फ्रेंस चलते रहे कि दूरदर्शन पर न्यूज़ आवे लागल पटना क्लब कांड के शक के सूई कोयला मंत्री महेंद्र यादव के ओर। आलाकमान के दबाव में कोयला मंत्री के पद से यादव जी के इस्तीफा। राजनीति के खेल निराला। महेंद्र बाबू के दामन में दाग अपने खून से लाग गइल रहे।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची

भोजपुरिया संस्कृति में हम से ' हम ' के यात्रा

भोजपुरिया समाज समष्टि के समाज ह। समूह के बात करेला। मैं के स्थान नइखे एह समाज में। एह समाज के आपन व्यवस्था रहल बा बाँट के खाये के। गाँव-टोला के कहो जवार, जिला से ऊपर जाके राज्य तक के आपन समझेला ई समाज। दूर देशो में मिलला पर परिचय नाम से ना रिसता से होला। ऊ रिसता अंकल-आंटी वाला जस ना रहे भइया, दीदी, चाची, भउजी, दादी, दादा, सार, बहनोई, मामा के होला जेकरा में अपनापन होला। भोजपुरिया समाज कमाये-खाये वाला समाज ह। किसान-मजदूर के समाज ह, जे एक दूसरा के पूरक बनि के रहेला। रगरा-झगड़ा कहाँ रहे समाज में। ई आजु के पूंजीवाद-मार्क्सवाद-राजनीति के देन ह। शेयर बाजार के आज बोलबाला बा। भोजपुरिया समाज में किसान के खेत में भा उपज में मजदूर के, पंच पवनिया के हिस्सा रहत रहे। ऊ शेयरधारी रहे किसान के। फगुआ, चइता, छठ, डोमकच साझी लोक संस्कृति के विरासत रहे। संयुक्त परिवार रहे, गोतिया दयाद रहे, कच्ची-पक्की, खान-पियान रहे। गाँव के बेटी गाँव के इज्जत रहे। कवनो गाँव से मार होखे त गाँव के एकवट होत देरी ना लागे। व्यष्टि के स्थान ना रहे समाज में। मैं से 'हम' के बास आवेला। अहम के पोषक ह 'मैं'। भोजपुरिया मनई में ' मैं ' ना रहे, ना बोल चाल में मैं के प्रयोग रहे। ऊ हम रहे समाज में जेकरा में 'हम' ना रहे भाई जी। समय परिवर्तनशील ह, प्रकृति के नियम ह । एह से नरेन्द्र शर्मा कहले बाड़ें कि -

यह जीवन चंचल छाया है

बदला करता प्रतिपल करवट।

बाकिर समय के साथ मनई भा समाज भला हइसे करवट लेला। परिवार, समाज से हइसे कटि जाला। संयुक्त एकल में, समष्टि व्यष्टि में बदल जाला। हँ, बदल जाला ओकर गवाह समय बा, इतिहास बा, हमनीं के बानीं जा। हम मर गइल बा आजु, ' हम ' जिन्दा हो गइल बा। ऊ ' हम ' स्वाभिमान वाला हम ना ह, अहम से भरल हम ह। कबीर वाला हम रहित त समष्टि के बात करित बाकिर अहम वाला हम ह जे अइसन जगहा ले जाके पटकी कि दिन में तारा लउकी भाई जी। रावण आ कंस के अहम खा गइल त हमनी का कवनो गली में बसल बानीं जा। अहम आ स्वार्थ मनई के कहीं के ना छोड़े। रिसता अपनत्व के डोर ह। बिसवास ओह डोर में मिठास आ प्रेम भरेला। अनुशासन ऊर्जा भरेला। स्वार्थ आ अहम अपनत्व में पहिले गाँठ पैदा करेला। उहे गाँठ कैंसर के रूप धरि अपनत्व, बिसवास, अनुशासन के दीमक जस चाट जाला। बाँच जाला मैं - ' हम ' , जे आगे चल अपनो के ना रहे देवे। योगेन्द्र वर्मा ' व्योम ' के कहलो ह -

तब तक ही अपनत्व की, घुलती रही मिठास।

जब तक रिश्तों में रहा, स्वार्थ रहित विश्वास॥

स्वाभिमान अनिवार्य है, नहीं तनिक संदेह।

किन्तु न जर्जर हो कभी, अनुशासन की देह॥

मर्यादा टूटला त समाज-परिवार बिखर जाला। लोक मूल्यन में गिरावट आवेला। बदलत सामाजिक मूल्यन के देखत जे चिंता हमनीं के होखल चाहत रहे ऊ चिंता ना कर लोक मूल्यन के चिंता पर चढ़ा जरत चिंता पर हाथ सेंकनी जा आपन संकीर्ण विचार आ मैं में बन्हि के ई सोचनीं जा कि आगि माधो घरे लागल बा उधो के का लेना-देना। ईहे दुर्भाग्यपूर्ण सोच समष्टि के जरावत गइल आ मनई के व्यष्टि के रसरी में बान्हि देलस। ओकरे नतीजा ह बबूओ समाज गइल, संयुक्त परिवार गइल,एकल परिवार टूट रहल बा, लिव-इन रिलेशनशिप के चलन, बेटा बाप के अलगाव। सब कुछ देखत - देखत बिखर रहल बा। ई संक्रामक रोग लेखा सब समाज में पईस गइल बा। इहेऊ देख चौधरी कन्हैया प्रसाद सिंह ' आरोही कहले कि -

अपना घर भी अपना कहते डरता हूँ मैं

भूखा-नंगा खूं का सौदा करता हूँ मैं।

समाज में मरत मानवीय संवेदना के देख आगे कहले -

आग ही आग इस मकान में है

कोई अपना नहीं जहान में है।

आजु आर्थिक झकोर बह रहल बा,बढ़ रहल बा, विकास चहुँओर दिख रहल बा। बाकिर ई सब केकरा कीमत पर ई के सोंची। ई सब साझा संस्कृति के बिखराव, सामाजिक संस्कार आ लोक संस्कृति के गिरावट के कीमत पर देखे के मिल रहल बा। केकरा खातिर कमईबऽ बाबू जब परिवारे ना रही, मेहरारू अलगा रही,बेटा पहचाने से इंकार कर दी। इयाद करीं जब खरिहान में बाबा चाचा जोरे पुआर पर सुतत रहीं, बाबूजी नोकरी पर तबो ना बाबूजी के कमी खले आ बधार के हवा में जवन चैन मिले ऊ अब कहाँ बन्द फ्लैट के एसी में आवत बा।ई फरक रहे हम आ मैं के जिनिगी में। ई भोजपुरिया शोध कहत बा। लोक के इतिहास कहत बा। आजु के समय में के एकरा के मानीं ? सभे त भूलाइल बा भुअरा के थोपल पूंजीवाद,

वैश्वीकरण आ बाजारवाद के खेल में। कनक त इशारा करत ई कहले रहन कि -

पइसा के भारि से
संवेदना दबा गइल
घरे - घरे अँगना में
बाजारवाद आ गइल
देखते-देखत
रिसता भुला गइल।

बाजारवाद डाइन
देखे में बड़ी सुंदर
लइकिन के लुगा
लइकन के बुद्धि
देखते -देखत
भाईचारा खा गइल।

गाँव परिवार टूटल
माई आ भाई छूटल
सहर भेंटल ना आ
सपना भुला गइल
देखते-देखत
समाजवाद खा गइल।

चेतन जी के कहल इयाद आवत बा ई स्थिति देखि। उहाँ के कहले रहीं समाज-परिवार के बदलत रूप देख कि -

आदमी के पहचान गुम, सब्जी, रोटी, भात।
कइसे आवाँ पऽ बइठि, करीं नमीं के बात॥

असंतोष बा समय में, जुग में धूमिल रूप।
भँवरी बनल समाज के, गहिड़ कामना कूप॥

बाकिर कामना कूप में डुबल मतिमंद मनई हम के भुला मैं के पहाड़ा पढ़े में लागल बा आ ना लोक के बात माने के तइयार बा ना आपन अनुभव से सीखे के। नोट के फेरा में गोट परिवार के तिलांजलि ई कइसन संस्कार? एक ओरि विकास आ दूसरा ओरि पतन, बिखराव एह खेल के पीछे का बा ? एहिजा हम समाज आ साहित्य विशेषज्ञ कमला प्रसाद के कहलका रखत बानीं -" व्यक्तित्व के लिए खुद जिम्मेदारी उसने सामुहिक कर्म से प्राप्त की है। समूह की एक जीवित इकाई होने के कारण समूह और उसके बीच अविच्छिन्न संबंध होते हैं। संबन्धो की अविच्छिन्नता में मनुष्य में आपस में दुराव पैदा नहीं होता। बौद्धिक, शारीरिक और आत्मिक अर्जन के लिए समूह और व्यक्ति की घनात्मक सक्रियता गुणात्मक परिणाम में बदलती है। यह जो समूह है इसमें से ' मैं: का उभर कर आना इतिहास के क्रम की महत्वपूर्ण घटना है "। ऊ इहो अनुभव कइलन कि ' मैं ' के व्यक्तित्व के प्रभाव समूह प अइसन पड़ल कि समूह ओकरा प्रभाव में जीये लागल जे आजु हमनी का देख रहल बानीं जा। बाँचल- खुचल जे थोर बहुत सामूहिकता रहे ऊ बाजारवाद आ पूंजीवाद निगल गइल। हम से बदलत ' मैं ' के संस्कृति प साम्यवाद के पैरोकार कवगो समाजवादी आ मार्क्सवादी आपन बाति-विचार रखले बा लोगिन ई देखब त बुझा जाई खेल मुँह में राम बगल में छुरी के हो रहल बा।

अजेय पाण्डेय आपन एगो आलेख में हम आ मैं पर बात करत कहले बाडें कि " सामूहिक चेतना पराएपन या कुंठा की भावना मनुष्य में घर नहीं करने देता है। यह चेतना मनुष्य के भीतर सहजता, रचनात्मकता, स्वतंत्रता मूल्यों को बढ़ावा मौजूद रखती है "। आगे बतवले बाड़े कि अतने ना व्यक्तिगत संपत्ति मनुष्य के प्रकृति के अमानवीय बना देला आ मनुष्य के मनुष्य ना मशीन बना देला। मशीन खुद ना चले केहू चलावला। पूंजीवाद के हाथ में स्टेयरिग बा आ ऊ मदारी के बानर अस नचावत बा मनई के। कहल गइल बा अधिक धन सुख खातिर ना होखे आ एगो समय आवेला कि धनवे मनई के मानवीय मूल्य के निगल बाजार के एगो वस्तु बना के छोड़ देला।

हम से ' हम ' के यात्रा के राह में मनई के समाज - परिवार से संबंध भुला गइल। एह भुलाइल संबंध के सबसे बूरा आ अधिका असर मध्य वर्ग पर देखे के मिल रहल बा। ई ' हम ' के चार दीवारी खींच कँटीला तार से घेरलस हमनी के केहू दोसर ना, हमनी का खुद घेरा लगा अपना के बंद कइले बानीं जा अपना आप के। राम मंदिर मिल रहल बा हमनी के राम के गुण ना। वृंदावन में मंदिर मिल जाई कृष्ण के बाकिर गीता आ प्रेम पाठ ना। कबीर के ढाई आखर वेलेंटाइन सप्ताह में आ गान्ही बाबा के उपदेश किताब तक सीमित रह गइल बा। पारंपरिक गीत परंपरा के वाहक ह। ओकरा छोड़ि ढोढ़ी आ ला ॅलीपाप

पर डोलत बा मनई। ई हाल रही बबुओ त देर ना लागी लोक विधान के, सामूहिकता के बिलात आ ऊ दिन देखे के जल्दी मिली कि ' स्व ' के लोपो हो जाई। बूझ रे भाई बूझ ना त अस्तित्व ना बांची। रहबे ना करबऽ फेर लाॅलीपाप पर के कमर लचकाई आ देखत-देखत लाॅलीपाप हाथ से छिन केहू दोसर उड़ जाई। ना हम रहबऽ ना ' हम ' भेंटाई। चेतन बाबा के बतिया मानऽ , समष्टि से व्यष्टि के दौर उहाँ के आँखिन देखल ह। चेतवात कहत बाड़ें -

चेतन चेतऽ सून घर, खरिहानो बा सून।
एने तजि, ओने चलऽ, जेकर खइल नून॥

हमहूँ कहब मानीं भा जनि मानीं राउर मर्जी।
खंड-खंड में बँट गइल, देखऽ खुद इंसान।
इयाद कर एह बाति के, केकर तू संतान॥

तनिका रहिहऽ दूर तू, नाशे लोक बजार।
भोजपुरी हऽ लोक के, सीखऽ लोकाचार॥

आपन-आपन छोड़ के, भोजपुरिया लोक के सुनीं। लोक बाँची त लोग बाँची। साँची लोक संस्कृति के। धन धरम ना ह, धरमे धन ह। धरमे आ नेत बचावत करम करीं।' हम ' बिला जाई। लोक बाँच जाई।

◆ ◆ ◆

कनक किशोर
राँची

ओसहीं हो जाईं का

भेंड़-चाल के दुनिया में शामिल हो जाईं का ?
देखा-देखी हम सबके ओसहीं हो जाईं का ?

जेकर गुन गावत भक्तन के मुँह ना तनिक थके,
बीच बजारे हम ओकर अवगुन गिनवाईं का ?

तय भइल बा उहे बैद उपचार करी आके,
ओकरे दीहल घाव ओहीके अब देखलाईं का ?

समझदार के समझावल त समझ में आवेला,
समझ के भी जे ना समझे ओके समझाईं का ?

ज्ञानवान गुणवान के आगे नतमस्तक बानीं,
अइसन ओइसन के सोझा हम माथ नवाँईं का ?

लोक-लाज, मरजादा के 'संजय' हम साथ रहीं,
बेमतलब केहू के घर में आईं जाईं का ?

◆ ◆ ◆

दर्द हियरा में जेतना भरल बा

दर्द हियरा में जेतना भरल बा।
लोर बनके नयन से ढरल बा।

आजु मुरझाइल बा चाँद चेहरा,
आजु अचके केहू मन परल बा।

नेह के नीड़ कबले छवाई,
आस बिस्वास कबके मरल बा।

तीर लिहले चलल बा शिकारी,
वन में हिरना बेचारा डरल बा।

मीठबोलवा से बचके तू रहिहऽ,
ओकरा बोली मैं माहुर भरल बा।

गाछ असहीं ना बाटे उघारे,
पात पतझड़ में सगरे झरल बा।

फूँक के पीये माठा ऊ 'संजय',
दूध से ओठ जेकर जरल बा।

◆ ◆ ◆

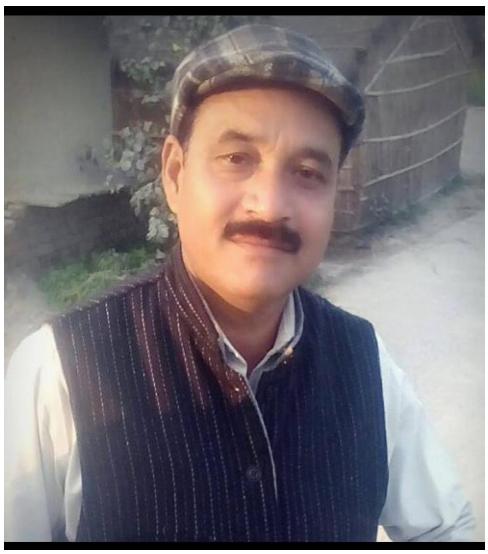

संजय मिश्र'संजय'
कार्यकारी संपादक (सिरिजन)

बसंत में बिरही के मन के भाव पर आधारित कुछ दोहा

०१.
ई बसंत सूना भइल, कइनीं कवन कसूर।
साजन हमके छोड़ के, चल गइले बड़ दूर॥

०२.
हमरा खातिर जहर बा, ई बसंत के रंग।
बिन साजन कइसे रही, हिम्मत अउर उमंग॥

०३.
मनवा ई कुहके बहुत, ना देखे जब कंत।
रोज- रोज बेधे बहुत, ई बउराह बसंत॥

०४.
चित चंचल अब ना रही, रही उमंग उदास।
अइसहि अब पल-पल कटी, उचट रही मधुमास॥

५.
जब फगुआ के गीत पर, बाजे ढोलक झाल।
केकरा से जाके कहीं, अपना मन के हाल॥

०६.
केकर मन साजन बिना, ना तड़पे जस मीन।
साँचो सबकुछ बा इहाँ, बिधि के नियम अधीन॥

०७.
हम ना जननीं ए सखी, अइसन मिली सजाय।
देखीं जब जोड़ी कहीं, मन कुंठित हो जाय॥

०८.
बात करेम कहले रहें, राती में हर रोज।
जब से गइले आज ले, लिहले कबो ना खोज॥

०९.
लागत बा सौतिन कहीं, छिनली मोर सुहाग।
सोच-सोच लहके बहुत, हमरा देहियाँ आग॥

१०.
जबले ना अइहें सजन, बही हमेसा लोर।
कइसन बानीं हो गइल, रहनीं दुधिया गोर॥

११.
हे भगवन किरिपा करीं, रउए पर बा आस।
पिय के हमरा भेज दीं, अभिए हमरा पास॥

◆ ◆ ◆

अखिलेश्वर मिश्र
पश्चिम चम्पारण

हॅंसुआ के बियाह में खुरपी के गीति

हॅंसुआ के बिआहे में खुरपी के गीत,
रोजे उठावल जाता बालू के भीत।।
लच्छन एक कुलच्छन चारि,
का करिहें भकभुअरी बिलार।।
चमड़ा के धोकरी के कुकुर रखवार,
रोज रोज उखिया में बोलेला सियार।।

ओढ़ले बा गदहा बाघे के खाल।
रंगवले बा सियरो रोंवा लाल।।
सब कोइलसिए बा बारी के बारी।
केकरा के लूटि लेईं, केकर बिगाड़ी।।
कोइलरि लुकात फिरे कउवा के डरे।
घंटी बन्हाइल ना बिलरिया के गरे।।

झूठ के दुआरे, हाथ जोरे खड़ा साँच।
दोसरा के लीले झूठ बवले कोकाच।।
अवसर ना पावे तले बड़का ह त्यागी।
टूटि जाला सिकहर बिलरिया की भागी।।
केकर केकर लेईं एइजा आजु हम नाँव,।
जब ओढ़ले कमरिए बा सगरे ई गाँव।।

◆ ◆ ◆

मदनमोहन पाण्डेय
कुशीनगर,उ.प्र.

नीबिया के पेड़

काट देलनसँ नीबिया के पेड़
ईया कहति रहे
अब खटिया रहि गइल
बस चारपाई ले
काहें कि बिन बयारि
खटिया के भार लगेले पाटी
ईया इहो कहलसि
एह नवरातर हमरे दुआरे
न झुलिहें सातो बहिन
ईया के ई बाति ढेर खात रहे
कि अब ना जानि पइहें ऊ
कि कब पटिदारी में पाहुन अइलें
आ अबकी बरिस केना लइके
चेचक के चपेट में अइलेसँ
अब दतुअन आ गाछ बदे
केहू ना आई दुआरे
बड़का बाऊजी जब
हटावत रहलें कटलकी नीबिया
त ईया के आँखि से लोर चू गइल
एही पेड़वा के तरे
खेलत रहे कबो बाबू
अपना चेहरा के झुर्री सोहरावत
ईया मन में कहली
" मनइयो एक दिन पेड़ हो जाला।"

◆ ◆ ◆

आकृति विज्ञा 'अर्पण'
गोरखपुर, उत्तर प्रदेश

पीर मुहम्मद मूनिस

पी के देसपरेम पियाला चम्पारन पे तनमन वार

र खलन दिया करान्तीके बारल ,तेज कलमके धार

मु ड़लन कबहूँ ना पाछे ,बढ़त गइलन लच्छके ओर

ह रियर धरती चम्पारन पर निलहा अतेयाचार

म् लेच्छ फिरङियन पर भारी पड़ गइलन " राजकुमार "

म ने कलमके साहिर "मूनिस" बन गइलन तेरुआर

द रियादिल आ नेक सुखनवर भारत माँके लाल

मू निस पीर मुहम्मद कइलन साहसके संचार

नि ज हित फरका छोड़ के रखलन सबकर हितके धियान

स न्त-महतमा रिसी-मुनी खानी

' मूनिस ' औतार

◆ ◆ ◆

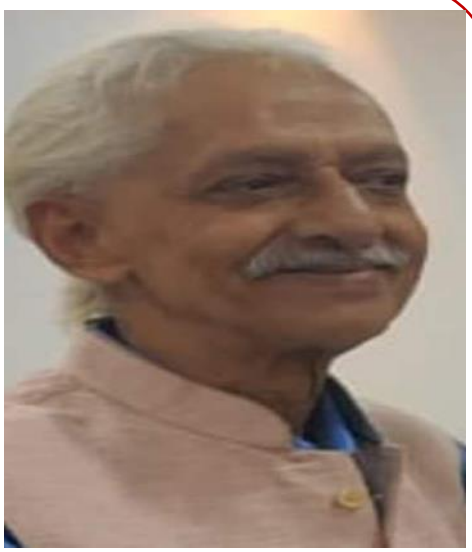

नक्क मझव्वी
चम्पारन

अछरंग

ललाइन चाची के तेरही के भोज भइल एक हफ्ता बीत गइल रहे। मय हीत-नात चल गइल रहे लोग। स्नेहा भी अपना ससुराल जाए के तइयारी करते रहली, बाकिर लाला चाचा से चाची के जाए के गम बर्दाश्त ना होत रहे एही से बेटी के रोक लेले रहुअन।

नास्ता कइला के बाद अभी सब केहू आरामे करत रहे तले रोहन अपना बहिन के आंगन में बोलवलें, सनेहा आ के पूछली

" का बात बा बबुआ? "

" दीदी माई के मय गहना कहवाँ बा?" हड़बड़ा के रोहन अपना एकलौती बड़ बहिन से पूछलन।

"अरे बबुआ! ई का पूछत बाड़ हो ? हमरा का पता ?"

ई बात कहत घरी भक मार दिहलस सनेहा के।

"रउरा के नइखे पता त केकरा के पता होखी, माई जब से बेमार रहली रउरा भी त उनकर अलमारी, अटैची के खोलत बन करत रहनी? " उदास हो के रोहन बोललें।

भागत ऊ अपनी माई के कोठरी में गइली आ माई के आलमारी के लाकर के खाली देख के बोलली " अरे बाप हो भाई! हम त खुदे अचरज में बानीं कि आखिर माई के मय गहना कहवाँ चल गइल? कवनो एक दू थान ना नू रहे!

पुरहर तीन सइइ भर सोना अउर सात-आठ किलो चानी रहें!! गहना गुरिया के हाथ गोड भा पाँखि त ना नू लाग गइल रहल, जे चल के भा उड़ के कतहूँ निकल गइल होखे, जरूर केहू ना केहू ना त छेड़छाड़ कइले होखी?"

ओतने देर में लाला चाचा, रोहन के साला उमेद, ड्राइवर भी कोठारी में आ गइल लोग। रोहन बो कपारे हाथ ध के बइठल रहली। बात के बतंगड़ हो तो रहे।

रोहन बहिन से ही जिरह करत रहलें कि रउरे पता होखी, गहना दे दिही दीदी।

" सुनऽ बबुआ, अपना बीबी से काहे नइखऽ एको बेर पूछत। हम त ससुरा से आवत-जात रहनीं ह बाकिर माई के संगे चउबीस घंटा त उहे रहत रहली। कामवाली भी आवत होखी, तोहार सार त एजुगे रह के पढ़ाई-लिखाई भी करे लन।

तोहार ड्राइवर! ओकरा घर के त मय बेकत बेधड़क घर में घुस के बइठे-उठेला, उहो लोग से त पूछ लऽ!"

एकाएक स्नेहा मय अटकल प विराम देत बोलली

" अरे दीदी अइसन बात रउरा कइसे बोल देम, ई बात खुदे हमार पत्नी बेचारी कहली ह कि माँ के गहना अलमारी में नइखे, अटैची में भी नइखे, कही दीदी भा पापा जी त नइखन नू हटवले भा कहीं असथिर राख देले।"

रोहन एक्के साँस में ई बात कह गइलें।

"का ! तोहार बीबी ई बात कहली ह, आखिर उनका के एकाएक जरूरत का पर गइल ह माँ के अलमारी के तलासी लेबे के?"

चिहा के सनेहा बोलली।

" का दीदिया, रउरा ई कइसन बात कर रहल बानीं, माँ के कपड़ा-लत्ता जवन हेने-ओने बिखरल रहे सब कुछ त इहे सरिहार के अलमारी अउर अटैची में राखत रहली। केकरा के का देबे-लेबे के रहे, ई काम उहे नू करत रहली, त आलमारी कइसे ना खोलिहें? "

झल्लात रोहन बोललें।

" हँ भाई, ऊ त ठीक बा, बाकिर गहना छुवे के कवन जरूरत रहे, बाबूजी भी बड़ले बानी?

कहीं चोर के दाढ़ी में तिनका त नइखे नू...? कहीं तोहरे मेहरारू!!"

सनेहा ए बेर अपना मन के बात झट से सभकरा सोझा ध देहली।

" दीदी अब रउरा हद से बेसी आगे बढ़ रहल बानीं। हमार मेहरारू ना देखित त ई बात केहू जान भी ना पावत कि माँ के गहना कहवाँ चल गइल अउर अपने उल्टा ओकरे प इल्जाम लगा रहल बानीं, ई गलत बात ह।"

फेर ऊ दाँत पीसत बहिन भीरु आ के बोललें 'दीदी, रउरा के बतावे के परी कि गहना कहवाँ बा ? "

एह बेर सनेहा के धीरज के बान्ह टूट गइल रहे, माई के परलोक सिधारते ई कइसन अछरंग ओकरा कपारे मढ़ा गइल, ऊ रोवत बोलली - -

"भाई हो ई कइसन बात तू कह देहलऽ ? का अतने भर भरोसा रहे हमरा ऊपर?

का इहे प्रेम ह हम दूनो भाई बहिन के?

राखी के बंधन अतना काँच रहे?

हर नींक-बाउर घरी में हाथ ना छोड़े के इहे वादा रहे, अतना हलुक गिरह रहे भाई?"

उनकर आँसू के सैलाब अब रुके मान के ना रहे , जवना आंगन में दूनो भाई बहिन हँसत खेलत बड़ भइलें, जवना आंगन में बइठा के एक्के संगे ललाइन चाची दूनो के दूध भात खिआवस आ चाना माई के लोरी गा के फुसलावस, ओही आंगन में आज भाई अपना दुलरुई बहिन प अतना बाउर इल्ज़ाम लगावत रहलें आ मय आंगन के लोग तमाशा देखत रहे।

सनेहा रोअत रहली आ पुरान बातन के गठरी के रेसमी डोरा भी खोलत रहली।

बाकिर भाई के कान में चुगलखोरी के जहर उझिल दिहल गइल रहे, ओकर इलाज अब दैवो भीरि भी ना रहे।

ई कुल बक-झक लाला चाचा अपना बइठका में से सुनत रहलें, उनकर आँख लोरा गइल रहे। करेजा में लहर के थपेड़ा उठत गिरत रहे, उनकरा जेतना गहना भुलाए के दुख ना रहे, ओह से बेसी भाई-बहिन के कुकुर बिलार लेखा गेंग-झगरा आ दोसारोपन देख के होत रहे।

ऊ पुरान दिन के सोन्ह-काँच इयाद में चल गइलें -

जब ललाइन चाची से उनकर बिआह भइल रहे, तब ऊ दूनो बेकत के उमिर मात्र तेरह भा चउदह बरिस के रहल होई। संगे-संगे गोली , गोटी, चेंका, चिभ्भी खेलस जा।

लाला चाचा के माई चाची के कनिया वाला लूर रहन सिखावस बाकिर ऊ चाचा से दाजा हिसकी राखस कि ऊ पतंग उड़ावत बाड़ें त हमहूँ उड़ाइब, कबो-कबो खिसिआ जास त चाचा के झोटा नोंच लेत रहली। दलमोट, चीनिया बेदाम, लखटो खातिर खूब छीना झपटी करस चाचा संगे।

दिन बीतल, आठवाँ ले गाँवे पढ़ के चाचा आगे पढ़े खातिर सहर में चल अइलें, छुट्टी प गाँवे जास त ललाइन चाची उनकरा से झगरा करे लागस। उनकर समान लुकवा देस। उनकर दवात के सियाही में पानी भर देत रहली। खिसिन चाचा दालान प से घरे आवते ना रहुअन।

दिन-महीना-साल अपना नियति से बीतत रहे, बीए पास क के चाचा के पोस्ट आफिस में छोटा बाबू के नोकरी लाग गइल। चाची के भी बुद्धि आ गइल रहे, ऊ अब पहिले लेखा मारपीट, गेग-लपटा ना करत रहली।

रहनदार मेहरारू वाला मय गुन उनकरा में उनकर सास भर देले रहली। अब चाचा उनकरा के चिढ़ावस कि अब तक हम पइसा कमा तानीं, अब हमार झोंटा ना नोचबू?

चाची लजा के आँचल से मुह तोप लेत रहली।

ओह रात बतिआव घरी चाची चाचा से आपन मय बिथा कहली कि हमरा नइहर में हमरा जोरा पारी के मय संगतियन के दू-दू, तीन-तीन गो लइका-फइका हो गइल बा। अब त गाँव घर में बतकही होखे लागल बा कि बुझाता लाला जी के कनिया बाझिन हई !

ई बाति सुन के चाचा के मन दुखा गइल बाकिर ऊ चाची के खुस करे खातिर चुटकी लिहलें -

'हँ भाई त ऊ लोग अपना दूल्हा के झोंटा ना नू नोंचत होखिहें जा, बुसेट के बटाम ना नू तूरत होखिहें?

चाची के आँखि लोरा गइल त चाचा समझवलें कि आरे हम त मजाक कर रहल बानीं, तू त रोवे लगलू हो।

अगिला दिन हिम्मत क के चाचा अपना बाबा आ बाबूजी भीरी जाके, चाची के अपना संगे सहर ले जाये के बात कहलें। केहू बेसी ना-नुकूर ना कइल।

सहर जाये के मय तइयारी भी भ गइल, बैलगाड़ी प चारो ओर से चादर तना गइल , ओही प काम भर चाउर , गेहूँ, चूरा, भेली, टटका तरकारी भी लदाइल चाची घूघ तनले बैलगाड़ी प बइठ के चाचा संगे गाँव से पनरह कोस दूर सहर में चल अइली।

दूनो बेकत में बड़ा प्रेम रहे, आस पड़ोस के लोग खातिर ई चरचा के बात रहे।

सहर अइला पाँच बरिस बीत गइल बाकिर चाची के जब कवनो बाल-बच्चा ना भइल त ऊ दूनो लोग डाक्टर,ओझा, वैद के भी देखावल लोग। बहुत दवाई बीरो भी भइल, ओकर साइड इफेक्ट से चाची के देह भी फूले लागल।

चार साल ले दूनो लोग भर सावन मारकंडे महाराज के दरबार में पूजा अर्चना करत रहे लोग।

बिआह के चउदह बरिस बाद पथर प दूब जामल आ चाची के आँचर में सनेहा अइली आ फेर दू बरिस बाद रोहन।

मय घर में खुसहाली छा गइल।

चाचा आफिस में बड़ा बाबू हो गइलें। सहर में तीन कट्ठा जमीन किना गइल, धीरे-धीरे एक तल्ला घर भी बन गइल। किराया के घर से ऊ लोग अपना घर में आ गइल।

दूनो बाल बच्चा के बहुत नीक आ संस्कारित परवरिस देत रहे लोग। दूनो भाई-बहिन के प्रेम देख के मोहल्ला के लोग गुम रहे।

लाला चाचा अतीत के अंधड़ में उधिआत-पवरत रहले तलें सनेहा उनकर गोड़ पकड़ के फफक के रोवे लगली आ कहली जे

" पिताजी रउरा सुन रहल बानीं नू, भाई ई कइसन आरोप हमरा कपारे ध दिहलस, हमरा इचिको उमेद ना रहे कि माँ के जाते ई घर आंगन में हम हइसे बेइज्जत होखब!"

लाला चाचा बेटी के सम्हारत बोललें - " चुप हो जा बेटी, हम रोहन से बात कर रहल बानीं।"

ऊ तनी करेड़ आवाज में रोहन के गोहरवलें।

रोहन दनदनाते कोठारी में आ के बोललें - " पिताजी दीदी से कह दीं कि माँ के मय गहना दे देस, ना, त !!

लाला चाचा रोहन के देख के बोललें -

" ना, त का? पुलिस में रपट लिखइबऽ?

बहिन के जेल भेजबऽ?

ऊ गहना तोहरा कमाई के रहे?

बिना जनले-बुझले बिआहुत बड़ बहिन से मय मरजादा लांघ के बात करबऽ। अतना छूट नइखीं देहले तहरा के बबुआ।"

रोहन अवाक बाबूजी के मुह ताके लगलें।

"माफी मांग लऽ अपना बहिन से आ गहना के बात भुला जा लोग, इहे सोच ल लोग कि जवन गइल ऊ आपन ना रहे।"

ऊ खिसिन काँपत ई बात कहलें।

ओतने देर में रोहन के मेहरारू कोठारी में आ के तिरिया चरितर के पोथा बाँचे लगली।

" बाह बाबूजी, गहना भुला गइल आ रउरा कहत बानीं कि भुला जा! ई कइसे सम्भव बा? माँ जी ऊ गहना हमरा के देले रहली आ लोग घात-पाँच क के हाथ मार लिहल। "

बाँया हाथ डाढ़ पर ध के दहिना हाथ चमकावत बोललीं।

" ज़बान सम्हार के बोलिहऽ कनिया आ तोहार माँ जी हमरा से बे पुछले एगो खर ना टसकावत रहली, अतना बड़ बचन कइसे दे दिहें? ओइसे त हम खूब नीमना से जानत बानीं कि हई भाई-बहिन के बीच में आगि के लगावल ह? हम मेहरारू के गम में हो के नइखीं बोलत त हमरा बेटी पर कवनो झूठ-साँच इल्ज़ाम जनि लगा दऽ लोग। आ कनिया होखे के त इहो हो सकेला कि मय गहना तूहे अपना नइहर पहुँचा देले होखबू? "

लाला चाचा कस के डपटलें।

रोहन बो बोकार फार के रोवे लगली, झट से रोहन उनकरा के अँकवारी में ध लिहलें आ सनेहा के ओरि देख के बोललें - " बाह दीदिया, केतना बड़का खेला क दिहनीं रउरा। अच्छा अइसन करीं कि बाबूजी से कह के अब ए घर से भी हमनी के निकलवा दिहीं। इहो साध पुजा लिहीं रउरा।"

" इहे संस्कार हमनीं के तहरा के देले बानीं जा, काहें हमरा के जीअते जिनगी मुआवल चाहत बाड़ हो रोहन? "

ई कहत लाला चाचा के आँखि लोरा गइल।

सनेहा के बहुत भारी अछरंग लाग गइल रहे। ऊ डबडबाइल मने भाई के आगे हाथ जोर के बोललीं

" ना हो भाई, ई घर तोहार ह , हम त ओही दिन पराया हो गइल रहनीं जवना दिन हमार डोली ए घर से उठल रहे । आज, आ ऐही बेरा तहरा संग के सब बन्धन तूर के जा रहल बानीं, एगो भारी अछरंग अपना कपार प लिहले। "

एह बात से लाला चाचा के करेजा प बहुत भारी बिथा जाम गइल रहे, खटिया धइला के छवे मास बाद ऊ परलोक सिधार गइलें, सनेहा के कवनो खबर ना दिआइल।

फेर दिन बीतल, सनेहा के बाल बच्चा के भी शादी बिआह भइल बाकिर आम के पल्लो राह ताकत रहली इमली घोटावे खातिर रोहन भाई के...

आ रोहन के बेटा-बेटी के बिआह में माड़ो में धइल बटुली राह जोहत रहली सनेहा फुआ के कि फुआ अइती त कोहरवत के भात बनित...

◆ ◆ ◆

बिम्मी कुंवर
चेन्नई

राम जन्म के हेतु अनेका

भगवान के अवतार लेबे के संदर्भ में अलग-अलग तरह के विचार अलग-अलग लोगन के मन में आवेला। कुछ लोगन के ई विचार बा कि भगवान जब अवतार लेले तब हमनी नाहिन ही ऊ रहेलें। काहेकि उनकर जन्म ही ना मृत्यु भी हमनिए नाहिन होला। बाकिर ओह लोगन के भगवान के अविनाशी आ सर्वोच्च प्रकृति के ठीक-ठीक समझ ना रहेला। जवना कारण ऊ लोग एह बात के गहराई के समझ ना सकेला। एही बात के स्पष्ट करत भगवान श्रीकृष्णा 'श्रीमद्भगवद्गीता' के सातवाँ अध्याय के चौबीसवाँ श्लोक में अर्जुन से कहतारन-

"अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यते मामबुद्धय:।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥"

'श्रीमद्भगवद्गीता' के चौथा अध्याय के सातवाँ आ आठवाँ श्लोकन में भगवान श्रीकृष्ण ईश्वर के अवतार लेहला के उद्देश्य के बारे में कहतारन कि ईश्वर के अपना अविनाशी प्रकृति के विपरीत मृत्युलोक में अवतार लेहला के कुछ निश्चित कारण होला। ऊ आगे कहतारन जब-जब धर्म के लोप होला आ अधर्म बढ़ेला तब-तब सज्जन के रक्षार्थ, दुष्टन के विनाश करे खातिर आ धर्म के स्थापना करे खातिर हम अवतार लेनीं। हर युग में हम अवतार लेनीं।

"यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥ 4-7
परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्
धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे-युगे॥" 4-8

कहे के अर्थ ई कि ईश्वर के अवतार संबंधी प्रयोजन के बारे में हमनी सिर्फ तुक्का लगाइलें कि भगवान के अवतार सम्बन्धी प्रयोजन इहे ह, एतने भर ह। बाकिर वास्तविकता त ई बा कि जवना बात के हमनीं के ठीक-ठीक जानकारी नइखे ओह बात के भी विश्वास के साथे कहल हमनी के अनाधिकार चेष्टा भर ह। एकर वास्तविक मर्म त ऊ अवतारी ही समझ सकेला। एही से तुलसीदास के कहनाम बा-

"सुनु गिरिजा हरि चरित सुहाए,
बिपुल बिसद निगमागम गाए।
हरि अवतार हेतु जेहि होई,

इदमित्थं कहि जाई न सोई॥"

हरि अवतार हेतु के बारे में हमनी के शास्त्रन में कई कारण बतावल गइल बा। एक जगह ई भी कहल गइल बा कि निर्गुण-निराकार ब्रह्म के प्राप्त कइले आत्माराम परमहंसन के 'श्रीपरमहंस' बनावे खातिर भी ईश्वर के अवतार होला।

"तथा परमहंसानां
मुनीनाम अमलात्मनाम्
भक्ति-योग- विधानार्थं
कथं पश्येम हि स्त्री:"

लिग पुराण में ईश्वर के अवतार के सम्बन्ध में ई कहल गइल बा कि ईश्वर के अवतार के सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कारण ईश्वर के अकारण करूणा ही हो सकेला। काहेकि जेकरा केहू से राग-द्वेष नइखे, जे स्वयं अपना में तृप्त बा आ जे आत्माराम पूर्णकाम ह। ओकर स्वयं के कोई स्वार्थ हो ही ना सकेला। ओकर सब काम परमार्थ खातिर ही होला। ईश्वर के इहे स्वभाव जगत में विख्यात बा। अपना ओही स्वभाव के कारण ही उनकर लीला चाहे अवतार एह धरती पर होला-

"आत्म प्रयोजनाभावे परानुग्रह एव हि"
(लिग पुराण)

शांडिल्य सूत्र में ई कहल गइल बा कि भगवान अपना अकारण करूणा के स्वभाव के कारण ही जगत में विख्यात बाड़ें। उनका एही स्वभाव के कारण उनकर अवतार चाहे लीला होला।

"मुख्यं तस्य हि कारुण्यं "

(शांडिल्य सूत्र)

मानल ई जाला कि अवतार लेहला से ही भगवान के सगुण साकार स्वरूप सम्बन्धी अनन्त नाम, अनन्त गुण, अनन्त लीलादि के प्राकट्य भइल। जवना के अवलम्बन से अनंतानंत मायिक पामर जीव भी भवसागर से उतीर्ण होके प्रेम रसार्णव में निमग्न हो रहल बा। एही आशय से वेदव्यासजी भागवत में कहतारन-

"भवेस्मिन क्लिश्यमानानाम विद्या काम करमभि:

श्रवणस्मरणार्हाणि करिष्यन्निति केचन

(भागवत: 1-8-35)

भगवान विष्णु के दशावतार मानल जाला। जवना अवतारन में रामजी के रूप में भी उनकर एगो अवतार भइल रहे। साँच पूछी त मानव रूप में पूजे जाए वाला ई भगवान विष्णु के पहिला अवतार रहे। भगवान विष्णु के रामावतार त्रेता युग में भइल रहे। रामजी के जन्म के पीछे एक ना अनेक कहानियन के चर्चा हमनी के शास्त्रन में जहाँ- तहाँ भइल बा। ओह सब कहानियन के एक आर्टिकल में समेटल मुश्किल बा। एह से हम रामावतार से जुड़ल कुछ महत्वपूर्ण प्रसंग के ही इहाँ चर्चा कर रहल बानीं।

सूर्यवंशी इक्ष्वाकु वंश में एक से एक पराक्रमी, वीर योद्धा भइलें। एही वंश में दिलीप नाम के एगो राजा रहलें। जिनका पत्नी के नाम रहे सुदक्षिणा। ई दम्पति संतानहीन रहे। एह से गुरु वशिष्ठ के पास संतान-प्राप्ति के कामना से गइल। गुरु वशिष्ठ एह लोगन के सलाह देहलन कि अगर तहरा लोगन के संतान चाहीं त तू लोग कामधेनु के पुत्री नंदिनी के अपना साथे ले जा। एकर खूब सेवा करऽ आ एकरा दूध के ग्रहण करऽ। तहरा लोगन के नंदिनी के कइल सेवा फलीभूत होई। जवना के परिणाम स्वरुप तहरा लोगन के संतान-प्राप्ति के हार्दिक इच्छा पूर्ण होई।

ई दम्पति गुरु आज्ञा से नंदिनी के आश्रम से अपना संगे ले आइल आ ओकरा सेवा में लाग गइल। नंदिनी राजा दिलीप के सेवा से प्रसन्न भइली आ राजा के सुयोग्य पुत्र प्राप्ति के आशीर्वाद देहली। नंदिनी के आशीर्वाद से सुदक्षिणा गर्भ धारण कइली आ समय पर ऊ एगो सुन्दर आ हृष्ट-पुष्ट बच्चा के जन्म देहली, जे आगे चल के रघु नाम से एगो महाप्रतापी राजा के रूप में प्रसिद्ध भइलें। ऊ एतना प्रतापी रहलें कि उनका नाम पर उनका पूरा कुल के ही रघुकुल कहे जाये लागल। एही रघुकुल में राजा दशरथ के जेष्ठ पुत्र के रूप रामजी के जन्म भइल।

रामजी भगवान विष्णु के दशावतार में से सातवाँ अवतार रहलें। मानल ई जाला कि एह संसार में जब-जब धर्म के हानि पहुँचावल जाला। सज्जन लोगन के अधर्मी लोगन द्वारा प्रताड़ित कइल जाला। तब-तब भगवान दुष्टन के विनाश करे खातिर, अपना भक्तन के रक्षा करे खातिर, समाज में समरसता ले आवे खातिर, विश्व के कल्याण खातिर, निर्बल के रक्षा करे खातिर आपन रूप रचेलें, जे भगवान के अवतार कहल जाला। ईश्वर के ई अवतार मनुष्य ही ना बल्कि मत्स्य, कूर्म, वराह जइसन मनुष्येतर प्राणी के रूप में भी भइल बा।

भगवान विष्णु के रामावतार काहे लेबे के पड़ल, एकरा से जुड़ल 'श्रीमद्भागवत', 'वाल्मीकि रामायण', 'हरिवंश पुराण' आ 'रामचरितमानस' के साथ ही 'रामकथा का इतिहास', 'हिन्दू धर्म कोष' आ 'संस्कृत व्याकरण माला' में कइगो कथा बा। जवना में कइगो कथा में त वरदान आ शाप के ही विष्णु के रामावतार लेहला के प्रमुख कारण बतावल गइल बा।

साँच पूछी त त्रिदेवन में से भगवान विष्णु के राम के रूप में अवतार लेबे के एक ना अनेक कारण रहे। अगर आसान शब्दन में कहीं त हम कह सकेनीं कि भगवान विष्णु के रामावतार कइगो वरदान आ शाप के सम्मिलित परिणाम रहे। केहू के वरदान के पूर्ति करे खातिर आ केहू के अपना कर्मदण्ड से जे शाप मिलल रहे ओकरा परिणति स्वरूप ओकर उद्धार करे खातिर भी श्रीराम के जन्म भइल रहे। इहे कारण बा कि भगवान राम के तारक आ पातक दुनु कहल जाला। अब प्रश्न ई उठता कि विष्णु के एह अवतार के 'राम' कहे के पीछे कवन गूढ़ रहस्य छिपल रहे आ एकरा बारे में के का कहता? अब एह दृष्टि से 'राम' शब्द के विश्लेषण कइल जाव।

कहे खातिर त 'राम' एगो बहुत छोट शब्द ह। बाकिर मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के संदर्भ में एकरा अर्थ के अलग-अलग लोगन द्वारा अलग-अलग तरह से अलग-अलग जगह पर अलग-अलग अर्थ देहल गइल बा। "तैतरीय अरण्यक' नामक ग्रंथ में राम शब्द के 'पुत्र' के रूप में भी अर्थ देहल गइल बा। एह

ग्रंथ के एक ना अनेक श्लोकन में पुत्र के अर्थ में 'राम' शब्द के प्रयोग भी भइल बा। हालाँकि ब्राह्मण संहितन में 'राम' के अर्थ देहल गइल बा जे सब जगह रमल होखे, ऊ राम ह-

"रमन्ते सर्वत्र इति राम:"।

संस्कृत व्याकरण आ शब्दकोष के अनुसार इहाँ 'रमन्ते' शब्द राम के अर्थ में प्रयुक्त भइल बा। कहे के अर्थ ई कि जे सुन्दर बा, दर्शनीय बा उहे राम ह।

कहीं-कहीं 'मनोज' शब्द के प्रयोग भी कामदेव से इतर राम के अर्थ में भी देखे के मिलेला। जहाँ 'मनोज' शब्द के अर्थ श्रीराम से जोड़ल जाला, उहाँ 'मनोज' शब्द के अर्थ 'मन के जाने वाला' कइल गइल बा। कहे के अर्थ ई कि जे मन के जानत होखे उहे राम ह।

हिन्दी व्याकरण में 'राम' के अर्थ के विस्तार में ई कहल गइल बा कि जे आनन्द देबे वाला होखे, संतुष्टि देबे वाला होखे उहे राम ह।

वेदन में मनुष्य खातिर चार पुरुषार्थ के नाम लेहल गइल बा- धर्म, अर्थ, काम आ मोक्ष। एही से एकरा के सम्मिलित रूप से 'पुरुषार्थ चतुष्टय' भी कहल जाला। महर्षि मनु के पुरुषार्थ चतुष्टय के प्रतिपादक मानल जाला। कुछ विद्वतजन के मत बा कि एही 'पुरुषार्थ चतुष्टय' के प्रतीक राजा दशरथ के चारों पुत्र रहलें। ओह लोगन के अपना एह विचार के विस्तार देत ई कहनाम बा कि राजा दशरथ के चारों बेटा लोग मानव-जीवन के चार सोपान ह, जे मानव जीवन के आधार भी ह। जवना में भरत धर्म के प्रतीक हउअन, शत्रुघ्न अर्थ के, लक्ष्मण काम के आ रामजी मोक्ष के प्रतीक हउअन। एहसे ओह लोगन के कहनाम बा कि राम नाम के एक अर्थ 'मोक्ष' भी भइल।

'राम' शब्द में 'र' अक्षर में 'आ' के मात्रा लगावल गइल बा आ दूसरा अक्षर ह 'म'। एह से 'राम' शब्द दुगो अक्षर आ

एगो मात्रा- र् + आ, + म के मेल से बनल बा। एह में 'र्' से रसातल यानी 'पाताल' भइल। 'आ' से 'आकाश' भइल आ एकरा साथ ही 'म' से मृत्युलोक यानी पृथ्वी भइल। एह से मानल ई जाला कि जे पाताल, आकाश आ धरती तीनों के स्वामी ह, उहे राम ह।

संस्कृत व्याकरण के मुताबिक 'राम' शब्द 'रम्' धातु से बनल बा। जेकर अर्थ 'रमण' (निवास), रमल, निहित चाहे निवास कइल होला। एह से 'राम' शब्द के अर्थ इहो कहल जा सकेला उनका मन में भक्त निवास करेलें, एही से ऊ 'राम' हउअन।

जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य के कहनाम बा कि जे कण-कण में व्याप्त बा उहे राम ह-

"रमन्ते कणे-कणे इति रामः।"

विष्णु सहस्रनाम पर अपना भाष्य में आद्य शंकराचार्य के कहनाम बा कि नित्यानन्दस्वरूप में योगीराज रमण करेलें, एही से ऊ 'राम' हउअन।

भगवान विष्णु के रामावतार के संबंध में 'वाल्मीकि

रामायण', 'श्रीमद्भागवत', ' हरिवंश पुराण' आ 'रामचरित मानस' आदि अलग-अलग धार्मिक ग्रंथन में जे कथा

देहल गइल बा, अगर ओकरा आधार पर हम गहराई से विचार करेब त पायेब कि भगवान विष्णु के एह रामावतार जे जुड़ल एक ना अनेक घटना पर विस्तृत चर्चा भइल बा। जवना में कुछ शाप आ कुछ वरदान से भी जुड़ल बा। ओकरा में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण घटना बा-

1- 'श्रीमद्भागवत महापुराण' के तीसरा अध्याय में एगो कथा आइल बा कि सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा जी कई लोकन के संरचना करे खातिर तपस्या कइलें। उनका तपस्या से प्रसन्न होके भगवान विष्णु सनक, सनन्दन, सनातन आ सनत्कुमार नाम के चार मुनी के रूप में अवतार लेहलें। एकरा के भगवान विष्णु के प्रथम अवतार मानल जाला। ऊ परमात्मा जे साकार बाड़न, ऊ लीलार्थ 24 तत्त्वन के अण्डन के निर्माण कइलन। ओही अण्ड से परमात्मा अपना साकार रूप में बाहर निकललें। ऊ जल के रचना कइलें आ हजारन दिव्य बरिसन ले ओही जल में शयन कइलें। एही से उनकर नाम नारायण पड़ल-

"आपो नरा इति प्रोक्ता आपो वै नरसूनवः।

अयनं तस्य ता पूर्वं तेन नारायण: स्मृत: ॥"

सनक, सनन्दन, सनातन आ सनत्कुमार नाम के ब्रह्मा जी के चारगो अयोनिज संतान रहलें। एह लोगन के ब्रह्मा जी के मानस पुत्र भी मानल जाला। ई लोग पाँच वर्षीय बालक नाहिन लउकेला आ सदा परमात्मा के ध्यान में लीन रहत भ्रमण करेला। कहे के अर्थ ई कि एह लोगन के हर पल भगवान के चितन में ही व्यतीत होत रहेला। एतने भर ना ई लोग बड़का-बड़का लोगन के भी कथा सुनवले बा आ भागवत ग्रंथ के ज्ञान देहले बा। ब्रह्मा के एह चारों मानस पुत्रन के सनकादि (सनकादि= सनक +आदि) भी कहल जाला। जवना के अर्थ होला- सनक, सनन्दन, सनातन आ सनत्कुमार।

वैकुण्ठ में भगवान विष्णु के जय आ विजय नाम के दुगो द्वारपाल रहलें। एक बार के घटना ह कि सनकादि मुनि विष्णु जी के दर्शन करे खातिर वैकुण्ठ अइलन। जब ई लोग द्वार से निकल के जाये लागल तब जय-विजय ओह लोगन के हँसी उड़ावत ओह लोगन के रोक देहलस। जय-विजय के एह व्यवहार से सनकादि मुनि लोग रुष्ट हो गइल। एह से एह दुनु द्वारपालन के तीन जन्म तक राक्षस योनि में जन्म लेबे के शाप दे देहलस। जब जय-विजय के सनकादि द्वारा शाप मिल गइल, तब ऊ लोग घबड़ा गइल आ लागल सनकादि से क्षमा-याचना करे। बाकिर एक बार जे शाप मिल गइल ऊ त पूरा होखहीं के रहे। इहे बात सनकादि मुनि लोग जय-विजय के क्षमा-याचना पर कहलस कि एक बार शाप जे दे देलल गइल बा, ऊ वापस त ना होई लेकिन हमनी के ई अवश्य कर सकतानीं कि तीनों जन्म में ओह लोगन के अंत स्वयं श्री हरि के हाथ से ही होई आ तीन जन्म के बाद तहरा लोगन के मोक्ष प्राप्ति हो जाई। एह से जय-विजय पहिला जन्म में हिरण्यकश्यपु आ हिरण्याक्ष के रूप में जन्म लेहलें। भगवान विष्णु वाराह अवतार लेके हिरण्याक्ष के तथा नृसिंह अवतार लेके हिरण्यकश्यपु के मरलें। अपना दूसरा जन्म में इहे जय-विजय रावण आ कुम्भकरण के रूप में जन्म लेहलें। एह लोगन के वध करे खातिर भगवान विष्णु के रामावतार लेबे के पड़ल। अपना तीसरा जन्म में जय-विजय शिशुपाल आ दंत वक्र के रूप में जन्म लेहलें। एह जन्म में भगवान विष्णु के एह लोगन के वध करे खातिर श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लेबे के पड़ल। एह तरह भगवान विष्णु के रामावतार लेबे के पहिला कारण सनकादि मुनियन के जय-विजय के देहल शाप बनल। एह से मानल ई जाला कि भगवान विष्णु के रामावतार लेबे के पहिला कारण सनकादि मुनियन के शाप ही रहे।

भगवान विष्णु के रामावतार के दूसरा महत्त्वपूर्ण कारण स्वयं भगवान विष्णु ही रहलन। उनका नारद मुनि द्वारा शाप मिलल रहे। 'रामचरित मानस' के बाल काण्ड में ई कहानी आइल बा।

एक बार नारद मुनि हिमालय में जाके तपस्या करत रहलें। उनकर ऊ तपस्या कई बरिसन ले चलल। इन्द्र के लागल कि नारद मुनि अपना तप से इन्द्र से उनकर इन्दरासन छीन लिहें। एह से नारद मुनि के तपस्या से भयभीत इन्द्र उनका तपस्या के भंग करे खातिर कामदेव के आदेश देहलें। इन्द्र के आज्ञा के शिरोधार्य करके कामदेव उहाँ पहुँचलें जहाँ नारद मुनि तपस्या करत रहलें। ओइजा पहुँच के कामदेव नारद मुनि पर काम के वाण चलवलन। वाणन के प्रभाव से नारद मुनि के तपस्या टूट गइल। ऊ आँख खोललन आ कामदेव का ओर देखलन। कामदेव डेरा गइलें कि कहीं इहो हमरा के भगवान शिव नाहिन भस्म ना कर देस। एह से ऊ लगलें नारदजी से माफ़ी माँगें आ नारद मुनि के सामने लगलें गिड़गिड़ात कहे कि ई सब हम अपना राजा इन्द्र के आदेश पर कइनी ह। एहमें हमार कवनो व्यक्तिगत स्वार्थ नइखे। हम खाली अपना राजा के आज्ञा के पालन कइनी ह। कामदेव के बात सुन के नारद मुनि मुस्कुरइलें आ कामदेव के क्षमा क देहलें। नारद मुनि से क्षमादान मिलते ही कामदेव भयमुक्त होके खुश हो गइलें आ नारद मुनि से उनकर आभार व्यक्त करत कहलें कि जब हम शिवजी के तपस्या भंग कइले रहनीं, तब शिवजी क्रोधित होके हमरा के भस्म क देहलें। ऊ काम के त जीत लेहलें लेकिन अपना क्रोध से हार गइलें। बाकिर रउआ त अपना क्रोध पर भी विजय प्राप्त करके हमरा के क्षमादान दे देहनीं। एह से रउआ त शिवजी से भी बड़का संन्यासी हो गइनीं। कामदेव के मुँह से ई बात सुनके नारद मुनि के अहंकार जाग गइल। ऊ समझे लगलें कि ऊ साँचों शिवजी से भी बड़का हो गइलें। अपना अहंकार के वशीभूत होके ऊ तुरते शिवजी के लगे पहुँच गइलें आ कामदेव के बात के हवाला देके लगले आपन बखान करे। शिवजी ठहरलें भोले भंडारी ऊ नारद मुनि के बात धैर्य पूर्वक सुन त लेहलें लेकिन नारद मुनि के ई चेता देहलें कि ऊ एह घटना के चर्चा विष्णुजी से ना करस। बाकिर नारद मुनि के सिर पर त अहंकार सवार रहे। एह से ऊ शिवजी के बात के अनसुना करके सीधे वैकुण्ठ पहुँच गइलें आ विष्णुजी से उहे कहानी लगलें दुहरावे। ऊ नारद मुनि के बात सुनते समझ गइलें कि नारद मुनि अपना अहंकार के वश में हो गइल बाड़ें। एह से उनकर अहंकार मिटावल जरूरी बा।

भगवान विष्णु अपना माया से एगो नगर बसवलन। जवना के राजा रहलें शीलनिधि आ उनकर बेटी रहली विश्वमोहिनी, जेकर स्वयंवर होखे वाला रहे। नारद मुनि जब ओह नगर से गुजरत रहलें तब ओह कन्या के सौंदर्य से एतना प्रभावित भइलें कि ओह कन्या से विवाह करे खातिर आतुर हो गइलें। एह से ऊ पुनः वैकुण्ठ वापस आ गइलें आ भगवान विष्णु से आग्रह करे लगलें कि ऊ नारद मुनि के अइसन रूप देस जवना से

विश्वमोहिनी अपना स्वयंवर में उनका गला में वर डाल दे। भगवान विष्णु त अपना माया से रचल विश्वमोहिनी के सब रहस्य आ उद्देश्य त जानते रहलें। एह से ऊ नारदजी से कहलन कि जवना में तहार भलाई होई जा ओइसने तहार रूप हो जाई। एने नारदजी के लागल कि विष्णुजी उनकर इच्छा पूरा क देहलें।

भगवान विष्णु नारदजी के भलाई के सोच के उनकर मुँह बानर के बना देहलें आ एने नारदजी सोचलें कि उनका निवेदन पर विष्णुजी उनकर चेहरा स्वयंवर में चयन के अनुरूप बना देहलें। ओह स्वयंवर में विष्णु भगवान स्वयं पहुँच गइलें आ विश्वमोहिनी उनकर चयन क लेहली। एने नारदजी पर सब लोग हँसत रहे। बाकिर नारदजी एह हँसी के कारण ना समझ पावत रहलें। काहेकि ऊ त एह आत्मविश्वास के साथे आइल रहलें कि भगवान विष्णु उनका के एतना सुन्दर बना देहले होइहें कि विश्वमोहिनी उनका के देखते उनका से मोहित हो जइहें आ बिना देर कइले उनका गला में स्वयंवर के वरमाला डाल दिहें। बाकिर भइल एकरा प्रतिकूल। एह से खिन्न मन से नारदजी लौटे लगलें। लौटत घड़ी ऊ आपन प्रतिबिम्ब पानी में देखलें तब उनका लोगन के अपना पर हँसला के कारण समझ में आ गइल। साथ ही ऊ आपन चेहरा के देख भगवान विष्णु पर क्रोधित भी बहुत भइलें। जब अपना ओह क्रोध के सम्भाल ना सकलें त विष्णुजी के पत्नी वियोग के शाप दे देहलन। ऊ कहलन कि तू हमरा के स्त्री-वियोग देहल, एह से तू भी मानव-शरीर धारण करके पत्नी-वियोग में भटकब। जवना बानर के मुँह तू हमरा के देहले रहल ह, उहे बानर तहरा पत्नी के खोजे में तहार सहायता करी।

नारद मुनि द्वारा भगवान विष्णु के देहल एह शाप के ऊ ग्रहण कइलन आ एह तरह भगवान विष्णु के रामावतार लेबे के ई दूसरा कारण बनल। विष्णुजी के रामावतार लेबे के तीसरा कारण अहिल्या के उद्धार भी मानल जा सकेला। अहिल्या सनातन धर्म वर्णित एगो स्त्री पात्र हई। जेकर कथा ब्राह्मणन आ पुराणन में छिटपुट आइल बा। बाकिर 'रामायण' आ अन्य रामकथा में देवी अहिल्या के कथा के विस्तार देहल गइल बा।

पारम्परिक हिन्दू धर्म में अहिल्या के पंचकन्या में प्रथम कन्या के रूप में महिमामंडित कइल गइल बा, जे शुद्धता के आदर्श हई। देवी अहिल्या अपना गुण, रूप आ पतिव्रत धर्म पालन कइला के कारण अपना भक्तन के हृदय में बसल रहेली। पंचकन्या खातिर कहल ई गइल बा-

"पंचकन्या स्मरेतन्नित्यं महापातकनाशम्"

अर्थात जेह लोगन के प्रतिदिन स्मरण कइला से पाप दूर हो जाला उहे लोग पंचकन्या ह। एह लोगन के विशेषता ई बा कि ई लोग विवाहित होके भी एगो कन्या के समान पवित्र रहेला।

देवी अहिल्या के संबंध में ई मानल जाला ऊ ब्रह्माजी के

मानस पुत्री रहली। उनका के ब्रह्माजी बहुत सुन्दर बनवलन। एकरा साथ ही उनका ई वरदान भी मिलल रहे कि ऊ सदा षोडशी के तरह ही रहीहें। एक एकरा साथ ही ऊ अपना सौंदर्य ही ना गुण के कारण भी तीनों लोकन में विख्यात रहली। उनकर एही दुनु विशेषता के कारण उनका से एक ना अनेक लोग विवाह करे के चाहत रहे। जवना में कई देवता लोग भी शामिल रहे। जवना के देखत ब्रह्माजी अहिल्या के विवाह खातिर उत्सुक देवतादि खातिर एगो शर्त रखलन। ऊ शर्त ई रखलें कि जे सबसे पहिले त्रिलोक के भ्रमण करके आई ओकरे के उनकर मानस पुत्री अहिल्या वरण करीहें।

देवराज इन्द्र अहिल्या के सौंदर्य आ गुण से अत्याधिक प्रभावित रहलें। एह से ऊ उनका से विवाह करे के चाहत रहलें। अहिल्या के पावे के चाहत में इन्द्र के ब्रह्माजी के शर्त जल्दी से जल्दी पूरा करे के रहे। एह से देवराज इंद्र त्रिलोक भ्रमण पर निकल गइलें। ऊ अपना चमत्कारिक शक्ति से सबसे पहिले त्रिलोक के भ्रमण करके आ भी गइलें। बाकिर नारदजी ब्रह्माजी से कलन कि अत्रि ऋषि के पुत्र गौतम ऋषि इन्द्र से पहिलहीं त्रिलोक के भ्रमण पूरा कर लेहले बाड़न। नारदजी के ई बात कहे के पीछे तर्क ई रहे कि अपना दैनिक पूजादि के क्रम में गौतम ऋषि गाय के परिक्रमा करत रहलें। ओही समय गौ माता अपना बछड़ा के जन्म देहली। वेदानुसार एह अवस्था में गाय के परिक्रमा कइल त्रिलोक के परिक्रमा कइला के समान होला। एही से अहिल्या के विवाह अत्रि ऋषि के सुपुत्र गौतम ऋषि से हो गइल। एने देवराज इन्द्र के अहिल्या के ना मिलला के मलाल उनका मन में रहिये गइल।

अहिल्या के गौतम ऋषि से विवाह हो गइल। बाकिर एने देवराज इन्द्र के उनका बिना कल ना पड़े। एह से ऊ जब भी उनका सौंदर्य के चर्चा सुनस बेचैन हो जास आ जल्दी से जल्दी उनका से मिलन खातिर आतुर हो जास। एही से एक दिन ऊ

सूर्यदेव से अहिल्या के सुन्दरता के बारे में पूछलें। बाकिर सूर्यदेव इन्द्रदेव के भाव भांप गइलें। एह से एह बारे में आपन असमर्थता जतवलन। जब इन्द्रदेव के मंशा सूर्यदेव से पूरा ना भइल तब ऊ बहुत चालाकी से चन्द्रदेव से अहिल्या के बारे में पूछलन। एह पर चन्द्रदेव कहलन कि देवी अहिल्या से अधिक रूपवती, गुणवती आ पतिव्रता स्त्री एह सृष्टि में कोई दोसर नइखे। चन्द्रदेव के मुँह से ई बात सुनके इन्द्रदेव तत्काल ही ई योजना बना लेहलें कि चन्द्रदेव के मदद से कइसे अहिल्या के हासिल कइल जा सकेला?

कामवासना से घिरल इन्द्रदेव प्रतिदिन गौतम ऋषि के कुटिया के चक्कर काटे लगलें आ उनका दिनचर्या से अवगत हो गइलें कि गौतम ऋषि प्रतिदिन ब्रह्म मुहूर्त में ऊ नहाये चल जालन आ दू-तीन घंटा के समय ऊ ओही जा अपना स्नान- ध्यान में लगा देलें। अपना वासना से वशीभूत इन्द्र एक दिन गौतम ऋषि के वेष में अहिल्या के संगे कामक्रीड़ा करे के योजना बनवलें। देवराज इन्द्र पर उनकर कामेच्छा एतना हावी भइल कि चन्द्रमा के मदद से ऊ अइसन माया रचलें कि आधे रात में भोर नाहिन प्रतीत होखे लागल। गौतम ऋषि समझलें कि ब्रह्म मुहूर्त हो गइल। एह से ऊ नित्य के भाँति अपना स्नान-ध्यान करे खातिर अपना कुटिया से बाहर निकल गइलें।

गौतम ऋषि के अपना कुटिया से बाहर निकलते ही देवराज इन्द्र जे गौतम ऋषि के कुटिया के आसे-पास मंडरात रहलें गौतम ऋषि के वेष में कुटिया में पहुँच गइलें आ पहुँचते ही अहिल्या से प्रणय निवेदन करे लगलें।

चूँकि देवराज इन्द्र गौतम ऋषि के रूप लेहले रहलें, एह से अहिल्या उनका के पहचान ना सकली आ आपने पति

समझली। बाकिर उनका विचित्र व्यवहार के देख के उनका मन में शंका जरूर भइल। बाकिर इन्द्रदेव अपना छल-कपट के बात शहद में लपेट के एह तरह से कहलन कि इन्द्र के चिकनी-चुपड़ी बात में अहिल्या आ गइली आ अपना पति के स्नेह के भाव समझत अपना मन में उठत ओह शंका के भाव मिटा देहली।

दोसरा ओर गौतम ऋषि जब स्नान करे खातिर घाट पर पहुँचलें तब उनका एहसास भइल कि अभी उनका स्नान के समय नइखे भइल। एह से उनका एह बात के एहसास हो गइल कि ज़रूर उनका साथे कोई अनहोनी होखे वाला बा। एह से ऊ जल्दी-जल्दी घरे पहुँच अइलें। बाकिर उहाँ देखतारे कि उनही के वेष में कोई दोसर मर्द उनका पत्नी के साथे बा। एह दृश्य के देख के ऊ अपना क्रोध में आपा से बाहर हो गइलें। दोसरा ओर जब अहिल्या अपना पति के सामने देखली त सब माजरा समझ गइली। अंजाने में कइल अपना अपराध बोध से उनकर चेहरा पीला पड़ गइल। एने आपन भंडा फूटला से इन्द्र भी भयभीत हो गइलें। क्रोध में भरके गौतम ऋषि इन्द्र से कहलन कि ऐ मूर्ख! तू हमरा पत्नी के स्त्रीत्व भंग कइल ह। उनकर योनि पावे के इच्छा मात्र से तू एतना बड़ा अपराध क देहल। तहरा स्त्री के योनि पावे के एतना लालसा बा त जा हम तहरा के शाप देतानी कि अभी एही समय से तहरा समूचे देह में हजारों योनि उत्पन्न हो जाव।

गौतम ऋषि के शाप के प्रभाव अब इन्द्र पर दिखाई देबे लागल आ उनका सगरी देहे योनि निकले लागल। आपन स्थिति देख देवराज इन्द्र आत्म ग्लानि से भर उठलें। एह से अपना शाप-मुक्ति खातिर ऊ लगलें गौतम ऋषि से गिड़गिड़ाये आ प्रार्थना करे। इन्द्र के अइसन हालत देख के गौतम ऋषि तनि द्रवित हो गइलें। एह से ऊ दया करके उनका शरीर पर निकल आइल हजार योनियन के हजार आँखन में बदल देहलें।

मानल ई जाला कि देवराज इन्द्र अपना शरीर पर निकल आइल हजार आँखन के साथे जंगल-जंगल भटकत रहलें कि उनका शरीर पर निकल आइल हजार आँखन के केहू उनका से ग्रहण कर लेव। इन्द्रदेव ओकरा बदले ओकरा के बहुत कुछ देबे के भी तइयार रहलें। ऊ कुछ अइसन भी देबे के चाहत रहलन जवना से ओकर आगे के जिन्दगी बदल जाई। बाकिर इन्द्र के एह बात पर केहू तैयार ना होखे। आत्मग्लानी से भरल इन्द्र जब वने-वने भटकत रहलें। तबे अनार के एगो छोट पेड़ के उनका पर दया आ गइल। ओकर फूल त चटक लाल रंग के होत रहे। बाकिर ओकरा में कवनों ना गंध रहे आ ना ही ऊ आकर्षक रहे। एह से ओकरा के ना देवता पर चढ़ावल जा सकल जात रहे आ ना ही केहू ओकरा के अपना प्रिया के उपहार में ही दे सकत रहे। मोहक सौंदर्य आ सुगंध के अभाव में अनाल के फूल से कोई अपना घर भी ना सजावत रहे। एह से अनार के पेड़ बहुत दुःखी रहत रहे। एह से देवराज के दैनिक स्थिति देख ऊ सोचलस कि अइसे भी हमार त कवनों पूछ हइये नइखे त काहेना हमरा से केहू के उपकारे हो जाव आ हमार जीवन धन्य हो जाव। ई बात सोच के ऊ देवराज इंद्र के बात मान गइल। देवराज इन्द्र अनार के पेड़ से बहुत प्रसन्न भइलें आ कहलें कि तू हमार एतना मदद

कइल ह त हम तहरा के आज ई वरदान देतानी कि ई सब आँख तहरा शरीर पर एगो खोल के अंदर रही जे तहार फल कहलायी आ तहार ई फल अपना गुण के कारण लोगन के बीच बहुत लोकप्रिय रही आ सम्मान पाई। एही से अनार के फल अन्य फलन से अलग होला।

एने अहिल्या के भी उनका पति गौतम ऋषि द्वारा ई शाप मिलल कि ऊ उनकर जीवित शरीर शीला में बदल जाव। एकरा साथ ही ऊ अहिल्या के उद्धार के युक्ति भी बतवलन कि जब विष्णु के रामावतार होई तब राम के

चरण के स्पर्श से ही अहिल्या के उद्धार होई। कवनों-कवनों ग्रंथ में अइसन भी जिक्र बा कि अहिल्या के एह बात के एहसास हो गइल रहे कि ई गौतम ऋषि ना हउअन बल्कि उनका वेष में देवराज हउअन। एह से अहिल्या के अहंकार हो गइल कि ऊ एतना सुन्दर बाड़ी कि उनका के पावे के लालसा में स्वयं देवराज के गौतम ऋषि के वेष धारण करे के पड़ल ह। ऊ इन्द्रदेव के पहचानते हुए भी उनका साथे सम्बन्ध बनवली। खैर, वजह जे भी रहल होखे बाकिर एह घटना के फलस्वरूप अहिल्या शीला में बदल गइली आ इन्द्र के देवराज के उपाधि मिलला के बावजूद ऊ देवता लोगन के राजा त मानल जालें। बाकिर उनकर पूजा एगो भगवान के तौर पर ना होला। इन्द्र द्वारा अइसने अपराधन के कारण देवराज भइला के बावजूद उनका के दोसर देवता लोगन के तुलना में कवनों ज्यादा आदर-सत्कार ना देहल जाला।

रामकथा में वर्णित कथा के अनुसार जब ऋषि विश्वामित्र के साथे रामजी आ लक्ष्मणजी मिथिलापुरी के वन-उपवन के भ्रमण करत रहे लोग तब ओही भ्रमण के क्रम में अहिल्या के उद्धार भइल। जवना स्थान पर अहिल्या के उद्धार भइल ऊ स्थान दरभंगा जिला में स्थित बा।

ओह स्थान पर दरभंगा महाराज छत्र सिंह द्वारा सन् 1635 में अहिल्या के समर्पित एगो मंदिर बनवावल बा, जेकर दूरी सीताजी के जन्मस्थली सीतामढ़ी से 40 किलोमीटर बा। एह मंदिर के विशेषता ई बा कि एह मंदिर में पूजा-अर्चना करे खातिर महिला पुजारी बाड़ी। अब ई मंदिर रामायण सर्किट से जुड़ गइल बा। एह मंदिर में विवाह पंचमी आ रामनवमी के दिने काफी भीड़ भी रहेला।

भगवान विष्णु के रामावतार कई अन्य कारण भी मानल जाला। जवना में एगो स्वयं भगवान विष्णु द्वारा मनु आ शतरूपा के देहल उनकर एगो वरदान रहे। 'श्रीमद्भागवत महापुराण' के अनुसार मनु आ शतरूपा ब्रह्मा के अंश से ही जन्मल रहे लोग। ई दम्पति संतान प्राप्ति हेतु भगवान विष्णु के बरिसन तपस्या कइले रहे। ओह लोगन के तपस्या से प्रसन्न होके भगवान विष्णु प्रकट भइलें आ ओह लोगन से कहलें कि हम तहरा लोगन से प्रसन्न बानीं बोल कि तहरा लोगन के हमरा से का चाहीं? भगवान विष्णु के एह बात पर ऊ लोग कहलस कि हमनी के रउए नाहिन संतान चाहीं। मनु आ शतरूपा के एह बात पर भगवान विष्णु कहलन कि हमरा नाहिन त हम स्वयं बानीं। एही से हम स्वयं तहरा लोगन के पुत्र के रूप में जन्म लेब। मानल ई जाला कि मनु- शतरूपा के मिलल वरदान भी भगवान विष्णु के रामावतार लेबे के एगो कारण बनल। जवना में मनु के राजा दशरथ के रूप में जन्म लेहले रहलें आ शतरूपा रानी कौशल्या के रूप में।

रामावतार के कथा माता शबरी से जोड़ के भी देखल जा सकेला। शबरी भगवान श्रीराम (विष्णु) के अनन्य भक्त रहली। उनका अपना गुरु से भगवान राम के दर्शन के आशीर्वाद मिलल रहे। शबरी के अपना गुरु से मिलल एह आशीर्वाद के भी रामावतार के एगो कारण मानल जा सकेला। धार्मिक ग्रंथनके अनुसार शबरी के असली नाम श्रमणा रहे। चूँकि उनकर जन्म भील समुदाय के शबर जाति में भइल रहे। एही से उनका के शबरी कहल जाला। शबरी के पूर्व जन्म से सम्बंधित दूगो कथा प्रचलित बा। एक कथा के अनुसार शबरी/श्रमणा अपना पूर्व जन्म में एगो अप्सरा रहली, जे इन्द्र के कवनों समारोह में उपस्थित भइली। ओह सभा में भगवान विष्णु के आगमन भइल। ऊ भगवान विष्णु से अनुरक्त होके अपलक दृष्टि से उनका के निहारत रह गइली। देवराज इंद्र शबरी के एह कृत्य से बहुत क्षुब्ध हो गइलें आ शबरी के शाप देहलें कि मनुष्य योनि के अधम जाति के स्त्री के रूप में तहार जन्म होखे। जबकि दोसरा कथा के अनुसार शबरी अपना पूर्व जन्म में परमहिसी नाम के एगो रानी रहली। एक बार ऊ अपना पति के साथे कवनों धार्मिक कार्यक्रम में गइल रहली। उहाँ ऊ ऋषि लोगन के एगो समूह देखली जे भगवान के भक्ति में मगन रहे। रानी परमहिसी के भी भगवान के चरण में लागल मन ओही साधुअन के बीच बइठ के भजन- सत्संगत करे के चाहत रहे। बाकिर राजा उनका के ई करे से रोक देहलें। व्यथित मन रानी परमहिसी गंगा के तट पर गइली आ गंगा मइया से प्रार्थना कइली कि हे गंगा मइया! हमरा अगिला जन्म में ना हमरा रूप

चाहीं आ ना रानी के पद। बाकिर हमरा जे चाहीं ऊ केवल ईश्वर के भक्ति चाहीं। एतना कहके रानी परमहिसी जल-समाधि ले लेहली आ अगिला जन्म में शबरी के रूप में जन्म लेहली।

राम भक्तन में प्रमुख स्थान पावे वाली माता शबरी भील राजकुमारी रहली। ऊ बहुत सुन्दर आ प्रतिशाली रहली। उनकर अपना राज्य में बहुत सम्मान रहे। वनवास के क्रम में राम-लक्ष्मण शबरी के आतिथ्य स्वीकार कइले रहे। शबरी के भक्ति से प्रसन्न श्रीराम उनका के परम धाम जायेके वरदान देहलें।

पौराणिक कथा के अनुसार शबरी भील समाज से रहली। उनका पशु-पंच्छिअन से बहुत लगाव रहे। चूँकि उनका समाज में शादी-विवाह चाहे अन्य कवनों शुभ अवसर पर बलि देबे के प्रथा रहे। एह से पशु-पंच्छियन के बचावे खातिर ऊ शादी ना कइली आ मतंग ऋषि के शिष्या बन उनका से धर्म आ शास्त्र के ज्ञान ग्रहण कइली। रामायण के कथा में माता शबरी के विशेष महत्त्व देहल गइल बा। माता शबरी भगवान राम के अनन्य भक्त रहली। ऊ अपना हृदय में राम-सीता के बसवला के साथ ही सैकड़ों बरिस (लगभग एक हजार बरिस) ले नित्य मार्ग में पुष्प बिछाके, रामजी के भोग करावे खातिर चीख-चीख के मीठ फल/बेर भगवान राम खातिर रखत रहली। शबरी ना जाने केतना बरिस ले रामजी के प्रतीक्षा कइली। बाकिर रामजी से उनका भेंट भइल तब जब सीताजी के हरण हो गइल रहे आ रामजी जंगल-जंगल उनका के खोजत रहलें। एही क्रम में उनका माता शबरी से भेंट भइल।

शबरी शादी ना करे के चाहत रहली। एह से अपना पिता के गृह त्याग के जंगल में आ गइली आ ऋषि लोगन खातिर जंगल से फलादि चुन के ले आवे लगली। एह से ऋषि लोग शबरी से एह व्यवहार से बहुत खुश रहत रहे। बाकिर जब ओह लोगन के पता चलल कि ऊ अछूत जाति के हई तब ऊ लोग उनका के त्याग देहलस। बाकिर मतंग ऋषि उनका के एगो शिष्या के रूप में अपनवले आ उनका के शिक्षा देहलें। जब मतंग ऋषि के अंत समय आइल त ऊ शबरी के अपना लगे बुलाके कहलन कि एक दिन एही जा राम तहरा लगे अइहें आ तहरा के एह संसार से मुक्त करा दिहें। शबरी ओही दिन से रामजी के प्रतीक्षा में रत अपना कुटिया के नित्य फूलन से सजावे लगली आ जंगल से मीठ फल चुन चुन के ले आवे लगली। ऊ प्रतिदिन फूल से आपन कुटिया एह से सजावे लगली कि का जाने कवना बेरा अचानक उनकर प्रभु उनका के दर्शन दे देस आ ऊ अपना समयाभाव में ओह बेरा चाह के भी उनकर कवनों सेवा ना कर पावस। एह से ऊ हमेशा अपना के अपना प्रभु के स्वागत खातिर तइयार रखस। भोर होते जंगल से फल आ फूल ले आवस। फूल से आपन कुटिया के सजा लेस कि जब उनकर प्रभु उनका कुटिया में जब प्रवेश करस तब उनका पैर एह कोमल फूलन पर पड़े। एकरा साथ ही उनका एह बात के भी चिंता रहे कि जब उनकर प्रभु के चरण उनका कुटिया पर पड़े त ऊ उनका स्वागत में जे फल उनका के अर्पित करस, ओह फलन में से उनका प्रभु के मुँह में कवनों खट्टा फल ना चल जाय एह से बेर आदि के फल चीख-चीख के मीठा चुन-चुन के रखत रहली।

बाकिर रामजी के प्रतीक्षा में माता शबरी के हजार बरिस बीत गइल। शबरी बूढ़ होखे लगली। बाकिर उनका अपना प्रभु के दर्शन ना भइल।

एने रामजी सीताजी आ लक्ष्मणजी के साथे वन अइलें। वन में रावण द्वारा सीताजी के हरण हो गइल। बाकिर रामजी एह बात से अनभिज्ञ खग, मृग आ मधुकर श्रेणी से सीता के हरणकर्ता के बारे में पूछत वन-वन भटकत रहलें। ओही क्रम में एक दिन माता सीता के खोज में भगवान राम ओह वन में पहुँच गइलें जवना वन में शबरी के कुटिया रहे। श्रीराम के ओह वन में रहत ऋषि लोगन से भेंट भइल। रामजी ओह ऋषि लोगन से शबरी के पता पूछलें आ जल ग्रहण करे खातिर तालाब का ओर आगे बढ़े लगलें। एह पर ऋषि लोग रिमजी से ओह तालाब से जल ग्रहण कइला से एकदमे मना करत ई कहलस कि एह तालाब से एगो अछूत स्त्री जल ले जाले। एह से हमनी के एह तालाब से जल लेहल छोड़ देहले बानीं। ऋषि लोगन के एह बात पर रामजी ओह लोगन से कहलें कि कोई स्त्री अछूत ना हो सके। काहेकि जे स्त्री मनुष्य के जन्म देले ऊ भला अछूत कइसे हो सकेले? एतना कहके रामजी शबरी के कुटिया के पता पूछलें आ शबरी के कुटिया में पहुँच गइलें। रामजी के प्रतीक्षा में हजार बरिस से रत शबरी के आँख रामजी के दर्शन से जुड़ा गइल आ ऊ रामजी के चरणन में आके गिर गइली। ऊ दुनु भाई के अपना कुटिया में ले गइली आ ओह लोगन के आवभगत करे लगली। रामजी के भक्ति में डूबल शबरी जे चीख-चीख के मीठ बेर रखले रहली ऊ ओह लोगन के खाये खातिर परोस देहली। रामजी ओह बेर के शबरी के प्रेम आ स्नेह के मिठास में डूबल समझ के स्वाद ले-लेके खा गइलें जबकि लक्ष्मणजी ओकरा के जूठा समझ के फेंक देहलें। एने माता शबरी रामजी से आशीर्वाद ग्रहण करके आपन प्राण त्याग देहली।

माता शबरी के स्थान आ धाम से प्रसिद्ध भारत में तीनगो स्थान बा। एह से शबरी के वास्तविक स्थान के लेके लोगन के बीच मतभेद बा। काहेकि केहू के कहनाम बा कि शबरी दक्षिण-पश्चिम गुजरात के डांग जिला के शबरी धाम ही असली शबरी धाम ह त कुछ लोगन के कहनाम बा कि छत्तीसगढ़ के शिबरी नारायण में ही शबरी धाम स्थित बा। बाकिर कुछ लोग एह दुनु स्थान के माता शबरी के स्थान माने से इनकार करत एह बात के खण्डन एह आधार पर करेला कि चूँकि माता शबरी मतंग ऋषि के शिष्या रहली एहसे ऊ स्पष्ट रूप से मतंग ऋषि के निकट के ही कवनों स्थान में रहत होइहें। हमनी के धार्मिक ग्रंथन में एकर भी चर्चा बा कि ऊ ऋषि- मुनि लोगन के सेवा करत रहली। एह से ई निश्चित रूप से कहल जा सकेला कि चूँकि कर्नाटक क्षेत्र में ही मतंग ऋषि के स्थान रहे आ आजो शबरी के गुरु के नाम से प्रसिद्ध मतंग ऋषि के नाम पर 'मतंगवन' कर्नाटक में ही बा। एकरा साथ ही माता शबरी के गुफा, पंपा सरोवर आ जवना स्थान पर रामजी के माता शबरी जंगली बेर खिअवले रहली ऊ स्थान भी कर्नाटक के बैल्लारी जिला में ही स्थित बा। एही से ई कहल जा सकेला कि माता शबरी के कुटिया निश्चित रूप से कर्नाटक में ही रहे।

एह तरह से भगवान विष्णु के त्रेता युग में रामावतार से जुड़ल एक से बढ़के एक रोचक कथा बा। जेकरा में से कुछ के हम रउआ सभे से साझा कइनी ह। उम्मीद बा पसंद आइल होई।

◆ ◆ ◆

डॉ. ज्योत्स्ना प्रसाद
पटना

दुर्दिन में कहीं ना जाए के

अबहिन साले भर पहिले जोधन अउरी रोधन दूनू भाई में अलगौजी भइल रहे, अबहिन तS जोधन आपन टूटल सम्हारत रहलें तले बड़की बेटी के बियाह कपारे आ गइल । ना कौनो नोकरी ना चाकरी, ना कौनो बेसी आथ अलम लेकिन खर्चा अपरम्पार । कवनोंगा अबे जेठकी के बियहले तले छोटकियो सेयान हो गइलि। ओकरी ब्यवस्था के सोचत रहलें तले भादो में मेहरारु माया की पेट मे दर्द हो गइल । पहिले तS सामान्य रोग जानि के दवा दारू भइल लेकिन आराम तनिको ना। ओ बेरा दवा दारू भी तS एतना ना रहे। जे जवन बतावे ले आवसु खियावसु | बरुआ फंकिया के तS गल्ला लागि गइल लेकिन दरद तनिको आराम ना। एक सप्ताह ले पीड़ा अंगेजत अंगेजत माया एकदम कमजोर हो गइली रास्ता चले के भी हूब ना रहि गइल|

केहू बतावल कि शहर में डॉक्टर सौरभ दूबे से देखावS। लेकिन ओ बेरा गाड़ियो घोड़ा चाहे रोड सड़क के भी तS दिक्कते रहे । खेता खेती, नदी नाला लांघत पैदल पाँच किलोमीटर गइला की बाद खडंजा सड़क मिले | ओकरे बाद लगभग तीस किलोमीटर खड़ंजा। पैदल टेक्सी अउरी बस से धक्का खात लगभग 80 किलोमीटर के दूरी तय करे के पड़े तब शहर आवे। सबसे बड़हन दिक्कत तS ऊ भादो के महीना रहे | खेत खरिहान सब पानी से लबालब भरल रहे। जेने देखीं ओने पानिए पानी | ओही में माया के दर्द अइसन उपटल कि बिन डाक्टर के देखवले कौनो चारा ना|

राति भर माया दरद से कल्हेवा कटली । उनके छटपटाइल देखि के करेजा फाटि जाउ | घर के केहू आँखि पर आँखि ना दिहल। दू दू गो छोट लड़िकन अउरी एगो सयान बेटी के लेके जोधन राति भर सुसुकि सुसुकि रोअलें। दुख के रातियो तS जल्दी ना बीतेला । बरखा कहे कि आजु ना बरसेब त कहियो ना । रातिभर रोअत अउरी ताकत बिहान भइल । लेकिन बड़का भिनुसारे जइसे चुहचुहिया चिरई मुनादी लगवली चिडोला पर लादि के चार जन माया के ले के चलि दिहलें । सब राहे चउआरे खेते खरीहाने पानी के धार बहे । ओहूमें बीच राहे लबालब भरल खरही नाला, ओके पार कइल सबसे बीहड़ समस्या रहे | ओ आफत में कवनेंगा लोग पाँच किलोमीटर गइल अउरी कइसे जोधन शहर पहुँचलें बतावल बड़ी मुश्किल बा |

लेकिन जोधन माया के लेके बारह बजे दिन में शहर पहुँचल रहलें । दुःख के समय आपन लोग के आदमी खोजेला | भरि रास्ता जोधन सोचत गइलें कि शहर में उनके भाई रोधन परिवार की साथे रहेलें । अगर लेट होई तS उहें जाके उनकी लगे रुकि जाएब, फेरु बिहाने होत फजीरे चलि देबि । रोधन के शहर में बड़ी ठाट बाट रहे । विभागो ओइसन की सब बड़े आदमी से उनके जान पहिचान रहे । जेने ताकसु ओने उनके खुशामद के लोग मुँह बवले रहे | पूरा एगो मकानिए भाड़ा में लिहले रहलें अउरी खूब ठाट बाट से रहसु । जोधन का रोधन पर बड़ी लाढ़ रहे कि रोधन छोट भाई हवें, उनके पढ़ावे लिखावे में उनहूँ के कुछु योगदान रहल बा, ओहू में छोट भाई हवें तS जेठ के मोल तS रखबे करिहें ।

डाक्टरी में माया के नम्बर लगभग चार बजे आइल अउरी डाक्टर की लग्गे गइली | डाक्टर साहब नाड़ी देखते कहि दिहलें कि इनका केंसर हो गइल बा । सुनते जोधन का काठ मारि दिहलस । अब का करीं ? चारू ओर अन्हारे अन्हार । छन भर में पूरा जिनगी लउकि गइल । केंसर के कवनो दवाइयो नइखे । माने माया से साथ के मुराद अब खतम, अब उनका मरहीं के बा, लेकिन मरि जाई तS हमार कौन गति होई । हमार परिवार तS अब खतम हो जाई । लड़िका हमार भीख मंगिहें सन । केहू देखवइया ना होई । जवान बेटी अउरी दू गो नादान लड़िका लेके अब हम कौन घाट के होखब । अगर दू गो पइसा ना कमाएब त खर्चा कइसे चली अउरी कमाए जाएब त लइकन के के देखी ?,, सब स्थिति परिस्थिति आँखि की सामने नाचे लागल अउरी उहें हॉस्पिटल में बइठि के दुनू परानी अहकि अहकि के खूब रोवे लागल लोग ।

हलाँकि दवा खइला की कुछू देर बाद माया के दरद तS ठीक हो गइल लेकिन ई सब होत जात देखावत सुनावत साँझि हो गइल । अब घरे जाएके बेरा कहाँ रहे कि जाउ लोग । जोधन मेहरारू से कहलें कि “बीहड़ रास्ता में ए बेरा गइल ठीक नइखे । ए बेरा चलS छोटकू किहाँ रहल जाई,, अउरी बिहाने चलि चलल जाई |,, लेंकिन माया मना करे लगली कि

"ना, दुःख में कहीं गइल नीमन ना हS । बीमारी हालत में कहीं गइले लोग बाउर मानी | चलीं स्टेशने पर राति बीता लिहल जाई अउरी भिनुसारे पहिला बस से निकल चलल जाई ।,, सुनते जोधन समझावे लगलें

“बाउर का मनिहें रे ? हम जेतना उनके कइले बानीं ओकरी टुकियो ऊ कS पइहें ? अरे राति में चिरई चुरुंग भी आपन ठाँव खोजेली | जब इहाँ ठाँव बटलहीं बा त दुःख काहें रे ? चलS एक राति के तS बाति बा, बिहाने चलि चलल जाई |,, जोधन ना मनलें,, उनके लिहले भाई रोधन की क्वाटर पर पहुँच गइलें ।

गोधूलि के बेरा रहे । रोड पर बल्व चमकि उठल रहे | रोधन आफिस से आ के लान में खटिया बिछा के बइठल दू तीन जन बगलगीर से बतियावत रहलें । तबले जोधन हाथ में झोरा अउरी साथे मेहरारु के लिहले पहुँचलें | देखते रोधन उठि के खड़ा हो, हाथ उठा के गोड़ लगलें, अउरी “कहाँ अइलहS लोगन ?” पूछलें । उनके देखते जोधन का आहि आ गइल, अउरी फफकि फफकि के रोवे लगलें | रोवते बतवलें कि "बबुनिया की माई का केंसर हो गइल बा" । सुनि के तनी रोधनो के मुँह पर भी गुनान के भाव आइल लेकिन बस एतने कहलें कि

"अच्छा चलS ठीक हो जाई ।",, कहिके घर मे ढुकि गइलें । एकरी बाद कइसन हालचाल अउरी कइसन खियावल पियावल, कुछु पूछहूँ ना निकललें । जोधन का अकेले बइठल बइठल कोठा कोठा परान घूमे लागल । 'अगर दवा ना कराईं तS मेहरारू मरि जाई । अउरी दवा कराईं त पइसा के दुरछक छूटि जाई, लेकिन तबो मेहरारू ना बची । एने बेटी के बियाहो कपार पर बा | दू दू गो लइकन के ले के अब तS हम कौनो घाट के ना भइनीं । ई का कइलS हे भगवान । अब हम बिला गइनीं । अब तS ना रोवे के आँखि जूरी अउरी ना पोंछेके कपड़ा । अब लागSता की भीख मांगे के पड़ी |,, सोचि के भीतरे भीतर कुहुके लगलें लेकिन कहसु तS केकरा से ?

ओने जब रोधन बो सुनली कि देयादिन का केंसर हो गइल बा त कइसन देयादिन की लगे बइठल अउरी कइसन हालिचाल पूछल | डरे उनके घरो में ना ढूके दिहली । दुआरी पर एगो बोरा बिछा देहली । ओहि पर माया बइठली | पानी पिये के कागज पर एगो लड्डु अउरी माटी की बर्तन में पानी आइल | ई जोग देखिके माया का बड़ी बाउर लागल, ऊ पानी ना पियली | बेमार देंहि बइठल बइठल जब डाँड़ दुखा गइल लेकिन तनी आरामो करे के जगह ना मिलल तS रिसिया के दुआरे मरद जोधन की लगे अइली | जोधन दुआरे अकेले गुमसुम भविष्य की चिन्ता में डूबत उतरात बइठल रहलें | दुख अउरी गुस्सा के मिश्रण लिहले उनकी सामने खड़ा भइली | उनके देखते जोधन पूछे लगलें “दरद ठीक बा ?,,

“ठीक का बा, सही में रउरा कौनो आदमी ना हईं | चलीं चलल जाउ ।,, दुआरे बइठल जोधन भी ई बात महसूस करते रहलें | चिहाके ऊ मेहरारु के मुँह लगलें ताके “ई लोग हमसे जोगाता | ओ लोग का बुझाता कि हमसे छुआ जाई तS उनहूँ का बेमारी हो जाई | घरो में ना ढूके दिहली हS | बोरा पर बइठल बइठल डाँड़ दुखा गइल बा | पानी पिये के कागज पर लड्डु अउरी माटी की बर्तन में पानी आइल हS | अब इहे दिन नू देखे के बाकी रहल हS की चमइनियो के मोल ना रही | एहिसे हम कहत रहुईं कि मति चलीं | स्टेशन पर रहि जाइल जाई | रातिए नू बितावे के बा, स्टेशने पर बीत जाई । लेकिन रउरा ना मनुईं | अबो से चलीं, स्टेशन पर रहल जाई ।,,

माया के बाति सुनि के जोधनो का तनी बाउर लागल लेकिन का करसु । मरद जाति अगुतइले काम ना चली । सोचि के उनके समझवलें कि "अब गइल ठीक नइखे | एइजा ना आइल रहितीं जा तS दूसर बाति रहल ह । लेकिन अब आ के गइल ठीक ना कहाई । छोटकू का बाउर लागी । अपनी ओर से गलती कइल ठीक ना हS । सूते के बोरा दिहले बाड़ी नू । ओहि पर सूति रहल जाई । राति कटि जाई । बिहाने चलि जाइल जाई ।,, जोधन समझा बुझा के माया के भीतर भेजि दिहलें अउरी फेरू ऊ जाके बोरा पर बइठि गइली।

तबले एगो टीन की थरिया में उनके भोजन आइल । ऊ थरिया बुझाउ कि कवनो भीखमंगा से माँगि के आइल बा, फूटल रहे । देखते माया जल भुन के अंगार हो गइली । 'हम अइसन अछूत बानीं कि हमके भीखमंगा की बर्तन में खाएके मिलल बा । जहाँ मरजाद ना, उहाँ जाए से का फायदा । छन भर में ही पूरा जिनगी लउकि गइल | सोचे लगली “अब हमरा त मरहीं के बा, लेकिन अइसन दर दयाद की भरोसे हमरी बेटा बेटिन के का हालि होई ! हमरी लइकन से ई भीख मंगवा दी, नोकरो के ओकनी के मोल ना रहे दी |,, आँखि से झरझर झरझर आँसू गिरे लागल | भोजन के हाथो ना लगवली, चट उठली अउरी जोधन से जोर से कहली "हां, चलीं ! हमार लड़िका रोअता ।,, कहि के घर मे से निकल के चलि दिहली । पीछे पीछे मनावत जोधन अइलें लेकिन जब ऊ ना मनली तS उदास मन से उहो जाके आपन झोरा उठवलें अउरी पीछे पीछे चलि दिहलें । लेकिन रोधन पूछहूँ ना निकललें कि काहें जइब लोगन |,,

बस स्टेशन पर आके चदरा निकालि के बिछावल लोग | जोधन गइलें त ठेला पर से पूड़ी कीनि ले अइलें, खाइल लोग | पूड़ी खात माया कहे लगली,, जब अइसन रोग पकड़ा गइल तऽ अब हमार दिन तऽ धराइए गइल बा ।लेकिन हमरी मुअला पर हमरी लड़िकन के बेदीन मति बनाएब । दुर्दिन में कहीं गइल ठीक ना हऽ । अपनी लोग पर लाढ़ तनिको जनि करब ।,, कहत माया रोवे लगली । खा पी के उहें स्टेशन पर चदरा बिछा के सूतल लोग ।राति के बारह बजे बस मिलल | राति भर में घरे चलि आइल लोग |

◆ ◆ ◆

सत्य प्रकाश शुक्ल बाबा
कुशीनगर, उ0 प्र0

खाँची भर भरोसा

प्रेम एगो अइसन लड़िका जिनका पर घर परिवार के पूरा जिम्मेदारी रहे, ऊ अपना परिवार में बड़ रहलें एहीसे उनका हर चीझु के ख्याल रखे के रहे,अपना परिवार के चलावे के रहे उनकर छोट छोट भाई कुल के पढाई लिखाई के भी ध्यान रखे के रहे;उनका बाबूजी के ना रहला के कारण ऊ जल्दिये कमाए चल गइलें अउरी अपना परिवार के देख रेख में सहयोग करे लगलें।

दौर 2006 मे नया चलन में फेसबुक रहे, तs ऊ आपन id बनवलें फेसबुक पर, बहुत मित्र लो रहे बाकिर ऊ एगो मित्र के मित्री रहली, उनका कॉमेंट पर नजर परल उनके तs उनका के फॉलो करें लगलें। अक्सर अपना मित्र के पोस्ट पर उनकी कॉमेंट के लाइक करसु बाकिर हिम्मत ना होखे कि कुछ कॉमेंट लिखसु। लगभग एक साल तक फॉलो कइले के बाद बेचारू हिम्मत कइलें आ उनका के फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज दिहले , उहो उनके स्वीकार करे में समय लगा दिहली काहे कि उहो सोचत रहली कि पता ना कइसन विचार होई बिना जानल सुनल ऊ केहू के स्वीकार ना करसु।

लगभग 2 महीना बाद मन बना के स्वीकार कइली। एने प्रेम के मन मे बहुत खुसी जागल कि आज त दोस्त बन गइली बाकिर आजतक ले केहु लइकी से बात ना ह ई सोच के डर लागता। तले अचानक से एक दिन शर्मिला के मैसेंजर में hi लिखल देख के प्रेम खुसी के मारे उछल गइलें।

बात के शुरुआत भइल दोस्त के रूप में फिर दोस्ती एतना गहिरा हो गइल कि दुनू जना एक दूसरा के दुख-सुख के बात आपस मे शेयर करे लागल लो। एक दूसरे पर एतना भरोसा हो गइल दुनू जना के कि आपन घरेलू बात, पढाई के बात, कालेज के बात आपस में शेयर करे लागल लो।

एक दिन शर्मिला के मन मे अचानक प्रेम खातिर दिल मे प्यार जागल आ ऊ भरोसा कइली अउरी उनसे कहली कि देखीं राउर बात विचार त बड़ी नीक बा ,रउरा पर बहुते भरोसा बा हमरा अगर रउरा कही त बात आगे बढ़ावल जा। प्रेम कहलें कि हम कुछ बुझनीं ना? का कहे चाहतानीं रउरा तनी हमके खुल के समझाईं ।

शर्मिला के भरोसा रहे आ ऊ कुछऊ मन में राखे ना चाहत रहली। प्रेम के सबकुछ साँच-साँच बता दिहली आपन बात। उहो सुनला के बाद कुछ देर फेरा में पड़ गइलें। काहें कि ऊ कुछ अइसन सोचलहीं ना रहलें। खैर 2 दिन बाद उनकर सहमति बनल। कहलें कि घरवाला जइसे कही लो वइसे होई।

दुनू जना के ऊपरवाला पर भी बहुत भरोसा बा कि कुछ अच्छा होई। इहे सोच के अपना-अपना घरे बता दिहल लो। घरवाला के भी आश्वासन मिलल बाकिर खुल के केहू अभी कुछ ना कहल। प्रेम आ शर्मिला के आजो खाँची भर भरोसा बा कि जरूर कुछ अच्छा होई। दुनू जना आज भी इंतजार में बा लो।

◆ ◆ ◆

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

रात भर बात मन परल बाटे

रात भर बात मन परल बाटे,
साँच कही हियरा जरल बाटे।

हम केतनो करेजा फारि देखाई,
लोग के मन मे कइटी भरल बाटे।

बाँचि ना पावल सिकहर के दही,
बिलाई के नजर उपरे गड़ल बाटे।

सगरो मलाई खाके छाछ छोड़ देला,
रोहानी देह पर तनिको ना चढ़ल बाटे।

बनेला शहर के बड़ हुँसियार लइका,
हमरा गाँवे से इनके शहर बनल बाटे॥

◆ ◆ ◆

भोजपुरी भाषा मे गजबे मिठास बा

भोजपुरी भाषा मे गजबे मिठास बा
जे ना पढ़ल लिखल ऊ आजो निरास बा

मिल त गइल अंग्रेजी पढ़ के नोकरी
बाकिर माईभाषा बिना सब बेकार बा

अंग्रेजी पढ़ के जे भी गइल समाज मे
ऊ आजो बंचित बा अपना संस्कार से

भोजपुरिया लो आजो गाँव समाज मे बा
माई बाबू भाई से भरल पुरल परिवार बा

माई के चरण में जवन लोक रस सुख बा
ऊ अंग्रेजी के हवा में घुमत घोड़पडास बा

लोकरस के आईं आवाज में बुलंद करीं
आपन माटी बचावल आपन पहचान बा

जवन मजा गोझा लिट्टी आ चोखा में बा
ओकरा आगे बर्गर पिज्जा सब बेकार बा

पढ़ीं लिखीं आ बोलीं भाषा भोजपुरी
हमरा त अपना माईभाषा पर नाज बा

◆ ◆ ◆

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

रंगि देतऽ हमहूँ के कान्हा

रंगि देतऽ हमहूँ के कान्हा
अपने भक्ति के प्रीति से

सगरो जग लगे रंगहीन अब
फीका -फींका अब बातचीत
संघतिया अब केहू ना लागे
स्वारथ के कारण बने सब मीत
आजिज आप गइलीं अब हम त
दुनियाँ के एह रीति से,
रंगि देतऽ हमहूँ के कान्हा
अपने भक्ति के प्रीति से।

कोरा रंग बा हिय में ज्यादा
ऊ रक्त नियन भगवा होइ जात
तन -मन फूल नियन पीयर
मन रसराज के अमवाँ होइ जात
आपन -आन से परे होइ जइतीं
बचि जइतीं कलुष कुरीति से,
रंगि देतऽ हमहूँ के कान्हा
अपने भक्ति के प्रीति से।

राधा रानी संग होरी खेलऽ
ब्रजवासिन के भाग जगावऽ
दे -दऽ दरस मनोहर छवि के
आशा दे -दे के न बहकावऽ
दरस देवे में स्वीकार शर्त बा
तुहरे हर एक नीति के,
रंगि देतऽ हमहूँ के कान्हा
अपने भक्ति के प्रीति से।

◆ ◆ ◆

सिद्धार्थ गोरखपुरी
गोरखपुर, उ. प्र.

कवनो गाड़ी तरे ई चले जिदगी

कवनो गाड़ी तरे ई चले जिदगी,
ब्रेक लागत रहे पर बढ़े जिदगी।

काल गति आ समय के मिला के चलीं,
जिदगी त हवे इक सुहाना सफर।
राह के बीच में गर चढ़ाई मिले,
तब लगाईं सुनीं रउआ पहिला गियर।
धैर्य के बल से परबत चढ़े जिदगी।
ब्रेक लागत रहे पर बढ़े जिदगी॥
कवनो गाड़ी तरे.....…

आगे पीछे अगल आ बगल देख लीं,
सब केहू ना इहाँ होश में अब चले।
रोड खाली मिले त चलीं तेज पर,
ब्रेकरो बा बहुत ध्यान में ई रहे।
बा रुकावट भले ना रुके जिदगी।
ब्रेक लागत रहे पर बढ़े जिदगी॥
कवनो गाड़ी तरे.....

आपदा के बदे कुछ बचा के रखीं,
कहि के आवे कहाँ कहियो संकट नया।
का पता राह में कब जरूरत पड़े,
तेल रीजर्व में रउआ राखीं सदा।
कुछ रहे हाथ में तब लड़े जिदगी।
ब्रेक लागत रहे पर बढ़े जिदगी॥
कवनो गाड़ी तरे.....

देहि दुनिया में सबसे ई अनमोल बा,
एइमें कवनो खराबी ना आवे कहीं।
राह कइसे चलबि कुछ बिगड़ जे गइल,
सर्विसिङ्गो समय से करावत रहीं।
तन निरोगी रहे ना झुके जिदगी।
ब्रेक लागत रहे पर बढ़े जिदगी॥
कवनो गाड़ी तरे.....

◆ ◆ ◆

आकाश महेशपुरी

दवा-दारू

एगो गांव में एगो पंडीजी रहनी।उनका खोखी ध लिहलस।आ खोखिया एतना लरछुत रहे जे पंडीजी कुल उपाय क के देख लिहले उ ओराये के नाम ना लेव।

एक दिन एगो बाबू साहेब भेटा गइले।मार के फिट रहले।पंडीजी से उनकर समस्या पुछले कि काहे एतना ढांसत बानी।

पंडीजी आपन समस्या बतवनी त बाबू साहेब दवाई के सीसी निकलले।कहले,पंडीजी हई दवाई ली।खोखी ठीक ना भइल त कहेब!

पंडीजी सीसी देखते बुझ गइले कि ई कौन दवाई ह।पहिले त ना नुकुर कइले,पर बाबू साहेब जोर दे के समझवले आ उपाय बतवले कि कइसे दवाई लेबे के बा।लइका से कहीं कि जो एक गिलास पानी दे।दाढ़ी बनावे के बा।...आ जब पानी आ जाव त चोरी से दु ठेपी चुआई।आ घटक श्री सीताराम हो जाई।

दु तीन महीना बाद बाबू साहेब के भेंट पंडीजी के लड़िका से भइल त बाबू साहेब पुछले, पंडीजी के का हाल बा?उहाँ के खोखी त ठीक हो गइल होइ?

लड़िका कहले,खोखी त कबे ठीक हो गइल मगर उनकर दिमाग गड़बड़ा गइल बा।

का हो का गइल बा? बाबू साहेब चिहा के पुछले।

लड़िका कहलस पहिले दिन में एक बार दाढ़ी बनावे के पानी मांगत रहले ह।अब दिनभर में चार हाली माँगतरे।.....

ई त भोजपुरी के लोक कथा ह।पता ना सांच होई कि झूठ।मगर हमरा लगे दू ठो सांच कथा बा।पहिलका घटना के पात्र हमार दिदी बाड़ी।जब उ एक साल के रहे त एक रात बहुत जोर के हंफनी उपटल।अम्मा बतावेले कि ओह दिन उ छपरा में नानाजी के लगे रहे।रात में दस से ऊपर होत रहे।जाड़ा के रात।डॉक्टर वैद्य के स्थिति आज से 66-67 साल पहिले बहुत अच्छा ना रहे।संजोग से छपरा के ओह समय के नामी डॉक्टर हरदन बाबू से नानाजी के परिचय रहे।रात में उनकरा घरे पहुंच के आवाज देहनी।आवाज पहचान के डॉ साहेब बाहर अइनी।...का हो कमल!एतना रात के?

नानाजी आपन नतिनी के हाल बतवनी।...हांफ से परेशान बिया।छाती धौकनी जइसन चलता।

डॉ साहेब भीतर गइले।एगो छोट सीसी में सफेद तरल पदार्थ भर के ले अइले।हमरा नानाजी से कहले,चम्मच में भर के पूरा चम्मच पिया दीह।..काल सबेरे क्लिनिक में अहिह।

दूसरा दिन सबेरे नानाजी उनकरा क्लिनिक गइनी।कहनी, रात के दवाई से बहुत फायदा भइल।चैन से सुतल हिअ। डॉ साहेब हँसले।...दवाई त अब देम।रात त हम ब्रांडी देहले रहनी ह। दुसरका घटना हमरा एगो कलीग के घर के ह।भरतीय स्टेट बैंक के सिवान बाजार ब्रांच में हमनी के साथी रहले।नाम ना बताएम, मगर जात बता देत बानी।बाबू साहेब हउअन।कहानी के बाबू साहेब अइसन डेली मारे वाला हउअन।उनका मेहरारू के पंडीजी अइसन खांसी परेशान कर देले रहे।एक रात झनक के कहली, पता ना कौन दवाई रउआ देत बानी।कौनो फायदा नइखे।रात भर खांसते रह तानी।आज कै रात हो गइल चैन से सुतला।

अभी ढेर रात ना भइल रहे।रात के 9 बजत रहे।पत्नी के देखा के बाबू साहेब घर से निकलले।फेर चोर अइसन घर मे घुसले।पत्नी किचेन समेटत रहली।छुपा के रखल रम के बोतल निकलले।एक पैग बनवले आ पत्नी के पास जा के कहले,देख! ए बेरा जा के डॉ ज्ञानादित्य से तहरा खातिर दवाई ले के आवतनी।जनबे करेलु डॉ साहब के दवाई सिरप में रहेला।कहनी ह कि एके बेर में पिया देबे के बा।...तनी सा कड़वा लागी।नाक दबा के घोंट जा त।

पत्नी बेचारी का बुझस।डॉ ज्ञानादित्य के बारे में जानत रहली।नाक दबा के पी गइली।

दोसरा दिन सबेरे उठली त कहली, रात के दवाई बहुत फायदा कइले बा।रात चैन से सुतल बानी।इहे दवाइया पहिले काहे ना ले आइल रहनी ह।ओतना दिन से हम परेशान रहनी ह।

बाबू साहेब ई किस्सा सुनावत रहले त हम पूछनी कि बतवल कि ना?

कहले कि जान लेती त घर में बवाले हो जाइत।

हमनी के जोर से ठहाका लगवनी सन।

बाह रे दवाई!

◆ ◆ ◆

मनोज कुमार वर्मा
सीवान(बिहार)

गंगा गीत

पं॰भूषण त्यागी
वाराणसी

माई तोर पानी, बताईं कइसन पानी।
भोरवा में सोना लागे सझियाँ में चानी॥

कवनो राजा, तप में जिनिगिया जराइ के।
बड़ा सुख पवलस ऊ तोहके ले आइ के॥

पुरुखन के दिहलू मइया आ के जिदगानी॥
माई तोर पानी, बताईं कइसन पानी।

सगरी पुरान पोथी गाथा तोर गावे।
अमरित पानी तोर पंडी जी बतावे॥

तट तोरे तुलसी जी लिखले कहानी॥
माई तोर पानी, बताईं कइसन पानी॥

माई के किनारे जनि मटिया जरावऽ।
राखी पाती ओकरे न गोदिया गिरावऽ।
नाहीं त उतरि जाई देसवा के पानी॥

माई तोर पानी, बताईं कइसन पानी॥
भोरवा में सोना लागे सझियाँ में चानी॥

◆ ◆ ◆

धागा ओकरे हाथे दीहऽ

धागा ओकरे हाथे दिहऽ
जे किस्मत के तुरपाई कर दे

बोली सूई नियर चुभे लेकिन
फाटल रिश्ता के सिलाई कर दे
धागा के उलझल गुच्छा के
गाँठ नेह के लगा सीधा कर दे

होकर यार फकीरी अइसन
खर्चा पाई पाई कर दे

कंगाली में रोटी जइसन
लागे कबो ऊ माई जइसन
कइसे हम समझाईं तोहके
प्रेम जतइह ओकरे से
जे तोहरा सगरे दुख के पराया कर दे

मायाजाल तिमिर गहूं बइठल
तबहूं अनुबंध सितारा कर दे

धागा ओकरे हाथे दिहऽ
जे किस्मत के तुरपाई कर दे

◆ ◆ ◆

नम्रता राय ठाकुर,

लबरा

सभ आग-पाछ बिसार के,
देखऽ कइसे मनियात बाड़न।
आपन-अनकर भुलाइ के ,
ठँइए-ठँइए फिफियात बाड़न।

भोंपू -टेंट - दरी लगाई के,
खूबे चिचियात बाड़न।
जमवड़ा देख आपा खोइ के,
अन्टसन्ट बरबरात बाड़न।

अँइचा-पईंचा भुलाइ के,
नगदे माल उड़ावत बाड़न।
वादा के सूली पऽ ,
लोगन के चढ़ावत बाड़न।

सभ समय खउराइ के,
चुनाव घरी भेंटाइल बाड़न।
समस्या से मुँह फेर के,
काम के बात प अँउजाइल बाड़न।

सभे से नाता जोड़ के
चाचा-बाबू गोहरावत बाड़न।
फेरू बोट पावे के,
हर जोगाड़ भिड़ावत बाड़न।

◆ ◆ ◆

उमेश कुमार राय
भोजपुर (बिहार)

कमे समय में चल गइली माई

कमे समय में चल गइली माई --!
घर - संसार छोड़ के,
यदा- कदा सपना में ऊ
दर्शन दे के लइकन से
पुछ लेवेली कुछ अंतरंग सवाल --
निरहा लइकन निःशब्द
निरेखत रह जाला लोग
अश्रुपूर्ण नयन से
माई के कान्तिहीन आकृति --
एक दिन बाते बात
निकल गइल लइकन के
मन के उदगार ---- माई !
घर में सभे केहू बा
दुलार करेवाला बाबूजी
दादी माई, दादा जी
नोकरानी, चाची आ चाचा जी --
आउर बा आलमारी भरल कपड़ा,
सजावल जाला टेबल पर
रंग- बिरंग सुगंधित व्यंजन,
बाकिर ऊ भोजन में कहाँ बा ममत्व
जिनगी से जइसे हेरा गइल अपनत्व,
साँझि - बिहनहीं केनहूँ से
घूम,पढ़ के हमनी आईं,
राउर मालावाला तस्वीर में
ना देखेनी सन माई ---!

◆ ◆ ◆

सुरेन्द्र प्रसाद गिरि
बारा, नेपाल

मच्छर

एक दिन सपना मे एगो
मच्छर हमके डाँटे लागल
पीरा सुनि के मच्छर के
करेजा हमरो फाटे लागल

हम पुछनीं कि मच्छर भाई तू
खुनवे चुसे नू आइल बाड़ऽ
टोकत नइखीं तब काहे तू
हमरा पर कोहनाइल बाड़ऽ

ऊ कहलस कि हम का चूसीं
तू चारू ओर से चूसल बाड़ऽ
पेट पर हमरा लात मारि के
केतना ठाट से सूतल बाड़ऽ

हम कहनीं कि आजु ले हम
मच्छरदानी एगो तननीं ना
भइल बियाह तहिया से अबले
मच्छर का होलें ई जननीं ना

कहलस मच्छरवा इहे बतिया
त हमहूँ कहल चाहत बानीं
मरदवाला खून कहाँ गइल ई
बियहवे के दिन से आहत बानीं

हम कहनीं कि हमरा के तू
कहाँ कहाँ अझुरावत बाड़ऽ
साफ साफ ना कहि दऽ मरदे
बुझउवल काहें बुझावत बाड़ऽ

कहलस कि हम टपरा गाईं
आ तू गइबऽ झप तेवड़ा हो
सगरो खून मेहरारू चुस लसार
हम का चुसीं अब घेंवड़ा हो

एतना सुनते आँखि खुलल
मच्छर के बाति बुझाइ गइल
ओह दिन से हम दुबरात बानीं
मेहरारू जब से आइ गइल

हृदया विशाल कहलें कि जो
कानपातो के फेर मे परतीं ना
मच्छरन से कटवा लेतीं बाकी
जियते बियाह हम ना करतीं ना

◆ ◆ ◆

हृदयानंद विशाल

भोजपुरी कुण्डलिया

तेज घाम

चानी बा चनके लगल, अइसन होता घाम।
कतहूँ आवत जात में, जरि जाता अब चाम।
जरि जाता अब चाम, लूह लगला के डर बा।
छन-छन लगे पियासि, घाम के होत असर बा।
एसे करीं बचाव, साथ लीं छतरी-पानी।
जाईं पियत छंँहात, ढाँपि के आपन चानी॥१॥

धरती भइलि उदावँ

बारी-फुलवारी कटल, कटिगे जंगल-झाड़।
धरती भइलि उदावंँ अब, नंगा भइल पहाड़।
नंगा भइल पहाड़, बताईं अब का होई।
होई सभे तबाह, एकदिन मनई रोई।
जनसंख्या के बाढ़ि, लियावत दुर्दिन भारी।
उपजत पसरत लोग, काटि बारी-फुलवारी॥२॥

झाँखी /जंगल

झाँखी जंगल बाग वन, चलीं बचावल जाव।
बने बसेरा जीउ के, कन्द मूल फल खाव।
कन्द मूल फल खाव, साँस ले सुद्ध हवा के।
करते आइल खूब, वनस्पति काम दवा के।
मानबि जो ना बाति, मुसीबत लउकी आँखी।
सूखा परी अकाल, कटी जदि जंगल झाँखी॥३॥

भक्त प्रहलाद

(आधार छन्द-सुन्दरी सवैया)

प्रहलाद रहे प्रभु भक्त महा हिरकस्यप बाप रहे अभिमानी।
भगवान बने जग में अपने सबसे पुजवाइ रहे सैतानी।
प्रभु-भक्ति विरोध में होइ खफा सुत के बहु भाँति मुआवन ठानी।
कबहूँ गजराज कँचारी चहे कबहूँ गिरि से ढहवावत मानी।१॥

हरि के प्रहलाद न नाँव तजे भलहीं पितु ओहि डुबावस पानी।
भलु देइ हलाहल जान हते अरु झोंकत भार हुतासन घानी।
थकि हारि जरावन जा फुववा खुदही जरि के जयछार नदानी।
भयभीत न बा तनिको बचवा कवनो बिधि होइ न भक्ति क हानी।२॥

जब अन्त घरी पितु क्रोध बढ़े तलवार उठाइ चले अभिमानी ।
नरसिह क रूप धरीं प्रभु जी प्रगटीं गदबेर कहें मुनि-ज्ञानी।
बरदान क पालन हेतु निखोरत जाँघ सुताइ हनीं खलकानी।
बनिके रखवार उबार करीं, सब भक्तन के निज सेवक जानी।३॥

◆ ◆ ◆

माया शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक- सिरिजन

पंचदेवरी, गोपालगंज

बिहार

कहीं ना मिलल गाँव हो

गाँव के खोजे गाँव में गइनीं,कहीं ना मिलल गाँव हो,
ना जाने कब गाँव से उखड़ल, हमरा गाँव के पाँव हो!

ना रहल ऊ बर आ पाकड़, रहल ना बुढ़वा पीपर,
जहाँ बइठ के गाँव के मुखिया, पंच के बनस ईशर!
खतम भइल इनार ऊ जवन, सभकर प्यास बुझावे,
ढ़ेकुल, रहट सभ बिलाइल, कुछऊ ना बाँचल गाँवे!

पोखरा पोखरी बउली भठल, चले ना उहवाँ नाव हो,
ना जाने कब गाँव से उखड़ल, हमरा गाँव के पाँव हो!

हर जुआठ आउर हेंगा हेंगी बाँचल ना कवनो घरे,
बरही एड़ा हरनधी जोता केहुओ के याद ना परे!
फेरा, धवरी, धवरा, सोकना बैल ना कतहीं लउके,
नादहा बान्हल छोटका बछरु देखि ना हमके छउके!

भिनुसरवा ना कोइलर बोले, ना कौआ के काँव हो,
ना जाने कब गाँव से उखड़ल, हमरा गाँव के पाँव हो!

दउरी, मउनी, मोना, देहरी, छबना डगरा-डगरी,
बरुआ, सुआ, काँटा, कुरुस, गाँव बा छोड़ले सगरी,
भइल लंगोटा धोती गायब रास ना आवे पगरी,
कलशा, ढकनी दीया,पतुकी छोड़ देले बा नगरी!

शहर के हवा आके इहवाँ, दिहलस केतना घाव हो,
ना जाने कब गाँव से उखड़ल हमरा गाँव के पाँव हो!

छेंका, तिलक अउर बिआह के रीत भुलाइल जाता,
मैरेज हाॅल के सवख बा धइले माड़ो नाहि छवाता,
प्रीतिभोज से प्रीत बिलाइल पंगत पाँत नपाता,
केहु ना कहे अउरी खाईं, लोगवे मांग के खाता,

संस्कार के लुत्ती लागल बदल गइल सब भाव हो,
ना जाने कब गाँव से उखड़ल हमरा गाँव के पाँव हो!

दर देयाद में बाँचल नइखे खून के जइसन नाता,
के दादा, के काका नाती पोता नाहि बुझाता,
सास पतोह भौजाई ननद के नेह के सोत सुखाता,
भाई से भाई के झगरा कहियो ना फरियाता,

नाता से अब नेत भुलाइल डगमग करे नाव हो,
ना जाने कब गाँव से उखड़ल हमरा गाँव के पाँव हो!

सबका खातिर बोझ हो गइलें बूढ़ बाप महतारी,
रोज पतोहिया ताना मारे रोज बखाने गारी,
सास ससुर के खातिर रोटी भइल बनावल भारी,
ओठ साठ के बेटा बइठल, ई कइसन लाचारी,

"रामसागर' अपने गाछ ई रोपल देला नाही छाँव हो,
ना जाने कब गाँव से उखड़ल हमरा गाँव के पाँव हो!

◆ ◆ ◆

रामसागर सिह
सिवान, बिहार

चादर झाँझर भइल

जनमे से ओढ़ले बानीं, एकहीं ग़ो चादर
चादर झाँझर भइल..
लउके लागल अब ई आँजर-पाँजर..
चादर झाँझर भइल !

एही रे चदरिया पर रहीं अगराइल,
डाँड़े माथे एही में रहीं लपटाइल,

बाँचल ना नीमन ई तऽ कइलो प आदर
चादर झाँझर भइल...
लउके लागल अब ई आंँजर पाँजर..
चादर झाँझर भइल !

अब रे चदरिया भइल जाता चिथरी,
तोपी ले गोड़, जाला माथे से उतरी,

फाटल जाला अइसे जइसे, फाटि जाला बादर
चादर झाँझर भइल,
लउके लागल अब ई आँजर-पाँजर
चादर झाँझर भइल !

सुई डोरा ले के नाहीं सिअले सिआता,
सटले ना 'रामसागर' पेवनो सटाता,

तजऽ तत्काल ना त मिलिहें निरादर
चादर झाँझर भइल,
लउके लागल अब ई आँजर-पाँजर
चादर झाँझर भइल !

◆ ◆ ◆

रामसागर सिंह
सिवान, बिहार

मधुमास

ओठ में खैनी दबवले
चल रहल बाड़न राम खेलावन
रबी के फसल देख
हँस रहल बाड़न राम खेलावन।

धरती धानी के रंग बदलल
मटर, चाना, गदराइल बा
मोजर-मोजर मधुआ लागल
अमवो अब बउराइल बा।

गाँव-गाँईं फागुन उतरल
ढोल-झाल में होली
बुढ़ियो भउजी का चाहीं
बुटीदार रेशमी चोली।

पिछुवारे फरहद फुलाइल
जंगल में खिलल पलाश
सीसो का टिकुली में झलकत
पिया मिलन के आस।

कोइली सन्देशा लेके अइली
आइल बा मधुमास!

◆ ◆ ◆

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव

महल्ला में नया - नया राम बाबू की जनाना की मांग में सेनुर के जगहा हरिअर रंग लगावल देख के सब मेहरारुअन का बड़ा ताज्जुब भइल। आखिर एक दिन लाजो भउजी पूछिए देहली-"सब एहवात मेहरारू लोग मांग में सेनुर लगावेला। रउआ हरिअर रंग काहे लगाइला? राम बाबू के जनाना कहली-"रउआ केहू से कहेब मत। हमार मरद रेलवे में गार्ड नू बाड़न।"

फाटक बाबा-"जय हो जजमान। आरे जजमानी खिसिआइल बाड़ी। कहत रहली ह कि मलिकार का त हमरा भाई बुलाकी के शादी-बियाह के चिन्ते नइखे। बुझाता ओकरा एहू साल हरदी ना चढ़ी।लोहा सिह-"फाटक बाबा! खदेरना के माई बिना मतलब का चिंता करती है। फाटक बाबा उसको बोलिए फिकिर जन करे। एह लगन में हम अइसा जोगाड़ बइठाएगा कि बुलकिया का हरदी-चूना दुनू चढ़ेगा।"

जज मुजरिम से-" का रे तोरा लाज सरम बा कि ना। दू साल में ई तिसरका बेरा फेरु आ गइले।"मुजरिम-"सरकार कवना बात के लाज सरम। रउआ रोज-रोज आइले त कवनो लाजे नइखे। हम त दू साल में तीने बेर नू अइनीं ह।"

जज मुजरिम से-"मैंने तुम्हें कहीं देखा है।"मुजरिम-"देखले होखब हजूर। हम मुन्नी बाई का कोठा पर तबला बजाइले।"

पत्नी अपना पति से-"ए जी सुनऽतानीं। दू किलो मटर खरीद लीं?पति-"ले लऽ। जतना मन करे। अउरो कुछ लेवे के होखे त ले लऽ।"पत्नी-"हम राउर राय नइखीं पूछत। दू किलो मटर छिल लेब नू कि कुछ कम क दीं।

निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

मजदूर ना, मजबूर

तीन साल के रुचि फोन पर अपना बाप संजय से शिकायत करत रहे...।

बोली त साफ़ निकलत ना रहे बाकिर ओहि टूटल- फुटल शब्दन के सहारे बाप से आपन नाराजगी जतावे।

"पापा हम लउआ छे बात नइखीं कलत! लउआ ख़ाली कहिले बाकिल कबो आइले ना...।

बताईं मम्मी केतना लोवत लहली ओ दिन, उहो लउआ छे नालाज बाड़ी...। लउआ छे छभे नालाजे बा.., काहेकि लउवा कह-कह के नइखीं आवत। बताईं बाबाजी के तबियत खलाब लहता आ पइछा लहते नइखे जे दवाई होखे...। चाचाजी पढ़े नइखीं जात घरे लहतानीं, लउवा अइटी तब नू छब ठीक होइत..!"

संजय बेटी के बात सुनि खामोश रहला के सिवाय कुछ कह ना पावस। रुचि तनी दम भरलस त फेर शुरू हो गइल...

"एतना लोग बा, छभे लउआ चलते दुःखी लहेला। लउआ बताईं एहिजा एगो हम ही त छमझदाल नू बानीं, त हम अकेले केतना लोग के छमझाईं? लउवा आ ना जाईं पापा लउवा ख़ातिर हमहूँ लोवेनीं...। एहिजा देखीं लोहित के पापा ओ लोग छे केतना प्याल कलिले, जे ऊ लोग के छंगहि लहिले...। त लउआ हमनीं छंगे काहे ना लहिले? लउआ हमनीं के याद ना आवेला का.?"

आगे ऊ कुछु कहो... संजय के पास एतना हिम्मत ना रहे जे सुन लेस। काहेकि बेटी के बात सुनि हृदय कई टुकड़न में चटख गइल रहे..।

फफक-फफक के रोवे लगलें। मन में विचार आवे जे काश उहो पंछी रहतें त अभिये उड़ के अपना करेज के टुकड़ा के पास पहुँच जइतें...।

लेकिन मजबूर रहलें! काहेकि देश से बाहर बंधुवा मजदूर रहलें...।

लगभग साढ़े तीन बरिस हो गइल रहे संजय के आपन वतन छोड़ परदेशी भइले। जब घर-परिवार, खेत-खलिहान, देश सब छोड़ि आवत रहलें तब रुचि अपना माई के कोख में पलत रहे...। उनका ईहो मालूम ना रहे जे जन्म लेबे वाला हमर पहिला संतान पुत्र होई आ कि एतना सुन्नर पुत्री..।

तीन बरिस त कहिए बीत गइल रहे उनका कुवैत शहर के ए बस्ती अउर ए कमरा में...। दरअसल ऊ बरिस मार्च में उनका कम्पनी से तीन साल के एग्रीमेंट पूरा हो गइल रहे। अउर चइत के पहिला हप्ता के टिकटो हो गइल रहे। तले अचानक से कोरोना बीमारी के कारने समूचा लॉकडाउन लाग गइल। जवना के वजहे सारा उड़ान रद्द कर दिहल गइल। कम्पनी फाइनल त कर देहले रहे लेकिन सबके मजबूरी देखि फैसला कइलस जे चार महीना तक ऊ लोग के खर्चा उठाई। आ ए बीच में अगर फ्लाइट शुरू हो जाता त ठीक नाहीं त आगे परिस्थिति के हिसाब से...

ऊ चार महीना भी बीत गइल रहे अउर अपना वादा के हिसाब से कंपनी सबके जिम्मेदारी छोड़ दिहलस। अब संजय बेरोजगारी में लचारी के साथे एगो कमरा में कैद होके रहे पर मजबूर रहलें। ओहिजा जेतना लोग भी फँसल रहे सभे एक बार कम्पनी में जाके रोवल गिड़गिडाइल लेकिन कम्पनी कवनो हालात में ओ लोग के ज़िम्मेदारी उठवला से नकार दिहलस।

जब कबो अकेले होखस त उनका ऊ दिन याद आवे जब सभे उनका ए एग्रीमेंट से खुश रहे। माई-बाबूजी, भाई सबका आँख में भविष्य के खुशी रहे..., बाक़िर रीना के मन ना रहे..। कई दिन लागल रहे उनका रीना के मना लेबे में जे बस तीने साल के नू बात बा, फेर हमनीं के जीवन भर एके साथे रहल जाई, ओकरा बाद तोहके छोड़ के एतना दिन खातिर कबहूँ ना जाइब..!

बाकिर ऊ अपना हठ से पीछे ना हटस..।

रीना कहस जे रउआ ए एग्रीमेंट के केंसिल कर दिहीं। हम नइखीं चाहत जे जब हमर पहिला संतान होखो त रउआ हमरा से दूर रहीं! कमाए खातिर त समूचा जीवन पड़ल बा....।"

बाकिर संजय जानत रहलें अपना परिवार आ अपनी परिस्थिति के, एही से चाहियो के ई एग्रीमेंट हाथ से ना छोड़ पवलें। बाकिर केतना कुल्ह पापड़ बेल के ऊ बेचारी के अन्हरिया कमरा में रोवत छोड़ि अइलें। अउर ऊ दिन त कबो भुलइबे ना करेले, जे दिन ऊ आवत रहलें रीना घर में से भागत चौखट तक आइल रहली अउर आके अँकवार ध के सिसके लागल रहली।

तबके माई के मुखो भोर ना परेला। जे ऊ भले सामने से दिखावा में मुस्कुरात रहली बाकि ऊ जइसे आगे बढ़ले मुँह पीछे घुमा लेहले रहली आउर आँख आँचर से साफ़ करे लगली।

दरअसल इहे त नियति बा बिहार के लइकन अउर माई-बाबूजी के.., जे परिवार के खुशहाली खातिर हर बेटा एक ना एक दिन परदेशी होखबे करिहें। अउर नियति ही ह कि जब घर से विदा लिहें त मन करी जे फफक के रोवतें बाकि सबसे छिपावत हँसत मुस्कुरात जइहें। अऊर बाकी के लोग के भी उहे दशा रही। बेटा के विदाई वक्त माई-बाबुजी करेज काठ करि मजबूरी में मुस्कुराला लोग, जे परदेश में रहते बेटा के कबो परिवार वालन के याद आई त उहे मुस्कुरात मुखड़ा दिखी ताकि अधिक चिंता ना सताई।

ई सब मजबूरी ह। आ मजबूरी इंसान से का ना करा दिही। अउर आज के जमाना में आर्थिक मजबूरी त कुछो करा दिही.. वरना संजय जइसन नवयुवक के का जरूरी बा जे कमे उमिर में घर-दुआर, माई-बाप, हीत-रिश्तेदार सब छोड़ि के दोसरा देश में जीवन काटे पर विवश हो जालें।

यूपी, बिहार के नवयुवकन के औसत उमिर पच्चीस ना भइल रहेला कि उनकर परदेशी बनल तय हो जाला। आ ई परदेशीपन अगिला पच्चीस-तीस साल तक जारी रहेला। जब तक मन अउर तन ई ना कहि देबे जे 'अब लौट चलS अपना देश, अपना गाँवें जहवाँ तू नंगे गोड़ दउड़ल आ खेलल बाड़s। चलऽ अपना चौराहा ओरी जवना मोड़ के चाय अउरी पकौड़ी के स्वाद कहाँ-कहाँ ना ढूँढ़लऽ। लौट चलऽ काहेकि अब हमरा से ई भार अउर ना ढोवल जाई। मांस के लोथड़ा से बनल ई देह भागत-भागत थक गइल बा, आ अब ई एगो निश्चित आराम जोहता।' बीच के ए समय में जीवन में बहुते बदलाव आवेला। केतना साथी मिलेलन त केतना साथियन से बिछुड़ाव होला। पइसा के लालसा में शहर, कमरा, बिस्तर इहाँ तक ले आपन शरीर बदल जाला बाकि इंसान के ख़बर तक ना लागेला। आदमी जब घर से चलल रहे तब चेहरा पर मोंछ दाढ़ी उगत रहे अउर जब ओकर रंग सफेद हो जाले तब गाँव घर के इयाद आवेला। तब तक जीवन में बदलाव के अनेको दौर आवेला। अउर ई बदलाव के बीच अगर कुछ ना बदलेला त ऊ गाँव के इयाद, अउर गँवई सोन्ह माटी के खुशबू।

जेहन में आवते आदमी के जज़्बाती बना देला अउर एक चक्कर बचपना के ओर घुमा देला।

जबसे संजय इहाँ फँसल बाड़ें गाँव घर के कवन अइसन बात ना होई जवन इयाद ना आइल होई। अउर जब-जब इयाद आवेला आँख गमगीन हो जाला, जी मचल उठेला।

अब तक उनका कमरा में बइठल सुतल रहे के आदत लाग गइल रहे। मन करो त घर पर बात कर लेस, लेकिन फेर बेटी के उहे सवाल आ जबाब में संतोष!

चारदीवारी के भीतर सिमटल इंतजार करे लागल रहलें, जे कब अपना देश से फ़्लाइट शुरू होइत अऊर ऊ अपना वतन के माटी के माथे लगा सौगन्ध खा लिहतें जे "हे मातृभूमि भारत! तोहार सौगन्ध, जे अब कवनो परस्थिति में तोहार आँचरा छोड़ के पराया देश के गुलाम ना बनब। तोहरा माटी में मजूरी करब आ नून तेल ही मिली ओहि में आपन जीवन गुजर करब... लेकिन तोहरा से दूर ना जाइब..।"

एने कुछ दिन बीतल महामारी में गिरावट भइल, त भारत सरकार ओरी से आदेश पारित भइल, जे बहुते जल्दी धीरे-धीरे समूचा फ्लाइट शुरू होई। अउर सबसे पहिले माइग्रेंट्स (मजदूर) लोग के उहाँ से निकाले के कोशिश कइल जाई ताकि जे भी खाड़ी देशन में फसल बा ऊ अपना घर परिवार से जुड़ सको। संजय के बहुते खुशी मिलल रहे ई खबर सुन के, अउर ओ दिन ऊ अपना बेटी से घण्टा भर बात कइले रहलें अउर ओकरा खातिर का कुछ लेके जाए के बा ओकरा विचार में डूब गइल रहलें...

बाकि इंतज़ार के घड़ी अभी समाप्त कहाँ भइल रहे..ऊ त जारिए रहे...।

"मजदूर नू रहलें, एहीसे मजबूर रहलें...!"

◆ ◆ ◆

नन्दीश्वर द्विवेदी "राजन"
ग़ोपालगंज (बिहार)

बेकहल

रिटायर भइला के बाद मास्टर साहेब के जिम्मे कवनो काम ना रह गइल रहे । दुनू बेटी के बियह के पहिलहीं गंगा नहा लेले रहलन । एगो बेटा शहर के नामी डॉक्टर आ दुसरका नामी वकील । गाँव जवार में एगो धाक रहे गुरु जी के । तबो रह रह के उहाँ के एगो बात परेशान करे ," छोटको कहीं सेटल हो जाइत त निफिकिर हो जइतीं ओकरो बियाह शादी क के ।"

सुशील गुरुजी के तिसरका बेटा रहलन । नाम आ काम मे कवनो मेल ना रहे ।कबो हेने से ओरहन कबो होने से । पेटपोंछवा बेटा के माइयो तनी ढेर दुलार करत रहली । जब मास्टर साहेब सुशील पर लाबदा उठावस , माई अपना बेटा के कवच बन जास । "इहो पढ़ी नू ...अभी केतना दिन के भइल ?"

उमिर बढे लागल बाकिर सुशील में कवनो बदलाव ना आइल । अपना धुन के पक्का ! जवन उनका नीमन बुझाव तवने करस । आखिर उनकरा पर बेकहल के ठप्पा लाग गइल । बी0 ए0 क के सुशील गाँवहीं खेत बधार के काम करे लगलन । ई सब देख के गुरुजी के करेजा पर साँप लोटाए लागो । " तोरा भाग में गोबर काछे के लिखल बा त हम का कर सकेनीं । तोर जवन मर्जी तवने कर।" चिंता से गुरुजी के स्वास्थ्य बिगड़े लागल । सुशील बाबूजी के गिरत सेहत के राज समझ गइलन । एक दिन भिनसहरे आपन झोरा बोरा बाँध के बाबूजी के खटिया के गोरतानी बइठ गइलन । राम राम करत जइसहीं गुरुजी आँख खोलनीं सुशील गोड़ ध के रोवे लगलन ।

"का भइल बेटा ....रे सुशीलवा का भइल रे ।"

"हमरा के माफ करीं बाबूजी..हमरा चलते रउआ आपन सेहत मत बिगाड़ीं...आशीर्वाद दिहीं ....अब हम कुछ बनिए के लउटब ।"

समय बदलत देर ना लागे । दुनू बड़ भाई सुशील के पढाई के खर्चा देबे से साफ मना क दिहल लो । गुरुजी के पेंशन सुशील के सम्बल बनल । जीव जान लगा दिहलन पढाई में। एल0एल0बी0 के बाद न्यायिक सेवा के परीक्षा के तैयारी में लगलन । दू दू हाली असफल भइला के बाद परिवार से ताना मिले लागल । बड़की भउजी त एक दिन फोन पर कहियो देहली " बाबूजी के पेंशन पर अकेले मजा मारतारऽ..देखतानीं केतना दिन ले फोटानी चलत बा । " घर में कलह शुरु हो गइल बाबूजी के पेंशन खातिर । एक दिन दुनू बेटा आ पतोह बाबू जी के न्याय अन्याय के पाठ पढावे खातिर गाँवे आइल लो । केकर बखरा केतना भइल एह बतकही में बाबूजी के गिरत स्वास्थ्य पर केहू के ध्यान ना गइल । गुरुजी दो टूक कहनीं, " मुअला के बाद तू लो का करबऽ हम नइखीं जानत बाकिर अपना जियते अपने लगावल गाछ ठूँठ ना होखे देब । भगवान हमरा के सुशीलवा के पढ़ावे खातिर ही जियावत बाड़न ....

परिवार बिखर गइल । बाबूजी माई के सुध लिहल भी छोड़ दिहल लो दुनू जाना । एक दिन गुरुजी के अटैक आइल ....माई दुनू बेटा लो के फोन कइली । केहू ना आइल । एक जाना के इम्पॉर्टेंट केस रहे आ एक जाना के आपरेशन करे के रहे । गुरू जी सुशील के माई के मना क दिहनीं । " सुशीलवा के मत जनइहऽ ...आज ओकर इंटरव्यू बा । माई ना मनली ....

अस्पताल में गुरुजी आँख खोलते सुशील के डाँटे लगलन , " ते इंटरव्यू छोड़ के काहें अइलिस रे बेकहल ?"

"बाबूजी राउर आशीर्वाद रही त हम फेरु इंटरव्यू देब ।"

दस बरिस बीत गइल । सुशील के माई बाबूजी नाती नतिनी के साथे खेलत बा लो । सुशील जज हो गइल बाड़न ...नामी जज...बड़का जज.....

सुशील के मेहरारु छोटका के लबदा ले के चहेटत बाड़ी.....

"का भइल सुशील बो..काहे लइका के चहेटले बाड़ू..."

"कहीं मत अम्मा जी साफे बेकहल हो गइल बा ।"

दुनू जाना हँसे लागल लो...आ सुशील बो अपना सास ससुर के चिहा के देखत रह गइली...

◆ ◆ ◆

निखिल शुभम
प•चंपारण

अखबार

जब भाषा गिरवी हो जाला सिहासन के दरबार में,
जब पापी के बचावे खातिर कलम चलेला अखबार में।

जब सूरज उगे से पहिले उनका दफ्तर में जालन,
लागे अइसे कि जइसे देखि कुकुर पोंछ हिलावेलन।

जब त्याग समर्पण निष्ठा वाली बुद्धि सगरो से मर जाले,
छल से उनका मानऽ जइसे खुदहीं कलंकित हो जाले।

देश जरे फिर भी तोहके जब चुप्पी तोहार खलेला,
अत्याचारिन के खातिर मन में तोहार खीस भयंकर पलेला।

समझऽ जीयत तब अपना के भाई तू ए मायावी दरबार में
झूठ रोज सिखावे जवन आगि लगा दऽ ओ अखबार में।

सुहानी राय

◆ ◆ ◆

हालात के आगे मजबूर बा आदमी

हालात के आगे मजबूर बा आदमी,
पास रह के भी केतना दूर बा आदमी।

सभे अपनइत से अनजान बा बाकी,
दुनिया भर में मशहूर बा आदमी ।

जरूरत में काम केहू आवत नइखे,
भले ही भीड़ भरल भरपूर बा आदमी।

मरला पर संगे जाई ना कुछऊ,
तब काहे एतना मगरूर बा आदमी।

चिन्हल मुश्किल बा नकाब में पर,
अबहियो केहू-केहू कोहिनूर बा आदमी।

◆ ◆ ◆

शैलेन्द्र कुमार (शिक्षक)
कोलकाता

सपना खुलल आँख से

सपना खुलल आँख से आवे मन में बसावे के चाहीं
जेतना होखे चादर ओतने पाँव पसारे के चाहीं

बन्द आँख से सपना सजाके जे हवा में महल बनाई
खुली आँख धरती पर गिरी मुँह के बल ढिमुलाई
जेतना हो सके पूरा ओतने के सेखी बघारे के चाहीं
जेतना होखे चादर ओतने पाँव पसारे के चाहीं

बन्द आँख से पूरी नाहीं केहू केतनो हवा में महल बनाई
छनही में टुट जाई बबुआ जे भी अइसन सपना सजाई
झूठहूँ के सपना संजोके ना मन अशांत बनावे के चाहीं
जेतना होखे चादर ओतने पाँव पसारे के चाहीं

का कही लोग कहे दी! सोच के मन काहे के घबराता?
लोग के काम ह कहल! कहबे करी कहि के अगराता
काहे बिगरल आपन हालात बस इहे बिचारे के चाहीं
जेतना होखे चादर ओतने पाँव पसारे के चाहीं

दू धारी तलवार मुँह मीठ बोल पीठ खंजर भोकवा दी
मन! बस में राखीं ना त चढ़ा पेड़ पर जरिए से कटवा दी
कहे चमन देहाती खूब सोच हर बात उचारे के चाहीं
जेतना होखे चादर पाँव ओतने पसारे के चाहीं

◆ ◆ ◆

पुरन्जय कुमार गुप्ता
(चमन देहाती)
कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

दुख के दिन

आज ले ना केहू रहल एकरा से बच के,
जब दुख के दिन आवे रख देला दरकच के।

एक के बाद एक सदा लागल रहे लाइन,
रहे ख़ुशहाल मन ना लागे कुछो फ़ाइन।
सामना त करहीं के परेला जी सच के..
जब दुख के दिन आवे रख देला दरकच के।

पावे केहू भाग ना जकड़े जी अइसन,
केंगा हम बखान करीं स्वाद मिले कइसन।
फूलल फूलल गाल रह जाला पचक के..
जब दुख के दिन आवे रख देला दरकच के।

ना साथ केहू देउ जब दिन आवे बाउर,
दूर होखे आपन ख़ास कहीं का हम आउर।
वादा करि के मुकरे सोझा सबका गच्छ के..
जब दुख के दिन आवे रख देला दरकच के।

रुके ना ई कबो चलते रहे पहिया,
छुटब ना एसे दीपक बेरा आई जहिया।
बनल वीर छूटी माथा रहि जाई लच के..
जब दुख के दिन आवे रख देला दरकच के।

◆ ◆ ◆

दीपक तिवारी
श्रीकरपुर,सिवान

सलोनी

गुड़िया शुक्ला

सलोनी साँवरी सूरत प फ़िदा जान हो गइल
मिलल बा नैन बगिया में कि चेहरा चान हो गइल

बिरह के बात से डर बा ना अब मेहमान हम बानीं
कि तोहरा दिल के राहत अउर अब मुस्कान हम बानीं
कि रोके ना रुके अब ऊ त हमरो परान हो गइल

बिछड़ के जी ना पाइब हम, मरे के ना इरादा बा
कि बस तोहरे के चाहिले न अब ख्वाहिश जियादा बा
कि हमरा खास जिनगी में तोहर एहसान हो गइल

◆ ◆ ◆

बहुते आभारी बानी भाई सुभाष जी राउर,सिरिजन के अंक 23 शेयर करे खातिर! अबहीं खोलि के सूची देखि रहल बानी! पहीले नज़र मे मथेला (मुख पृष्ठ) पर लोक के जन जन के आस्था के प्रतीक राम मंदिर अयोध्या के चित्र देखि के मन फूला नइखे समात, बहुत समृद्ध अंक बुझा रहल बा साज सज्जा आ सामग्री दूनों लेहाज से। हमरो छोटी मुकी आलेख 'गँवई लोक शिल्प : डलिया मउनी' के एह अंक में स्थान देवे खातिर आभार आ बधाई! कई गो मित्र लोगन के रचना छपल देखि केबहुते नीक लागता,ई सब प्रधान सम्पादक भाई चौबे जी के आ सम्पादक के रूप मे रउरे अथक मेहनति के फल हऽ।तनि नीक से पढ़ला के बाद कुछु आउर लिखल ठीक रही।सादर परनाम!-इन्द्रकुमार दीक्षित, देवरिया।

सिरिजन समय के पाबंद रहल बा जेकर क्रेडिट सिरिजन परिवार के जाला। एके जनवरी से इंतजार रहे।तनी बिलंब भइल बाकिर पत्रिका के गुणवत्ता देखि देरी के शिकायत ना रहल।समय के साथ पत्रिका में आवत निखार सिरिजन परिवार के मेहनत के फल ह जेह खातिर पूरा परिवार साधुवाद के पात्र बा। हार्दिक साधुवाद।एक बात अउर सिरिजन आजु भोजपुरी पत्रिका के शीर्ष पर अपना के स्थापित कर लेले बा ई कहल जाय त कवनो अतिशयोक्ति ना होई एह खातिर भाई सुभाष पाण्डेय जी के माथे के साथे सिरिजन पत्रिका के माथे सिरमौरी।जभोजभो - कनक किशोर, राँची।

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया 🤝🙏🤝सिरिजन के नवका अंक के मुखपृष्ठवे देखि के मन गदगद हो जाता। भितरी के मैटर बहुते महत्वपूर्ण बाने सन। ई हमार बहुत बड़हन सौभाग्य बा कि जवने अंक के मुखपृष्ठ पर रामजी अउरी उहाँ के जनमभूमि पर बनल नवका मन्दिर के नयनाभिराम फोटो बा, ओही अंक में हमार गीति "राम रघुराई अइहें" छपल बा। हम अपने खुसी के सबदन में नाइ बता पाइब, एके खाली महसूस कइल जा सकेला। आदरणीय संगीत सुभाष जी, सम्पादक मण्डल अउरी सगरी जभो जभो परिवार के कवने तरे आभार व्यक्त करीं, ई बुझाते नइखे। सबके बारम्बार परनाम!, एही गीति के वीडियो भेजत बानी जवने के गायक मन्टू पाठक जी गवले बानी आ प्राणप्रतिष्ठा के अवसर पर न्यूज़ वन इण्डिया चैनल पर प्रसारित भइल रहे - शैलेन्द्र असीम, कुशीनगर।

अबकी बार के इ सिरिजन पत्रिका बहुत विशेष बा। आवे पीढ़ी के देखावे बदे एकर डिजिटल फाईल भा प्रकाशन प्रति संभाल के रखले के काम बा । जय जय श्री राम ☒ 🙏🙏पुरंजय कुमार गुप्ता, हिमाचल प्रदेश।

सिरिजन भोजपुरी तिमाही ई पत्रिका के 23वां जनवरी-मार्चअंक मे हमरो दूगो गीत के स्थानमिलल बा। संगीत सुभाष जी अउर सम्पादक मंडल के हृदय केगहराई से बार बार प्रणाम बा- मधुसूदन पाण्डेय, कुशीनगर।

सिरिजन,सिरजाईल बा खूबे।
कबित्त -गीत बा, पांडे -दूबे॥
पुरुखन के बा जगह दियाईल।
किसिम -किसिम के लेख लिखाईल।
सबरी भगतिन बेर खिअवली।
राम भगति के राह देखवली॥
कई प्रांत से कविता आईल।
सबके रचना- लेख छपाईल॥
दिन दूना पढ़वईया पढ़ें।
सूरज जश सबके यश चढ़ें॥
हमहूं पढि के गदगद भईनीं।
सम्पादक लग पत्र पठईनी॥
🙏🌸 माहिर विचित्र 🌸🙏
भाटपार, देवरिया।

बेजोड़ सीरिजन, अद्भुत सीरिजन! बहुत हीं बढ़िया पत्रिका! सभ संपादक मण्डल के हार्दिक बधाई आ विशेष बधाई आदरणीय भईया श्री संगीत सुभाष जी के, जेकरा विशिष्ट संपादकीय सूझ बुझ से ई पत्रिका उतरोत्तर उन्नति कर रहल बा! पुनः हार्दिक बधाई
🙏🙏🙏🙏अनिल कुमार दूबे अंशु, सारण।

2024 के, सिरिजन के पहिलका अंक पढनीं हं, ई "पोथी पत्रिका जमा पूँजी" में जमा करे लायक बा। अंजन जी त हमनी खातीर सदा नमनीय बानी, उहाँ के बारे में पढ़के , पढ़े लिखे के जज्बा उमड़ आइल हऽ। अनिल जी के सम्पादकीय भी पढ़नीं हं। सुभाष जी के पढ़त बेरा, एगो बहुत दिन पहिले पढ़ल उक्ति इयाद आइल ह। "लेखन से पूर्णता आवेला " ई बात सुभाष जी के लेखनी में सिद्ध भईल बा। बहुत बहुत धन्यवाद बा एतना मेहनत से पत्रिका प्रस्तुत क के पढ़ला के सुख देला के।- मंजू श्री, गोपालगंज।

मरजादा पुरुसोत्तम के परान परतिस्ठा
तौना पर सिरजनके निस्ठा
देख के मन गदगद हो गईल
सही समइया छपियो गईल
सम्पादकीय तऽ लाजवाब बा
नएका सालके तर्क हिसाब बा
कथा कहानी कविता लेख
कहे केहू जे ई सब देख
एह अंक के महिमा कइसन
भोजपुरी माई के दरपन
जेमे झलकत वर्तमान बा
भूत भविष्य के पता-ठेकान बा
अपने घरके बात कहीं हम
तब्बो तऽ "का बात !" कहीं हम
का संजोग हमर गुरुआइन
जे बाड़ी हमरे बहिन
अपने तऽ अइबे कइली
नाती के सङ्ही ले अइली
एह खतिरा सुभास बाबूके
बलिहारी हिम्मत काबूके
एक ओझा टोला से नानी
दोसर ओझा टोला से नाती
एक ओढ़ले कथा के कम्मर
दोसर बन्हले गजल के गाँती
मउसम बा जाड़ के
कँपावत बा हाड़ के
बाकिर पीढ़ी दर पीढ़ी उरजा
देखावत बा अदबी पुरजा-पुरजा
जय सिरजन समस्त परिवार के
भोजपुरी परान आधार के
संबिधान में मिलो मान्नता
गोहराईं परवर दिगारके
- नक्कू मझव्वी

"सिरिजन " जनवरी २४ - मार्च २४ के ई ताजा अंक में देश के सम्यक मिजाज़ , महत्व , मंगलोत्सव आ मौलिक लेखन के बेहतरीन आ सराहनीय समावेश बा , आवरण चित्र से ले के पत्रिका के अंतिम पृष्ठ तक लेखन कला के हर पहलू पर विशेष समायोजन के कारण ई- पत्रिका आपन गुणवत्ता के कायम राखे में हर दृष्टिकोण से सार्थक आ सफल बा। संपादकीय लेख उत्कृष्ट के साथे सराहनीय बा।प्रिंट , फॉर्मेट , फ्रांट स्पष्ट आ आंख के सुकून देबे वाला बा जवन ई - पत्रिका में अक्सर देखे के ना मिलेला •• पूरा देखला आ पढ़ला के बाद अंत में हम ईहे कहेब कि योग्य संपादकीय टीम के बदौलत पत्रिका अपना सुनहरा भविष्य के तरफ़ अग्रसर हो रहल बा।हमरा तरफ़ से सिरिजन संपादकीय टीम , लेखक गण कहानीकार , स्तंभकार , कविगण आ समस्त पाठक गण के साथ -साथ प्रत्यक्ष आ अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ल हर एक सवांगी के हार्दिक बधाई आ शुभकामना बा 🏵️💐🏵️ - सुरेश कुमार , मुंबई , संरक्षक, जय भोजपुरी जय भोजपुरिया 🏵️ " परिवार" 🏵️ 🙏

माँ राजमणि सम्मान समारोह ,२०२४ में कौस्तुभ मणि सम्मान से अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य समेलन के अध्यक्ष डॉ॰ ब्रजभूषण मिश्र सम्मानित

एह बरिस के 'माँ राजमाणि सम्मान समारोह' १९ मार्च २०२४ के दिन मोराबादी राँची के स्वाध्याय परिसर में सम्पन्न भइल। एह में तीनगो साहित्यिक सम्मान प्रदान कइल गइल। कार्यक्रम के शुरुआत माधवी उपाध्याय के सरस्वती वंदना से भइल ।

लोकपूज्य रामछबिला त्रिपाठी वाग्देवी सम्मान राँची के साहित्यकार श्री कुमार बृजेन्द्र के प्रदान कइल गइल । माता राजमणि स्यमंतक मणि सम्मान सत्या शर्मा कीर्ति को प्रदान कइल गइल। शहीद श्रीराम तिवारी कौस्तुभमणि सम्मान पहिल बे भोजपुरी खातिर मुजफ्फरपुर के डा. ब्रजभूषण मिश्र को प्रदान कइल गइल। डा. मिश्र अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के वर्तमान अध्यक्ष बाड़न आउर भोजपुरी के जानल-मानल साहित्यकार बाड़न। एह सम्मान में 5000/ के नगदराशि ,स्मृतिचिन्ह तथा सम्मानपत्र प्रदान कइल गइल । एह समारोह के अध्यक्षता डा चंद्रकांत शुक्ल कइलन। मुख्य अतिथि जमशेदपुर के डा अंगद तिवारी रहलन जे अरका जैन युनिवर्सिटी के डीन बाड़न। विशिष्ट अतिथि मानविकी संकाय राँची विश्वविद्यालय के डीन डा. अर्चना दुबे आउर श्री अशोक प्रियदर्शी रहलन ।सम्मानित रचनाकारन के परिचय पाठ सहित कृतिचर्चा श्री कनक किशोर, निरंजन प्रसाद श्रीवास्तव जी कइलन। राजीव थेपडा, संगीता कुजारा टाक, सरस जी, रामचंद्र ओझा, पंकज प्रसाद सहित एह अवसर पर नगर के बहुते प्रबुद्ध साहित्यकार , बुद्धिजीवी तथा गणमान्य लोग उपस्थित रहल। ई समारोह में हिन्दी साहित्य संकल्प संधान पीठ के तत्वावधान में आयोजित भइल। स्वागत भाषण संस्था के अध्यक्ष डा हरेराम त्रिपाठी चेतन जी दिहलन आउर संस्था और सम्मान समारोह के उद्देश्य के चर्चा सचिव दिव्येन्दु त्रिपाठी जी कइलन। धन्यवाद ज्ञापन श्री नीरज नयन त्रिपाठी जी दिहलन । मुख्य अतिथि डा अंगद तिवारी जी कहलन कि साहित्यकारन के सम्मान कइल बहुते गौरव के बात बा । कलमकार के सामाजिक सरोकार से सम्बद्ध रहे के चाहीं।

रिपोर्ट : कौशल मुहब्बतपुरी

माँ राजमणि सम्मान समारोह ,२०२४ के कुछ फोटो

पूर्वांचल भोजपुरी महासभा के सौजन्य से भोजपुरी सम्मेलन आ होली मिलन समारोह २०२४

१७ मार्च २०२४ के गाजियाबाद एन सी आर में पूर्वांचल भोजपुरी महासभा के सौजन्य से भोजपुरी सम्मेलन आ होली मिलन समारोह २०२४ के आयोजन श्रद्धेय स्वामी चक्रपाणी जी महाराज जी, राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिल भारत हिन्दू महासभा के मुख्य आतिथ्य , श्री सतीश कुमार त्रिपाठी जी, उद्योगपति आ अध्यक्ष "जय भोजपुरी जय भोजपुरिया", सुरेश कुमार जी, प्रधान संरक्षक, "जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया" संस्थागत परिवार , डॉ. निखिल कांत, कवि आ उप निदेशक अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद के विशिष्ठ आतिथ्य सह मुख्य वक्ता के मंचीय उद्बोधन के साथ के बहुतयात भोजपुरिया भाषा भाषी के गरिमामय उपस्थिति में संपन्न भइल ••• सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्रद्धेय चक्रपाणी जी महाराज आ विशिष्ठ अतिथि सह मुख्य वक्ता द्वय श्री सतीश कुमार त्रिपाठी जी आ डॉ. निखिल कांत जी भोजपुरी भाषा , साहित्य , संस्कार, संस्कृति , मर्यादित आ श्लीलता के साथ संरक्षण आ संवर्धन पर आपन आपन विचार व्यक्त कइल साथ ही भारत सरकार से भी मंच के माध्यम से आह्वान भइल कि भोजपुरी भाषा आ क्षेत्र के गौरवमयी इतिहास्य आ वर्तमान के मद्देनजर संविधान के आठवीं अनुसूची में यथाशीघ्र दर्ज कइल जाव।

समारोह के समापन महासभा के चेयरमैन श्री केदार नाथ तिवारी जी आ डायरेक्टर श्री अशोक श्रीवास्तव जी के ओजस्वी स्वागत आ धन्यवाद ज्ञापन से भइल ••

ओकरा बाद सुश्री खुशबू तिवारी जी आ ग्रुप द्वारा प्रस्तुत भजन , मधुर संगीत आ होली फाग के उपस्थित जन समुदाय लुत्फ उठावल।

सुरेश कुमार , मुम्बई/ दिल्ली
प्रधान संरक्षक -जय भोजपुरी जय भोजपुरिया
प्रधान संरक्षक - सारण भोजपुरिया समाज

भोजपुरी सम्मेलन आ होली मिलन समारोह २०२४ के कुछ फोटो

जय भोजपुरी - जय भोजपुरिया

निहोरा

माईभाषा के सम्बन्ध जनम देवे वाली माई आ मातृभूमि से बा, माईभाषा त अथाह समुद्र बा, ओके समझल बहुत आसान काम नइखे। भोजपुरिया क्षेत्र के लोग बर्तमान में रोजी रोटी कमाए खातिर आ अपना भविष्य के सइहारे खाति अपनी माँटी आ अपनी भाषा से दूर होत चल जाता, ओहि दूरी के कम करे के प्रयास ह "सिरिजन" । जय भोजपुरी-जय भोजपुरिया, आपन माँटी -आपन थाती के बचावे में प्रयासरत बिया इहे प्रयास के एगो कड़ी बा "सिरिजन" । भोजपुरी भाषा के लिखे आ पढ़े के प्रेरित करे खातिर एह ई-पत्रिका के नेंव रखाइल । "सिरिजन" पत्रिका रउवा सभे के बा, हर भोजपुरी बोले वाला के बा आ ओकरे खातिर बा जेकरा हियरा में माईभासा बसल बिया । ई रउरे पत्रिका ह, उठाईं लेखनी, जवन रउरा मन में बा लिख डाली, ऊ कवनो बिध होखे कविता, कहानी, लेख, संस्मरण, भा गीत गजल, हाइकू, ब्यंग्य आ भेज दिहीं "सिरिजन" के ।

रचना भेजे के पहिले कुछ जरूरी तत्वन प धियान देवे के निहोरा बा :

1. आपन मौलिक रचना यूनिकोड/कृतिदेव/मंगल फॉण्ट में ही टाइप क के भेजीं। फोटो भा पाण्डुलिपि स्वीकार ना कइल जाई।
2. रचना भेजे से पहिले कम से कम एक बार जरूर पढ़ीं, रचना के शीर्षक, राउर रचना कवन बिधा के ह जइसे बतकही, आलेख, संस्मरण, कहानी आदि क उल्लेख जरूर करीं । कौमा, हलन्त, पूर्णविराम प बिशेष धियान दीं। लाइन के समाप्ति प डॉट के जगहा पूर्णविराम राखीं ।
3. एकर बिशेष धियान राखीं कि रउरी रचना से केहू के धार्मिक, समाजिक आ ब्यक्तिगत भावना के ठेस ना पहुंचो। असंसदीय, फूहड़ भाषा के प्रयोग परतोख में भी ना दियाव, एकर बिशेष धियान देवे के निहोरा बा ।
4. राउर भेजल रचना सम्पादक मंडल के द्वारा स्वीकृत हो जा तिया त ओकर सूचना मेल भा मैसेज से दियाई ।
5. आपन एगो छोट फोटो, परिचय जइसे नाम, मूल निवास, बर्तमान निवास, पेशा, आपन प्रकाशित रचना भा किताबन के बारे यदि कवनो होखे त बिवरण जरूर भेजीं।
6. रचना भा कवनो सुझाव अगर होखे त रउवा ईमेल - sirijanbhojpuri@gmail.com प जरूर भेजी ।
7. रउरा हाथ के खिचल प्राकृतिक, ग्रामीण जीवन, रीति- रिवाज के फोटो भेज सकतानी। धियान राखीं ऊ फोटो ब्यक्तिगत ना होखे ।

◆ ◆ ◆

जय भोजपुरी जय भोजपुरिया

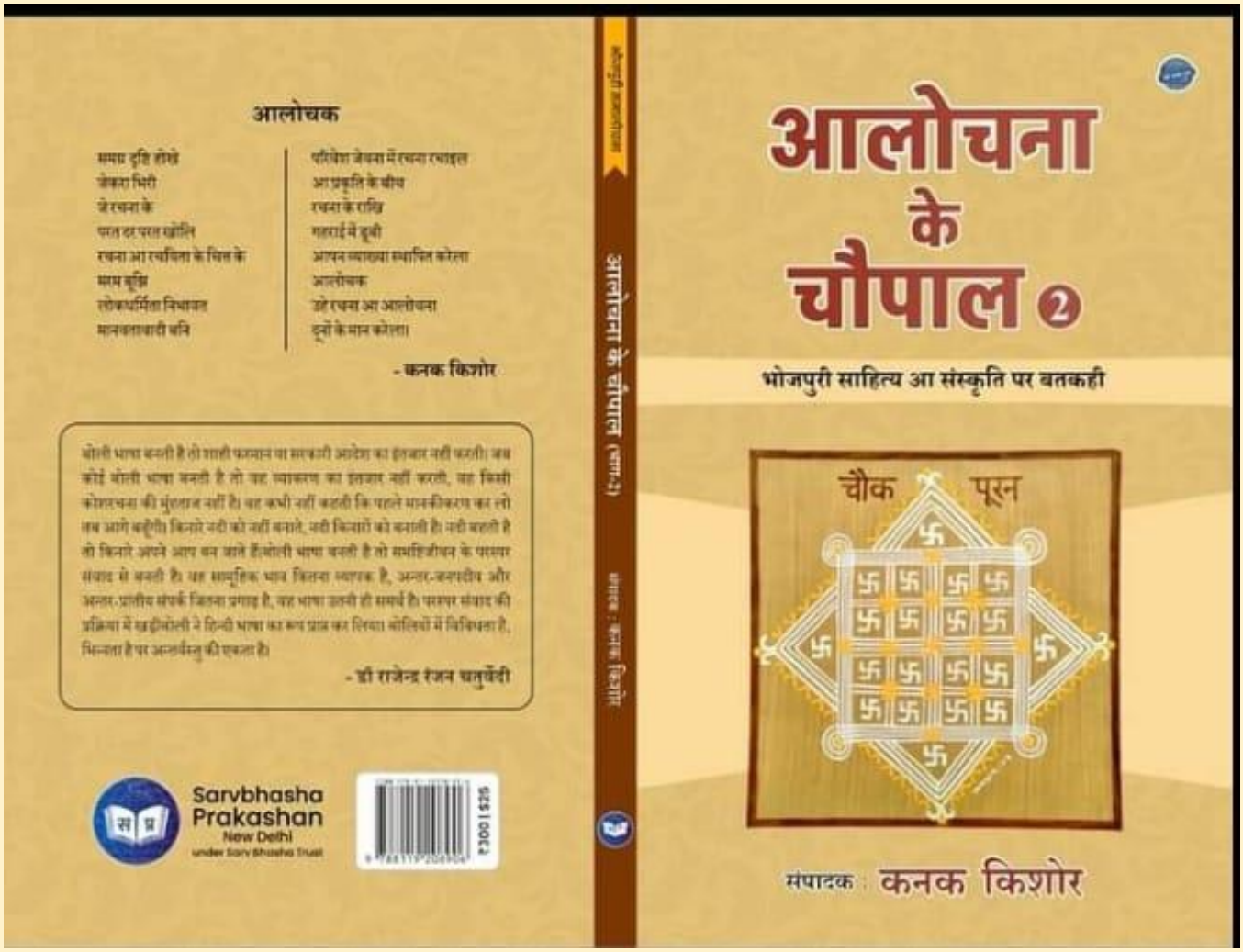

भोजपुरी साहित्य-संस्कृति के प्रचार-प्रसार, सरंक्षण आ संवर्धन में भोजपुरी साहित्य के महत्वपूर्ण तारा श्री कनक किशोर जी के अतुलनीय योगदान बा।

रउरा द्वारा भोजपुरी किताब किन के पढ़ल चाहे केहू के उपहार में देहल, भोजपुरी खातिर बड़हन योगदान रही।